गुप्तचर

Scanning and Preservation:
Bijay Kumar Agrawal [Nepal]

Editing and Sharing:
Anand Kumar for 'akfunworld'

www.akfunworld.wordpress.com

सलाहकार सम्पादक

प्यारेलाल 'आवारा'

akfunworld presents...

गुप्तचर

सलाहकार सम्पादक :

प्यारेलाल 'आवारा'

सम्पादक :

चन्द्रिका प्रसाद टंडन

Always Remember for Books On Hire
JAFARABADWALA
BOOK-SELLER
Prabhat Talkies, Durg.

इस अंक में

अँधेरे के अपराध

लेखक

निरंजन चौधरी

वर्ष-२
वार्षिक- ७.५० रुपए

अंक २३
एक प्रति का ७५ न.पै.

नी ता प्र का श न,
१० न्यू बैरहना, इलाहाबाद-३

इस अंक का मूल्य
७५ नए पैसे

हिन्दी का एक नया

अलबेला उपन्यास मासिक

सलाहकार संपादक :

प्यारेलाल 'आवारा'

एक प्रति का मूल्य : अस्सी नए पैसे

'रोमांच' की नयी कड़ी आप को सागर की लहरों पर सैर कराएगी। सागर का अपना एक जीवन होता है और वह इतना रोमांचकारी होता है कि आदमी न केवल अपने आप को, बल्कि संसार को भी भूल जाता है।

बहुरंगा कवर : सजिल्द : बढ़िया छपाई

नए अंक में नरेश मिश्र का अद्भुत, नया रोमांचक उपन्यास 'मौत की लकीरें' अवश्य पढ़िए।

आप के शहर के न्यूज़ एजेन्ट के यहाँ और रेलवे बुक स्टालों पर अब बिक रहा है।

नीला प्रकाशन, १० न्यू बैरहना, इलाहाबाद-३

दो शब्द :

'गुप्तचर' के इस ताजे अंक में निरंजन चौधरी का नया जासूसी उपन्यास 'अंधेरे के अपराध' प्रकाशित है।

निरंजन चौधरी का यह उपन्यास जासूसी कथा-साहित्य में एक नये प्रयोग के रूप में स्वीकारा जायेगा, हमें विश्वास है। कथ्य, शिल्प और प्रस्तुतीकरण में जो प्रयोग इस उपन्यास में हुआ है, वह किसी अन्य जासूसी उपन्यास में देखने को भी नहीं मिलेगा।

वैसे, 'गुप्तचर' के पाठक स्वयं भी जानते हैं, कि निरंजन चौधरी के हर उपन्यास में इतनी नवीनता, इतना रस रहता है कि प्रारंभ करने पर बिना पूरा पढ़े कोई छोड़ ही नहीं सकता। और, सबसे बड़ी बात है कि निरंजन चौधरी के उपन्यास पूर्णतया मौलिक होते हैं। हिन्दी में आजकल जितने भी जासूसी उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं, वे या तो अंग्रेजी के उपन्यासों से उड़ाये गये होते हैं या फिर इब्ने सफ़ी के उपन्यासों की असफल अनुकृति। लेकिन, निरंजन चौधरी के उपन्यासों की पृष्ठभूमि सामयिक घटनायें होती हैं। पिछले अंक में प्रकाशित 'डेला मेन्शन' हमारे इस दावे का ज्वलन्त प्रमाण है। और संभवत: यही कारण है कि निरंजन चौधरी के उपन्यासों के अनुवाद अन्य भाषाओं में भी हो रहे हैं। गुजराती भाषा में निरंजन चौधरी के उपन्यासों का प्रकाशन प्रारंभ भी हो गया है और यह हमारे लिए गर्व की बात है।

पानीपत के एक नवाब की इकलौती पुत्री नूरजहाँ बेगम की तलाश

www.akfunworld.wordpress.com

में एक निपट देहाती 'जाट' बम्बई आता है। वहाँ के० टी० माहताब जैसे सनकी करोड़पति, एक मॉडेल एजेन्सी चलाने वाले लॉरेन्स लॉज राय, ऐयाश पूँजीपति पाराशर और मॉडेल गर्ल्स—राबिया जहाँ बेगम, रेवा नारंग से उसकी भेंट होती है, और फिर हत्याओं का ऐसा सिलसिला शुरू हो जाता है कि जाट राम चकरा जाते हैं, लेकिन उसकी हिम्मत और सूझ-बूझ असली अपराधी को जब प्रकाश में ले आती है, तो आप बेतरह चौंक पड़ेंगे, इसलिए कि उस आदमी को आप अपराधी समझ ही नहीं सकते थे।

और वह जाट कौन था? अंत में जब जाट अपने असली रूप में आप के सामने आयेगा, तो विश्वास कीजिए, कि आप इस तरह चौंक उठेंगे कि, हो सकता है, उपन्यास ही आप के हाथ से गिर जाय।

हमें विश्वास है कि निरंजन चौधरी का यह उपन्यास भी आप को पसंद आयेगा।

अंत में निवेदन है कि आप अपनी शुभ सम्मति हमें, हमेशा की तरह, अवश्य लिख भेजें।

—सम्पादक
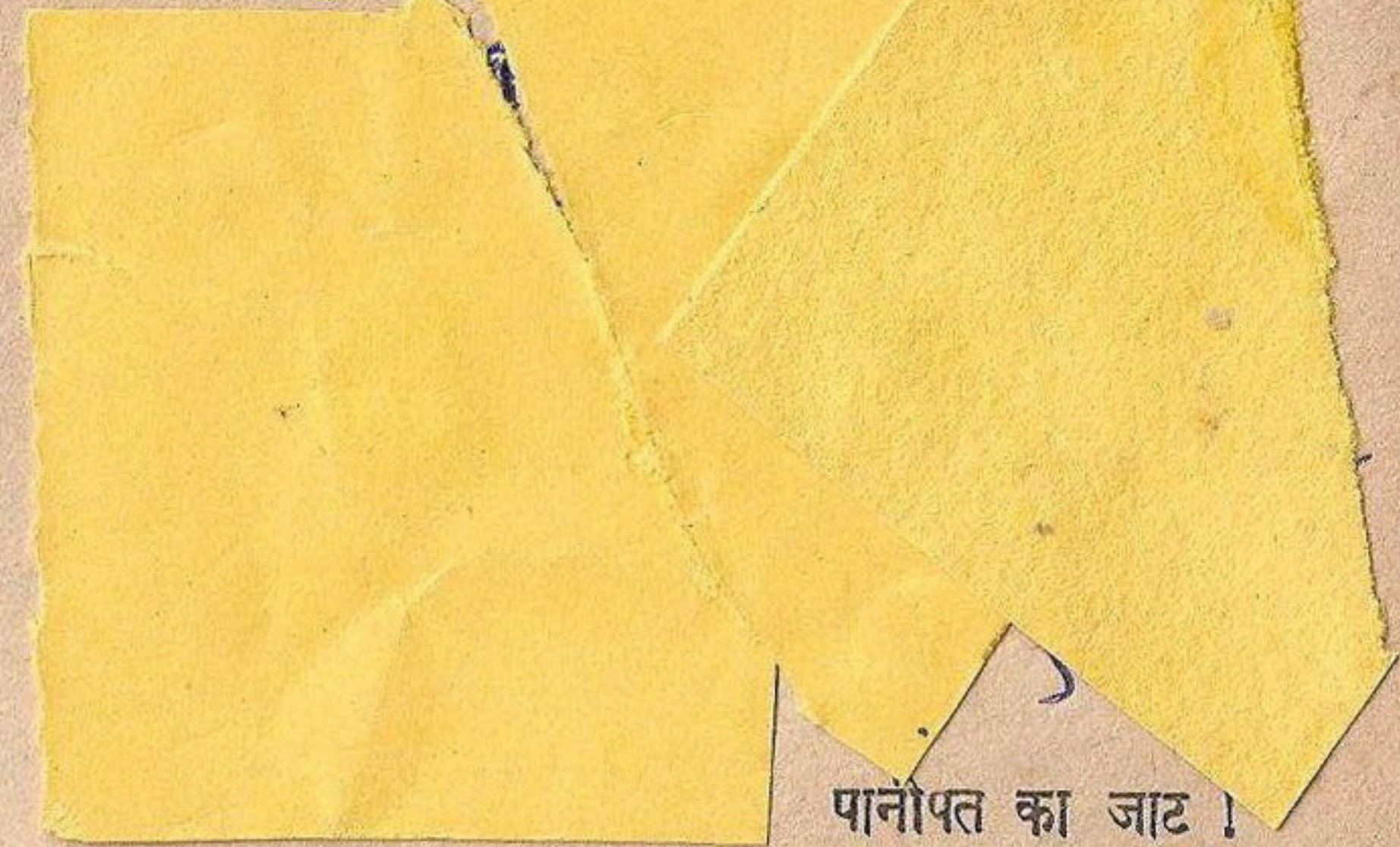
पानीपत का जाट।

रात जवान थी और होटल सेसिल में जवानी की सरगर्मियाँ उन्माद की हद तक पहुँची हुई थीं।

हाल पूरी तरह भरा हुआ था। अनगिनत बैरे चुस्त वर्दियों और चुस्त पैरों के साथ थे। एक तरफ़ 'रानॉज़' का बैण्ड हलकी गत बजा रहा था। फ़्लोर डान्स के दो राउन्ड हो चुके थे और, थोड़ी देर में तीसरे की शुरुआत होनी थी। हर आँख में एक ख़ुमारी थी, मादकता थी। हर पेशानी पर फ़ख्र की आड़ी रेखाएँ थीं और, हर दिल में था इन्तज़ार।

'रानॉज़' की गत खून में उबाल ला रही थी।

अलग-अलग मेज़ों पर अपनी-अपनी दुनियाँ लिए अलग-अलग व्यवसायों के लोग जमे हुए थे और सब कुछ चल रहा था...मनोरंजन भी और...और व्यापार भी।

●

एक मेज़।

छः आदमी। गोल आँखें। मक्कारियाँ शराब की तरह भरी हुईं।

www.akfunworld.wordpress.com

बेफिक्री बिछी हुई है, पर हकीकत में हस्ती का एक-एक अणु ध्यान में डूबा हुआ। सबके ध्यान एक ही व्यक्ति पर हैं और, वह है कितने ही सफल बँगला चित्रों का निर्देशक, अनिल बनर्जी।

"वेल मिस्टर वन्द्योपाध्याय। तुम गेट वे ऑफ़ इण्डिया देखा ?"

"देखा मिस्टर पटसन वाला।"

"वह बम्बई का प्रवेश द्वार है। और तुम जानता है, बम्बई क्या है ? बम्बई खुद एक गेट वे है। दुनियाँ का प्रवेश द्वार। हिन्दुस्तानी जब दुनिया में घूमनाँ माँगता तो इस गेट वे से गुजरना होता। इसीलिए बोलता, दुनियाँ में घूमो और इसके पहले यहाँ बम्बई में आ कर बसो। समझा ?"

कला का साधक और उपासक वन्द्योपाध्याय सिर हिला कर जताता है कि बात शायद ठीक ही है।

"इधर आओ और हमारा कोल्लाबरेशन में फिलिम बनाओ। तुम बहुत कुछ बनाया, पर अभी तुम हमसे बहुत कुछ सीख सकता। हम इस इन्डस्ट्री में छत्तीस साल गुजारा..."

"सो तो ठीक बोलता। हम, पर, कला का पोजारी हाय। हम वह देता हाय जो दोर्शक के जीवन पर छाप छोड़ता। यहाँ बोम्बई में कला नहीं है, सब कुछ काला हाय।"

अब जो बोल रहे हैं, वह फ़िनेन्सर पटसन वाला के मुसाहिब नम्बर एक। नाम की ज़रूरत नहीं। आर्ट डिरेक्टर हैं, यही परिचय काफी होगा।

"मिस्टर बनर्जी, आपकी बात हम समझते हैं। आप कला के द्वारा आत्मा का सौन्दर्य पेश करते हैं और हम इसी के माध्यम से शरीर का सौन्दर्य सामने लाते हैं। अब आप ऐसी लड़की के बारे में सोचिए, जिसके पास आत्मा का भी सौन्दर्य है और शरीर का भी...तो क्या बात है !"

चार सिर लय और ताल में हिलते हैं। क्या बात है !

"हमसे हाथ मिलाइए और हम दोनों मिल कर जिस चीज़ को परदे पर पेश करेंगे, वह उस लड़की की तरह होगी।"

"लोड़की को छोड़ो। हमारे कालीकोता में..."

●

एक और मेज़।

चार सिर आपस में जुड़े हुए।

"किसी से कहने की बात नहीं है। अपने तक रखो। पंडित जी ने भी मना किया है।"

"यह पंडित जी अब तक कहाँ थे ?"

"दिल्ली में भई। वहाँ तो बच्चा-बच्चा ज्योतिषाचार्य बजरंग वाचस्पति को जानता है। यहाँ कितनों की किस्मत उनके हाथों खुलेगी।"

"फिज़ूल की बात छोड़ो। बताया क्या उन्होंने ? जल्दी बताओ।"

पाँचों अँगुलियाँ दिखा जवाब दिया गया, "इतनी फ़ीस दे के आया हूँ। पाँच सब्ज़े। तब किस्मत को मुठ्ठी में करके लाया हूँ।"

"यह फ़ीस हम सब में बँट जाएगी। मुँह तो खोलो अब।"

"तो बता दूँ ?"

"बोलो।"

"अगली रेस में बाज़ी रहेगी...रुस्तम के हाथ। रुस्तम...घोड़ा है कि हवा..."

●

एक और मेज़।

सेक्रेटरी टु 'द मिनिस्ट्री ऑफ़ फ़ायनेन्स ने अपना सिगार सुलगाया और फिर धुएँ की दीवार के पीछे से बोले, "अब तुम क्या चाहते हो मिस्टर नम्बयार ?"

www.akfunworld.wordpress.com

"मैं यह चाहता हूँ कि...अब लायसेन्स न दिए जाएँ।"

"क्या ?...यह तुम कह रहे हो लायसेन्स के भूखे ?"

"हाँ, मैं। मैं यही चाहता हूँ कि दुग्गल हाउस को इस फ़ैक्ट्री का लायसेन्स न दिया जाए। अभी मैं उस इन्डस्ट्री में उनसे कम्पटीशन नहीं कर सकता।"

"तुम्हारी सहूलियत के लिए देश की तरक्की को रोक दिया जाए ?"

"देश की तरक्की होगी तो हमारी...और...आप की तरक्की रुक जाएगी।"

यह एक विचार करने वाली बात थी और, सेक्रेटरी साहब विचार में खो गये।

●

एक और मेज़।

चार नवयुवक। चढ़ती हुई उम्रें। फुसफुसाहट। लखपतियों की औलादें।

"बहुत खर्च हो चुका है और समय भी बहुत खर्च हो चुका है। अब सब्र की ताब नहीं है।"

"वह एअर लाइन्स की होस्टेस है मिस्टर। सात समुन्दर की खाक उसकी झोली में है। जो पेरिस की रंगीनी देख चुकी है, तुम्हारे शीश महल की वक़अत उसकी नज़र में झोपड़ी से ज्यादा नहीं।"

"शटअप। वह मेरे शीशमहल में आये तो। पेरिस, न्यूयार्क और लन्दन सब एक ही जगह दिखा दूँगा उसे। तुम्हारा वह हरामज़ादा दादा कहता क्या है ?"

"अब उसके बूते की बात नहीं। वह चालों में से छोकरियों को गायब करता आया है। बड़ी इमारतों और बड़े लोगों के आगे उसकी

पिण्डलियाँ काँपती हैं। अब मैं ही कुछ करूँगा। मेरे दिमाग में एक प्लैन है।"

"बोल जाओ।"

"खर्चा ज्यादा पड़ेगा। पूरे पुलिस स्टेशन को माल पिलाना पड़ेगा।"

"पिला दूँगा।"

"ठीक। उधर से खामोशी हम खरीद लेंगे और फिर एक गाड़ी में मिस लॉरेन्स को ज़बरदस्ती उठवा लिया जाएगा। दो बातें हैं। पहली कि शिकार को सुबह ही छोड़ देना पड़ेगा और दूसरी यह कि अपना हसीन चेहरा तुम उसे न दिखा सकोगे। तुम्हें और हम सबको नक़ाब में रहना पड़ेगा।"

"मंजूर। तो फिर कब ?"

चार सिर और आपस में जुट गये।

●

एक और मेज़।

"सेठ साहब। इधर आपका क्लीयरेन्स फिर मन्दा पड़ गया है। यह बात ठीक नहीं। रुपए की आपको कमी तो है नहीं, फिर पचास-साठ लाख के लिए क्यों खामोश हैं।"

सेठ साहब खामोशी से सिगार पीते रहते हैं और उत्तर कोई और देता है, दूसरे की ऊँचाइयाँ जिसे बेदाम का मुसाहिब बनाए हुये हैं।

"सेठ साहब का इन्वेस्टमेन्ट इधर बहुत हैवी चल रहा है। करोड़ों में। खामोशी से सब देखते चलो।"

"यू मीन स्पीक्यूलेशन ?"

"हाउ नॉनसेन्स ! स्पीक्यूलेशन कह सकते हो, पर ऐसा जिसमें हारने का कोई सवाल ही नहीं है। सेठ साहब ने पिछले ही हफ्ते दिल्ली

www.akfunworld.wordpress.com

का दौरा मारा था और वह दौरा कुतुबमीनार पर चढ़ने के लिए नहीं था। समझे साहब।"

"कुछ-कुछ समझ रहा हूँ। अगले ही हफ़्ते बजट पेश होने वाला है। मालूम होता है, बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी ले कर सेठ साहब अब की लौटे ।"

बन्द होठों के बीच हँसी फूट रही है। जी हाँ। जी हाँ! और सेठ साहब फ़कत मुस्करा रहे हैं।

"ऐसा है तो सेठ साहब, एक आध हिन्ट के अधिकारी तो हम भी हैं।"

अब सेठ साहब बन्द होठों के बीच हँस रहे हैं। क्या मज़ाक है! क्या मज़ाक है!

"हाँ तो सेठ साहब।"

सिर हिलाया जा रहा है। सब्र करो। सब्र करो।

●

एक और मेज़।

गोल चुभती हुई आँखें।

"आज की रात एक आदमी इस दुनियाँ को छोड़ जाएगा।"

सिगरेट का गहरा कश।

"नामाकूल कान्स्टेबल। समझता था, मेरी शराब की भट्ठी पर हाथ डाल वह अपनी ड्यूटी पूरी कर रहा है। ड्यूटी तो पूरी वह तब करता जब मेरी बढ़ायी हुई थैली को चुपचाप पकड़ वह चुपचाप फ़ारस रोड की ओर बढ़ जाता। अपनी ड्यूटी उसने पूरी नहीं की और, इसकी कीमत आज रात वह चुकायेगा।"

"बेवकूफ़ आदमी। बहरहाल आपका कोई नुकसान तो नहीं हुआ?"

"मेरा नुकसान?"

'रानॉज' की एक तेज़ गत।

"मैं हूँ 'किंग आफ डिस्ट्रिलर्स'। मेरा नुकसान करना इतना आसान नहीं है मेरे नादान दोस्त। एक बात।"

"हुक्म।"

"आज रात जिस समय उस कान्स्टेबल की पसलियों को एक चमचमाता हुआ फलक तोड़ेगा, ठीक उसी समय मेरी तीन नयी भट्ठियों का मुहूर्त होगा। आप सब कल मेरे बँगले पर तशरीफ़ लाएँगे। सुबह। जश्न को मैं उठा कर रखने का आदी नहीं। आप जानते हैं, अच्छे काम मैं फौरन ही निबटा डालना चाहता हूँ।"

तारीफ में होंठ गोल हो गये हैं। कहा जा रहा है—वाह!

नाच के तीसरे राउण्ड का समय हो चुका है। 'रानॉज़' ने 'जॉज' की गत छेड़ी।

ठीक उसी समय।

होटल सेसिल का भव्य गेट। कारों की लम्बी लाइन लगी हुई है। दूधिया रोशनी बरस रही है। पहरे पर का खान अब आराम करने बैठा है। शाम से ही सलाम ठोंकते-ठोंकते उसके हाथ दुख आये थे।

"कौन है?"

दूधिया रोशनी में खान ने देखा, एक दैत्य-सा धीरे-धीरे पास आता जा रहा है। सिर से भी ऊँची लाठी उसके हाथ में है।

"ऐ भाई किधर जाएगा! तुम्हारा चॉल इधर नहीं है। यह होटल सेसिल है, जहाँ अगले किसी जनम में आना। आ इस जनम में नईं। एइ! तुम सुनता नईं! बहुत ज्यादा कच्ची चढ़ा गया है। चल भाग।"

भारी आवाज़ उठी, "परे हटो।"

"अबे तू परे हट।"

www.akfunworld.wordpress.com

खान आगे बढ़ा और फिर दो ही सेकेण्ड के भीतर मिट्टी के भारी लोंदे की तरह खान भद्द से ज़मीन पर आ पड़ा और, ऊपर से उस पर आ पड़ी एक भरपूर लाठी।

दैत्य आगे बढ़ा।

खान अभी पूरी तरह पस्त नहीं हुआ था। या तो उसे नौकरी का खयाल आ गया और या फिर अपनी इज्ज़त का। वह उठ कर दौड़ा और दैत्य से लिपट गया। बेकार ही था सब, फिर भी खान लिपटा रहा और दैत्य आगे बढ़ता रहा।

गेटकीपर ने भी अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन करना चाहा और वह भी उस दैत्य से जा लिपटा, पर सब बेकार था।

पूरे हाल की आँखें द्वार की ओर घूम गयीं।

खान और गेटकीपर जमीन सूँघ रहे थे और उठने की कोशिश करके भी उठ नहीं पा रहे थे और दरवाज़े के ठीक बीचो-बीच एक लम्बा-चौड़ा आदमी खड़ा अपनी लाठी से फर्श ठकठका रहा था। उसकी झबरीली मूँछें ऐंठी हुई थीं और सिर पर बँधे बड़े से पग्गड़ के नीचे रूखे-सूखे बाल झाँक रहे थे। खद्दर का मैला सा मोटा-झोटा कुरता उसने पहना हुआ था और तहमद बाँध रखा था। पैरों में उसके चमरौधे जूते थे। कन्धे से लम्बा झोला लटक रहा था। सिर से पैर तक वह धूल में अटा हुआ था। दो क्षण उसने हाल का जायज़ा लिया और फिर आगे बढ़ा।

हर मेज पर भृकुटि-टेढ़ी पड़ गयी और होंठ सिकुड़ गए। क्या मुसीबत है! शरीफ लोग कहीं दो घड़ी बैठ दिल बहला लें, गरीबों से भरे इस ज़माने को यह भी मंजूर नहीं। कम्बखत हर जगह अपनी सूरत दिखाने पहुँच जाएँगे।

मैनेजर ने फ़ोन उठा लिया था और फ़्लाइंग स्क्वैड के नम्बर घुमा

रहा था कि वह आगन्तुक काउण्टर पर पहुँच गया और उसकी भारी-भरकम आवाज़ गूँजी, "फ़ोन रख दो।"

"फ़ोन...फ़ोन तो मैं अपनी डारलिंग को कर रहा हूँ।"

काउण्टर पर ज़ोर का हाथ पड़ा और मैनेजर के हाथ से फोन गिर पड़ा।

"मैं पानीपत का जाट हूँ।"

"ज़ी...जी...वह तो मैं देख ही रहा हूँ।"

"मैं तुम्हें और भी बहुत कुछ दिखा सकता हूँ, मसलन ज़मीन का रंग और छिटकते हुए तारे। घुप्प अँधेरे और कौंधते शरारे। देखोगे?"

"जी आप तो कविता में बोल रहे हैं। मैं यह सब क्या समझूँ। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

पानीपत के जाट ने लाठी ठोंकी और बोला, "मुझे एक कमरा चाहिए।"

"कमरा?" मैनेजर आसमान से गिरा।

पूरा हाल इधर देख रहा था और उसकी खामोशी में माँग छिपी हुई थी कि इस बदतमीज़ को जल्दी से यहाँ से हटाओ। आँख में किर-किरी लग रही है।

"जी...इसके लिए तो मैं मुआफ़ी चाहूँगा। इस समय तो मेरे पास कोई भी कमरा खाली नहीं है।"

जाट ने तीन बार लाठी ठोंकी और दहाड़ा, "जमीन के रंग, छिटकते तारे, घुप्प अँधेरे, कौंधते शरारे दिखाऊँ?"

मैनेजर घिघिया रहा था, "जी...मैं अर्ज़ कर रहा हूँ...! आपकी सेवा कर पाता तो मेरे होटल का सौभाग्य था। पर मजबूरी है...वाक़ई मजबूरी है।"

जाट ने लाठी टिका दी और झोला उतार उसके भीतर हाथ डाला। और जब उसका हाथ बाहर निकला, तो उसमें एक रिवॉल्वर था।

www.akfunworld.wordpress.com

मैनेजर चिल्ला पड़ा, "अभी नहीं...अभी मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं..."

और फिर वह खुद ही चुप हो गया और उस दूसरी चीज को बड़े ध्यान से एकटक देखने लगा, जो अब जाट के हाथ में थी।

सब्ज़ रंग के नोटों की वह मोटी सी गड्डी थी और उसके सिरे पर जाट की अँगुली यूँ नाच रही थी, गोया सितार के तारों पर चल रही हो।

बड़ी ही मुलायम आवाज़ में कहा गया, "मुझे एक कमरा चाहिए।"

मैनेजर ने एक चोर-नज़र हाल पर डाली। सब की खामोशी माँग कर रही थी कि देर क्यों हो रही है, हटाओ इस बेहूदे को।

हुँह !

मैनेजर ने तड़ाक से एक सैल्यूट जाट को मारा और फिर अपनी उस खास मुस्कान में, जो वह खास-खास लोगों को ही दिखलाया करता था, उसने कुछ आगे झुक अर्ज़ की, "हुजूर के लिए, मेरे खयाल से, एक सूट ही ठीक पड़ेगा। आराम के लिहाज़ से कह रहा हूँ। यूँ आप जो मुनासिब समझें।"

"ठीक है। सूट का ही इन्तज़ाम हो।"

दो बैरे अब तक अगल-बगल आ खड़े हुए थे और बारी-बारी से सैल्यूट मार रहे थे।

"आप इनके साथ ऊपर तशरीफ ले चलें। मैं अभी हाज़िर होता हूँ। हुजूर को बारह नम्बर के सूट में ले जाओ।"

जाट ने लाठी ठोंकी, मूँछें फटकारीं और फिर उसके जूते चर्र्-मर्र का संगीत सुनाते लिफ्ट के पास जा गुम हो गये।

मैनेजर ही-ही करता, खी-खी करता हाल के लोगों से कह रहा था, "अजी, मैं इनको बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ। पानीपत की शान हैं। करोड़-पति। इनके पूर्वज पानीपत की तीनों लड़ाइयों में लड़ चुके हैं। वाह-वाह ! क्या सादा तबीयत पायी है हुजूर ने !"

कमरे में पहुँच जाट ने जूता उतारा और पलंग पर पूरा पसर गया।

"बैरा।"

"हुजूर।"

"नाम बोलो।"

"किशन सिंह।"

"किशन सिंह। हमारे लिए हमाम तैयार करो ठण्डे पानी का। और तुम ? नाम बोलो।"

"हबीब। हबीब हुजूर।"

"हबीब हुजूर, तुम हमारे..."

"नहीं हुजूर। सिर्फ हबीब।"

"सिर्फ हबीब। अच्छा सिर्फ हबीब, तुम हमारे लिए..."

"हुजूर, हबीब। मेरा नाम खाली हबीब है।"

"उल्लू का पट्ठा। कभी कुछ नाम बताता है, कभी कुछ। खाली हबीब, तुम हमारे लिए गर्म हमाम तैयार करवाओ।"

"बहुत बेहतर। लेकिन गरम और ठण्डा हमाम ?"

"हाँ खाली हबीब। गरम और ठण्डा। हम अपने सिर को गरम पानी से और धड़ को हमेशा ठण्डे पानी से नहलाना पसन्द करते हैं। यूँ यह पसन्द हमारे इन दो हिस्सों ने खुद ही की है। हुक्म की तामील हो।"

आहिस्ते से दरवाज़ा खुला और दो मूर्तियों ने भीतर प्रवेश किया। इनमें एक मैनेजर था और दूसरा एक ठिगने कद का आदमी था।

"हुजूर को थोड़ी तकलीफ देने आया हूँ।"

www.akfunworld.wordpress.com

"मैनेजर। जो कुछ हम मँगाएँ, वही आये। न कम, न ज्यादा। हमने तकलीफ का आर्डर अभी कहाँ भेजा था?"

"वाह-वाह! हुजूर का मज़ाक भी किन बुलन्दियों को चूमता है! कुछ खानापूरी करनी है। रजिस्टर में हुजूर का नाम क्या दर्ज किया जाए?"

"पानीपत का जाट।"

"जी...जी हाँ। लेकिन, हुजूर के उस नाम जानने की यह नाचीज़ जुर्रत कर रहा है, जो आज पानीपत के बच्चे-बच्चे की जुबान पर है।"

"ओह! तो ऐसा बोलो। क्या बच्चा-जवान, क्या बूढ़ा, सबकी जुबान पर एक ही नाम है, गूजर सिंह किलेदार।"

"वाह! कँपकँपी छुड़वा देने वाला नाम है हुजूर का। तो बम्बई तशरीफ लाने का कोई खास सबब ही होगा?"

"हम सैर को निकले हैं। पूरे हिन्दोस्तान की सैर को।"

"जी हाँ। सैर सेहत के लिए बहुत ज़रूरी होती है।"

"मैनेजर। यह तुम्हारे साथ कौन है? इसको बाहर निकालो। हमें इसकी सूरत कत्तई पसन्द नहीं।"

उस आदमी की सूरत वाक़ई पसन्द के क़ाबिल नहीं थी। चतुर्भुजनुमा साँवला चेहरा, हिटलरी मूँछें, खोपड़ी पर अगल-बगल महीन बालों की झालरें, बीच में सफाचट मैदान।

"हुज़ूर, इनसे मिल कर आप बहुत खुश होंगे। यह आप ही की तरफ के हैं। इन्हें जैसे ही मालूम हुआ, आपसे मिलने दौड़े आये। आप हैं श्री एल० एल० राय।"

"एल० एल० राय। लोक लाज राय?"

"जी नहीं। लॉरेन्स लॉज राय।" राय ने अपना परिचय दिया।

"तो आप यहाँ पर लॉज चलाते हैं?"

"जी नहीं। एजेन्सी रन करता हूँ। मॉडल्स् की एजेन्सी।"

"हुज़ूर। इनको सारा बम्बई जानता है। 'ग्रेशस् मॉडल्स' का नाम किसने नहीं सुना! इनके मॉडल्स ने कितनी ही कम्पनियों को चमका दिया। हीरे को पहचानने की नज़र रखते हैं। कभी कोई लड़की जो चाल में सड़ रही थी, कहीं कोई टाइप राइटर खड़खड़ा रही थी, कोई चूल्हे-चक्की में ज़िन्दगी खराब कर रही थी, इनकी नज़र में आ गयी और फिर उसकी सही कीमत दुनिया आँकने लगी। बड़े सबाब का काम होता है यह। बड़ी दुआएँ मिलती हैं इसमें।"

"हूँ!"

राय ने कहा, "मैं सोनीपत का हूँ। मुद्दत हो गयी उस इलाके को छोड़े। बचपन जिन मैदानों में गुज़रा, उसकी याद अब भी आँखों को नम कर जाती है। उधर के किसी भी आदमी को देखता हूँ तो अपना भाई ही मालूम पड़ता है। सारी दुनिया घूम आया, पर तक़दीर कि अपने उस हुब्बे वतन की हवा में दुबारा साँस लेना नसीब न हुआ।"

"हूँ!"

"मेरे दिल के दर्द को कौन जाने, कौन पहचाने।"

"हूँ!"

"तो आप वहाँ पर कोई इन्डस्ट्री रन करते होंगे?"

"जी नहीं। मैं वहाँ पर खेती करता हूँ।"

"खेती?"

"जी हाँ। मैं खेती करता हूँ। मैं खेतिहर हूँ, ज़मीन का आदमी। मेरे पाँच बड़े-बड़े फ़ार्म हैं। आप जानते हैं, उनमें मैं क्या पैदा करता हूँ?"

"गेहूँ तो उस ज़मीन का मशहूर है।"

"जी नहीं। अपने फ़ार्म नम्बर एक में मैं केसर की पैदावार करता हूँ।"

www.akfunworld.wordpress.com

दोनों मूर्तियों की गरदनें आगे आ गयीं—"केसर? आपका मतलब ज़ाफ़रान से है?"

"जी हाँ! फ़ार्म नम्बर दो में हमने चाय का बागीचा लगा रखा है। बेहतरीन चाय का बागीच!"

होठों के कगार पर बात आ कर रह गयी, यानी खामोशी।

"फ़ार्म नम्बर तीन में कॉफ़ी का प्लैन्टेशन है। बेहतरीन कॉफ़ी। एक प्याला जिसका मानिन्द जामे हयात होता है।"

चतुर्भुज चेहरे वृत्ताकार हो गए।

"फ़ार्म नम्बर चार में रबर प्लैन्टेशन है। हमारा तैयार किया हुआ रबर, अफ़सोस है, दुनियाँ में कहीं भी अपना जवाब नहीं पा पाता।"

जवाब, इस बात का भी, अफ़सोस है, उन दोनों के पास नहीं था।

"फ़ार्म नम्बर पाँच में हमने खजूर ही खजूर लगा रखा है। ईराक के राजदूत ने अपना खास एलची हमारे पास भेजा था कि हम फ़ार्म नम्बर पाँच को बन्द कर उनसे मुँह माँगा इनाम ले लें, क्योंकि हमारी इस कोशिश से इस देश में उनके देश का व्यापार मारा जाता है। पर हमने कहा, हम बहुत जल्द हिन्दोस्तान की सरज़मीं पर हर तरफ खजूर ही खजूर पैदा करेंगे। समझे आप लोग?"

"वाजिब है, वाजिब है। तो यह पाँचों फार्म आपके...मेरा मतलब है...पानीपत में ही हैं?"

"बिलकुल! गूजर सिंह किलेदार को आपने समझा क्या है! अपने छठे फार्म के लिये हमने राजस्थान के रेगिस्तान में ज़मीन ले ली है और, वहाँ हम सेब का बागीचा लगाएँगे।"

"आप सब कुछ कर सकते हैं जनाब। आपसे मिल कर हमें बहुत खुशी हुई। आपको हम अपनी सोसाइटी में इन्ट्रोड्यूस करवाएँगे और,

हमें यकीन है आप उन लोगों से मिल कर और वह लोग आपसे मिल कर बहुत खुश होंगे।"

"श्योर श्योर। आई ऐम खुश एव्रीव्हेयर और, हरेक इज़ खुश विद मी।"

"अह...जी...?"

"खाली हबीब। हमाम तैयार हुआ?"

"हुज़ूर अभी कुछ ही दिन हुए हमारे इस होटल में एक बहुत शानदार कस्टमर ठहरा था। एक लड़की थी और वह आप ही की तरफ की थी। खास पानीपत की। आप शायद उसे जानते हों!"

"नाम बोलो।"

"नाम...कुछ...हाँ याद आया। नाम था उसका नूरजहाँ बेगम। शायद किसी एअर लाइन्स में एअर हॉस्टेस का जॉब उन्हें मिल रहा था। उसी सिलसिले में आयी थीं। आप जानते होंगे उन्हें?"

"बहुत अच्छी तरह से। नवाब मिर्ज़ा की बेटी नूरजहाँ बेगम को गूजर सिंह किलेदार बहुत अच्छी तरह जानते हैं। कहाँ है वह? हम उससे मिलना चाहेंगे।"

"वह तो हुज़ूर चली गयीं यहाँ से। दो महीने होने को आए उन्हें गए।"

"चली गयीं! कहाँ चली गयीं? कोई पता पीछे छोड़ गयी हैं?"

"जी नहीं।"

"अब आप लोग जा सकते हैं। खाली हबीब।"

राय ने कहा, "मैं आपसे फिर मिलूँगा। आप बहुत दिलचस्प आदमी हैं और मेरा खयाल है कि मेरी अपनी दुनिया भी आपको काफी दिलचस्प मालूम देगी। अच्छा इजाज़त दीजिए।"

"खाली हबीब!..."

www.akfunworld.wordpress.com

कहानी, नूरजहाँ की

रात के बारह बजे थे।

खिड़की के पास खड़ा पानीपत का जाट बम्बई के उस हिस्से को देख रहा था जो उसकी नज़रों में वहाँ से सिमट पा रहा था। नीचे हाल में डान्स के कार्य क्रम पूरे हो गए थे और एक-एक कर कारें अब रुख्सती पर थीं।

जाट ने माथे पर सिलवटें बनायीं, हाथों की अँगुलियाँ फोड़ीं और करीब-करीब चिल्ला कर बोला, "वाहियात! सब वाहियात।"

साथ वाले सूट की खिड़की से एक सिर बाहर निकला और इधर चिल्ला कर बोला—"यू ईडियट। सो जाओ।"

जाट ने बाहर सिर निकाला और उधर आवाज़ फेंकी, "शट अप।"

वह पलंग पर जा लेटा तो उसकी आँखों के आगे नवाब मिर्ज़ा की तस्वीर आ गयी।

नवाब मिर्ज़ा!

पानीपत की एक शानदार हस्ती। अपनी ज़िन्दगी का एक क्षण भी उसने कभी नष्ट नहीं किया। पर उसकी ट्रेजिडी रही है कि उसकी ज़िन्दगी का एक-एक क्षण बेकार ही गया है। उसके पूर्वज मुगल दरबार से सम्बन्धित थे और खानदान में जहाँ एक तरफ शाही परम्पराएँ चली आ रही थीं, दूसरी तरफ अपार सम्पदा के वरदान भी खत्म होने को नहीं आते थे। नवाब मिर्ज़ा ने खानदान की तवारीख़ में एक अनोखा ही कदम उठाया—तिजारत का कदम।

कदम पहले पहल लड़खड़ाया ही करते हैं और, नवाब मिर्ज़ा ज़िन्दगी भर लड़खड़ाते ही रहे। उन्होंने ऊन का कारोबार शुरू किया और शहर से बाहर पाँच हज़ार भेड़ों का रेवड़ एक दम ही पाल डाला तिब्बत और आस्ट्रेलिया से भेड़ों की अच्छी नस्लें मँगाई और उन्हें

आगे बढ़ाया। पाँच साल बाद जब इस शौक पर ताला पड़ा, तो तिजोरी की एक दराज़ खाली हो चुकी थी और पच्चीस लाख रुपए जाने कहाँ चले गए थे।

बहुत बड़ी एक स्पिनिंग मिल को उन्होंने बैठाया और वह भी उन्हें अच्छी तरह बैठा गयी। सात साल बाद जब मिल की आखिरी मशीन को भी औने-पौने निकाल मिल की इमारत को उन्होंने अपने हुक्म से गिरवा दिया, तो एक ज़ोरदार धक्का उन्हें लग चुका था। साठ लाख का धक्का।

नवाब मिर्ज़ा भी धुन के एक ही थे। अब उन्होंने पाँच छोटे-छोटे कारखाने खोल रखे थे और सायकिल के अलग-अलग पुर्ज़े उनमें तैयार होते थे। इस ऊँट को किस करवट बैठना था, अभी कह सकना मुश्किल था। यूँ नवाब मिर्ज़ा के दिमाग में खाके अभी कई थे और कितने ही रंगों में थे। राजस्थान में पाँच हज़ार एकड़ का एक फ़ार्म लेने की योजना चल रही थी, जिसमें कपास बोई जाती। एक कारखाने के नक्शे थे, जहाँ रेडियो के पुर्ज़े बनते और स्टेनलेस स्टील की चादरों के इम्पोर्ट का लायसेन्स वह ले ही चुके थे और वह कारोबार भी जल्दी ही शुरू होने वाला था।

व्यापार के इन लम्बे सिलसिलों के दौरान एक और अहम् घटना उनके जीवन में उतर चुकी थी।

अठारह साल से भी ऊपर का अरसा हुआ, जब एक औरत उनकी ज़िन्दगी में दाखिल हुई। वह अस्करी बेगम थीं। आला खानदान की वारिस और बेवा। खुदा की इबादत में दिन काटती थीं कि नवाब मिर्ज़ा की ज़िन्दगी से आ टकरायीं। दिल के बलबलों पर लाख काबू पाने की कोशिश की गयी, पर सब बेकार गया। नवाब मिर्ज़ा चढ़ती हुई उम्र पर थे और एक ही सजीले जवान। अस्करी बेगम ने उनके कदमों पर सिर रख दिया और ज़िन्दगी की नाव पार कराने का कौल ले कर

www.akfunworld.wordpress.com

ही उठीं। उम्र में वह नवाब से बड़ी थीं और पहले खाविन्द से उनकी गोद में एक लड़की भी थी, पर नवाब ने उनकी जिन्दगी को ज़ीनत बख्श ही दी।

फ़कत चार साल। फ़कत चार साल ही नवाब की ज़िन्दगी को रौशन कर अस्करी बेगम अल्लाह के दरवाजे जा पहुँचीं।

नवाब तकदीर पर मुस्कराए और फिर अपने ज़ेहन के सारे धारे उन्होंने पूरी तौर से तिजारत की तरफ मोड़ दिए। खानदान वालों के जोर-दबाव बेकार गए। नवाब ने सेहरा फिर नहीं बाँधा। अल्लाह ने उन्हें अपनी औलाद का मुँह भी नहीं दिखाया था। अस्करी बेगम की निशानी ही उनके दिल पर मरहम रखती रही। उनके आँगन को उसी ने गुलज़ार रखा और वह बदक़िस्मत आदमी तिजारत और तक़दीर से लड़ता रहा।

फिर साल पर साल गुजरते गए।

नूरजहाँ बेगम अब जवानी की देहलीज़ पर क़दम रख चुकी थी। उनकी आला पढ़ाई-लिखाई हुई थी और, समाज और धर्म की विकृत परम्पराओं की परछाई नवाब ने उन पर नहीं पड़ने दी थीं। आज़ाद हवा में नूरजहाँ बेगम ने हमेशा साँस ली और उसकी हर ख्वाहिश के आगे नवाब मिर्जा ने सिर झुकाया।

ढाई महीने से ऊपर हुए, जब नूरजहाँ बेगम बम्बई आयीं। उनका इरादा यूरप के टूर पर जाने का था और उसकी शुरू की तैयारी ही वह बम्बई में कर रही थीं। फिर?

फिर नवाब मिर्जा के पास उनकी नूरजहाँ को भेजी चिट्ठी वापस आ गयी। और फिर कुछ दिन बाद उनका भेजा हुआ मनीआर्डर भी वापस आ गया। 'इस पते पर कोई नहीं रहता।' इस इबारत को मिर्जा कितनी ही देर तक देखते रहे।

हाँ! नूरजहाँ बेगम लापता हो गयी थीं।

पुलिस की सरगर्मियाँ चल रही हैं। नूरजहाँ बेगम का कहीं कोई पता नहीं। नवाब मिर्जा के हाथों तोते उड़ गए थे। अपने को वह अपाहिज महसूस कर रहे थे और नूरजहाँ बेगम का कहीं कोई पता नहीं चल रहा था। उनका दिमाग काम नहीं कर रहा था और...

"नूरजहाँ...नूरजहाँ।" बिस्तरे पर पड़ा जाट बड़बड़ा रहा था।

हबीब ने थोड़ा दरवाजा खिसकाया और भीतर गरदन ला बोला, "हुजूर ने याद किया क्या? कुछ चाहिए हुजूर को?"

"नूरजहाँ...। नूरजहाँ चाहिए।"

"नूरजहाँ। नूरजहाँ तो हुजूर पाकिस्तान चली गयी है।"

"एँ। पाकिस्तान चली गयी?"

"जी हाँ हुजूर! अर्सा हो गया। अब आप कहें तो उसका कोई रिकर्ड लगा दूँ। उसी से दिल बहलाइए।"

"यू ब्लडी खाली हबीब। गेट आउट।"

खोज का पहला कदम

दूसरे दिन सुबह आठ बजे जाट होटल के बाहर निकला। खान ने लम्बा सैल्यूट मारा और बोला, "टैक्सी बुलवाऊँ हुजूर?"

"बिलकुल।"

टैक्सी आयी। ड्राइवर ने गरदन बाहर निकाल सामने खड़े नक्शे को देखा फिर कड़क कर बोला, "कहाँ जाएगा बे?"

जाट ने आव-देखा न ताव, पूरी लाठी घुमाकर टैक्सी पर बरसा दी।

www.akfunworld.wordpress.com

विण्ड स्क्रीन -रामहवाले हो गयी, मीटर अलग जा गिरा। लाठी फिर हवा में उछली, पर इसके पहले कि वह बरस पाती, ड्राइवर ने एक्सलेटर दबाया और जान बचा यह जा, वह जा।

"हरामजादा। हमको जानता नहीं।"

"ह...ह...। इधर के लोग कुछ बदतमीज होते हैं हुजूर। सरकार को चाहिए इन सबको तमीज सीखने के लिए पानीपत भेज दे।

"तुम रहने दो। हम खुद टैक्सी का इन्तजाम कर लेंगे।"

इसके बाद का समय जाट महाशय के लिए काफी तकलीफ का रहा। कहीं लोगों की भीड़ उनके इर्द-गिर्द इकट्ठी हो गयी, कहीं लोग उन्हें देख कर भागने लगे। किसी ने उन्हें गाली दी, किसी को उन्होंने गाली दी। मूछें फटकारते और लाठी भाँजते एक घन्टे बाद वह जिस इमारत के सामने पहुँचे, वह पुलिस हेडक्वार्टर्स था।

"हेय...हेय बैठता किधर है। क्या माँगता?"

"साहब हमारा एक आदमी खो गया है।"

"आदमी खो गया? बच्चा था क्या? कैसे खो गया?"

"वही तो हम बताते हैं। इसकी रिपोर्ट आपके पास है।..."

"सुनो सुनो। तुम पीछू को जाओ। डिपाट उधर है। इधर रिपोर्ट नहीं लिखा जाता।"

जाट ने लाठी ठोंकी और दहाड़ा, "तुम हमको पाठ पढ़ाते हो। बाहर बोर्ड लगा है। पूछ-ताछ यहाँ होगी, रिपोर्ट यहाँ लिखी जाएगी।"

"ओह। आई सी। अच्छा। क्या माजरा है, बोल जाओ।"

"एक लड़की खो गयी है। नाम है उसका नूरजहाँ बेगम।"

"तुम्हारी कौन है वह?"

"मेरी? मेरी...मेरी मँगेतर है साहब वह।"

"तुम्हारी मँगेतर खो गयी है।"

"यही तो रोना है।"

"देखो। मैं तो यह समझता हूँ कि तुम्हारी मँगेतर के कुछ और भी आशिक रहे होंगे और उन्हीं लोगों ने उसे उड़ा दिया होगा। तुम्हारी मँगेतर का पता नहीं लग रहा है और तुम यहाँ बैठे हो?"

"तो क्या करूँ?"

"तुम्हारी जगह मैं होता, तो जा कर अपने प्रतिद्वन्दियों का खून कर देता।"

जाट उठ खड़ा हुआ।

"कहाँ जा रहे हो?"

"जा रहा हूँ सेक्रेटरी टु 'द गवर्नमेन्ट ऑफ़ महाराष्ट्र, होम डिपार्टमेन्ट से मिलने और उन्हें यह बताने कि उनकी पुलिस लोगों को खून करने के लिए उकसाया करती है।"

अंजर-पंजर कुछ ढीले पड़े। सामने खड़ी काया को कुछ गौर से देखा गया, फिर उठ कर कहा गया, "तशरीफ़ रखिए। मैं आपकी पूरी सहायता करने के लिए तैयार ।"

जाट के कन्धे पर एक हाथ पड़ा।

"मेरे साथ आइए।"

वह दूसरा आदमी जाट को भीतर एक कमरे में ले गया, जो उसका अपना ऑफिस था।

"तशरीफ रखिए। मैं यहाँ का सीनियर इन्स्पेक्टर भातखण्डे हूँ। आपका शुभ नाम?"

"गूजर सिंह किलेदार।"

"आप नूरजहाँ बेगम के केस में आए हैं? इसकी रिपोर्ट हमारे यहाँ दर्ज है और, केस मेरे ही हवाले है, पर अभी तक मैं कोई विशेष प्रगति नहीं कर पाया हूँ। आपकी रुचि का कारण?"

www.akfunworld.wordpress.com

"मुझे आप नूरजहाँ के घर का प्रतिनिधि समझ सकते हैं। मैं भेजा ही उसके वालिद साहब के द्वारा गया हूँ।"

इन्स्पेक्टर ने एक फ़ाइल निकाल सामने रख ली थी और उसके पन्ने पलट रहा था।

"यह फ़ाइल इसी केस की है। नूरजहाँ यहाँ आ होटल सेसिल में ठहरीं। इनकी गतिविधियाँ बहुत ही संदिग्ध रहीं। कुछ फ़िल्म स्टूडियो उन्होंने छाने। कुछ मिलने-जुलने वालों को यह भनक दी कि वह एअर होस्टेस का काम करना चाहती हैं। कुछ मॉडल एजेन्सीज़ से भी उनके सम्पर्क रहे। कुछ हलकों ने उन्हें फिल्म लाइन्स में ब्रेक दिलवाने का भी आश्वासन दिया था। एक बड़े शहर में पहले पहल आ एक लड़की को जो अचकचाहट होनी चाहिए, कि क्या करे, किधर जाए, वह सब नूरजहाँ के साथ हुआ। ऐसे ही में उनका सम्पर्क शायद उन लोगों से भी हुआ, जो समाज के अवांछनीय तत्व माने जाते हैं और उनके इस तरह गायब हो जाने के पीछे, अनुमान है, कि हाथ उन्हीं लोगों का है।"

फ़ाइल पलटी जा रही थी और अब एक तस्वीर सामने थी।

"यह तस्वीर मैं देख सकता हूँ?"

"शौक से।" इन्स्पेक्टर ने फाइल उसकी ओर बढ़ा दी।

उस फ़ोटो में दो व्यक्ति थे। एक कुछ मोटे और ठिंगने कद का आदमी था और दूसरा व्यक्ति जाना-पहचाना था। वह नूरजहाँ थी।

"यह फ़ोटो हमने...दैनिक पत्र के कार्यालय से प्राप्त की है। यह वहाँ प्रकाशनार्थ भेजी गयी थी, पर जो छपी नहीं।"

"यह आदमी है कौन?"

"यह? इस आदमी के बारे में तुम्हें यहाँ बम्बई का हर आदमी बता सकता है। यह यहाँ का प्रमुख उद्योग पति है, के० टी० माहताब। लोग इसे सिनिक कहते हैं। वैसे इसके कुछ शौक पागलपन की हद

तक पहुँचे हुए हैं भी। यह आदमी आज तक आठ शादियाँ कर चुका है और आठ तलाक दे चुका है। कुछ शादियों का क़िस्सा यह है कि आज की गयी और कल तोड़ी गयी। इस आदमी के साथ फोटो का खिंचना और छपना लड़कियों के दृष्टिकोण से काफ़ी अर्थ रखता है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब ब्रेक से है मेरे दोस्त। ब्रेक अब चाहे मॉडलिंग के क्षेत्र में हो, चाहे फ़िल्म के क्षेत्र में। यह आदमी करोड़-पति है और यह फोटो बम्बई के लोगों को बताती कि जब ऐसा आदमी इस लड़की में रुचि ले रहा है तो इस लड़की में ऐसा बहुत कुछ है, जिसके बहुत कुछ उपयोग हो सकते हैं।"

जाट की आँखें दहक उठीं। बोला, "जनाब, यह लड़की उस खानदान से ताल्लुक रखती है, जो अब भी लाखों में खेलता है। इसका साथ पा दूसरे खुद कितने ब्रेक पा जाते। इस तरह की हलकी और ओछी बातों की कल्पना इसके साथ नहीं की जा सकती।"

"मैं निवेदन कर चुका हूँ कि नूरजहाँ की कितनी ही बातें और कितने ही कदम यहाँ काफी संदिग्ध रहे हैं। अब इसके पीछे कारण चाहे जो भी रहे हों।"

"हो सकता है, यह महाशय अपनी नवीं शादी के कार्य-क्रम रचा रहे हों।"

"हो सकता है। सब हो सकता है। अभी, लेकिन, के० टी० माहताब तक इस सिलसिले में पहुँचा नहीं गया है। खूब सोच-समझ कर ऊँच-नीच तौल कर के ही ऐसे आदमी के गिरेबान में हाथ डाला जा सकता है, यूँ नहीं।"

"इसका पता?"

"मिल जाएगा आपको।"

www.akfunworld.wordpress.com

पन्द्रह मिनट बाद जाट बाहर निकला। माहिम के लिए गाड़ी पकड़ने के पहले उसने आश्वस्त हो लेना चाहा।

काल बूथ से उसने फोन किया। उसे उम्मीद कम ही थी कि माहताब जैसा आदमी फोन खुद उठाएगा। उसे अचरज हुआ, जब उधर से आवाज़ आयी, "मैं के० टी० एम० हूँ। कौन हैं आप?"

"पानीपत का गूजरसिंह किलेदार। आप से मिलना चाहता हूँ।"

"किस सिलसिले में?"

"नूरजहाँ बेगम के सिलसिले में!"

कुछ देर खामोशी रही।

"आ सकते हैं आप! मैं कोठी ही पर रहूँगा।"

जाट ने फोन रख दिया और कुछ देर की उस खामोशी पर सोचता रहा। फिर उसने लाठी ठोंकी, मोटी चादर कन्धे पर डाली, तहमद कसा, मूँछों को हवाई दी और बाहर निकल आया।

क लाश मोटर में

के० टी० माहताब की कोठी एक छोटा-मोटा किला ही थी। बाहर से चारदीवारी इतनी ऊँची कि दूर से कोठी का ऊपरी हिस्सा ही नजर आता था। भीतर, कोठी के चारों ओर जो छूटी हुई खाली जगह थी, उसे मैदान कहना ही ठीक होगा। क्रिकेट का मैच उस बड़े मैदान में खेला जा सकता था। बेढंगे थोड़े पत्थर कोठी की दीवारों में उगे हुए से थे और साथ ही उसे इतनी मज़बूती भी सौंप रहे थे कि उसे ढहाने के लिए तोपें भी थोड़ा नहीं, बल्कि काफी समय ले लेतीं।

गेट खुला। पहरेदार ने कुछ कहा तो नहीं, लेकिन उसके साथ हो लिया। साथ में भयंकर सूरत और डील-डौल वाले वह चार जीव भी हो लिए, जिनकी पैदावार कुत्तों और भेड़ियों की मिलावट से होती है। पहरेदार की ही संगत का असर था, नहीं तो उनके खूनी पंजों और पैने दाँतों का प्रदर्शन कब का हो चुका होता। कोठी में चारों ओर वीरानगी थी। आदमी की सूरत को वह बड़ी कोठी जैसे तरस रही थी।

फ्रेन्च कट सूट में एक आदमी बाहर आया और अभ्यास के अनुसार अभ्यागत के स्वागत में कुछ झुका, पर तुरन्त ही सीधे खड़े हो कड़क कर बोला, "कौन हैं आप? हू आर यू?"

"यू गिव योर परिचय पहले।"

"हाँ...मैं? अच्छा! आप मुझे जानना चाहते हैं? मैं हूँ जी. एम. फिरदौस। सर के. टी. एम. का फ़र्स्ट सेक्रेटरी।"

"सर के. टी. यम.! यह 'सर' की उपाधि उन्हें किसने बख्शी? क्वीन विक्टोरिया ने या जार्ज सिक्स्थ ने।"

"बदतमीज आदमी। हमारा मालिक इतना बड़ा आदमी है कि यह टाइटिल खुद-ब-खुद आ कर उनके नाम के साथ जुड़ गयी। समझा?"

"ओह...तब तो आने वाले दिनों में आने वाले किसी टाटा या बिड़ला के साथ सम्राट् या शाहन्शाह का खिताब भी जुड़ जाएगा। यह भी हो सकता है कि मस्ती में आ कोई 'प्रधान मन्त्री' या 'राष्ट्रपति' की उपाधि को बुला बैठे। तब इस सरकार का क्या होगा?"

"तुम यह सोचो कि अगर तुम यहाँ से तुरन्त ही लौटे नहीं, तो तुम्हारा क्या होगा?"

"क्या होगा! क्या होगा एक मिसरा है, जिस पर तरह तरह के शायरों ने तरह-तरह की बानगियों के नमूने दिखाए हैं। रुखसारों का क्या होगा...आबशारों का क्या होगा...जुबाने शायर रुक गयी, बहारों

www.akfunworld.wordpress.com

का क्या होगा। देखा आपने, क्या चटपटेदार शेर मैंने तैयार कर दिया। आप इतनी जल्दी चाय तैयार कर सकते हैं?"

"तो आप यहाँ चाय पीने आए हैं?"

"और साथ ही साथ सर के. टी. यम. से मिलने भी।"

"ओह! सर के. टी. यम. सचमुच ही आपसे मिल कर अपनी तकदीर को सराहेंगे। आपका शुभ नाम?"

"गूजर सिंह किलेदार!"

"तो...तो अप्वाइन्टमेन्ट आप ही ने किया था?" आवाज कुछ दबी।

"जनाब!"

"सर आपका इन्तजार ही कर रहे हैं। मेरे साथ तशरीफ लाइए।"

फ़िरदौस महाशय जाट को साथ ले कोठी के पीछे की ओर ले गए। अभी तक किसी और आदमी के दर्शन नहीं हुए थे। पीछे भी सपाट मैदान था और एक तरफ गराजों की लाइन इस तरह लगी हुई थी, गोया रेल्वे क्वार्टर्स हों। हर गराज में एक कार थी।

"तो तुम्हारे मालिक कारों का बिजनेस करते हैं?"

"जी नहीं। कारों का शौक रखते हैं।"

एक तरफ तीन-चार कारें जुट खड़ी थीं। एक कार के पीछे से एक चेहरा उठा। होंठों के एक कोने में सिगार दबा था और दूसरे कोने से कहा गया, "यस सेक्रेटरी!"

"आपके मुलाकाती आ गए हैं। श्री गूजर सिंह किलेदार।"

"ओह मिस्टर गूजर सिंह। अच्छा सेक्रेटरी, तुम जाओ। मेहमान, माई गेस्ट, इधर आओ।"

जाट आगे बढ़ा। दोनों एक दूसरे के अब सामने थे और एक दूसरे का मुआयना कर रहे थे।

सर के. टी. माहताब नाम का जन्तु, मनुष्य कम और जन्तु ज्यादा

मालूम देता था। बहुत ही छोटे कद लेकिन बहुत ही फैले डील-डौल के उस मालिक का सिर भीतरी कूवतों के लिहाज़ से चाहे जो भी रहा हो, बाहर से बिलकुल ही सपाट था। उसका चेहरा भी बिलकुल सपाट था। उसकी आँखों में क्या था, कह सकना मुश्किल है, क्योंकि वहाँ एक बात आती थी और बैठने के पहले ही बिदा हो जाती थी उसके कन्धे ढीले छूटे हुए थे और यूँ लगते थे, गोया झूल रहे हों। नाइट सूट और स्लीपर में वह था।

"मिस्टर गूजरसिंह, आपसे मिल मुझे खुशी हुई।"

"इस औपचारिकता को फ़िलहाल मैं नहीं बरतूँगा। आगे कभी खुशी हुई तो अवश्य ही आपको सूचित करूँगा।"

"आई सी। कम से कम साफ़गोयी तो आप बरत ही रहे हैं। मैं इसको लाइक करता हूँ। ओपेन हार्ट। बट...आपकी यह स्टिक जो है...क्या कहते हैं इसको...लाठी...इसको मैं लाइक नहीं करता। इस में सेन्स क्या है, मैं फालो नहीं कर पाता।"

"जैसे ओल्ड मेन चलो विद छड़ी, वैसे ही यंग मेन शुड कीप लाठी विद देम।"

"व्हाट? व्हाट यू से? आयी सी। देन...मुझे भी हाथ में यह लाठी ले कर चलना चाहिए? यही आप मीन करते हैं?"

"जी नहीं। यू आर नाट नौजवान आदमी!"

"ओह! मैं उतना ही यंग हूँ, जितने आप हैं मिस्टर गूजर सिंह।"

"जी नहीं। आठ शादियों और आठ तलाकों के बाद आप नौजवान नहीं रह सकते।"

के. टी. यम. की आँखें कुछ खिंची, कुछ चढ़ीं, कुछ बाहर निकलीं और फिर वह ठठा कर हँस पड़ा, "मेरी आठ शादियाँ ही इसका सबूत है मिस्टर गूजरसिंह कि मैं एक नौजवान आदमी हूँ।"

"एक ही शादी और एक ही तलाक के बाद आदमी अपनी उम्र

www.akfunworld.wordpress.com

को कितना बीत चुका महसूस करता है। इन बातों का सम्बन्ध दिमाग और दिल से भी बहुत होता है मिस्टर के. टी. यम.।"

के. टी. यम. फिर ठठा कर हँसा।

"उम्र तब बीतती है मिस्टर, जब आप औरत के साथ ज़िन्दगी को भोगते हैं, लेकिन जब आप सिर्फ़ औरत ही को भोगते हैं तब उम्र आगे नहीं बढ़ती, पीछे की ओर मुड़ती है।"

"अपनी बात को आप ने अधूरा छोड़ दिया मिस्टर के० टी० एम०। उस हालत में आदमी भी पीछे की ओर मुड़ता है...पीछे...पीछे उस युग में जब वह पशु था...निरा पशु।"

आँखों ने फिर रंगतें बदलीं और के० टी० एम० फिर ठठा कर हँसा। उसने हाथ बढ़ाया और कहा, "मुझे आप से मिल वाक[ई] खुशी हुई।"

जाट ने हाथ मिलाया और कहा, "मुझे आप से मिल वाक[ई] अफ़सोस हुआ।"

"एनी व्हे। मैंने आप को लाइक किया। आइए, मैं आपको अपनी कारें दिखाऊँ। मेरी कारें। मेरा प्राइड पज़ेशन। इतना रि[च] क्लेक्शन, मेरा दावा है, किसी महाराजा के पास भी नहीं होगा।"

"महाराजाज़ आज कल हैव्ह चेंज्ड। अब महाराजाज़ आर लो[ग]-बाग लाइक यू। लोग-बाग व्हू हैव इन् देयर तिजोरीज़ तीन बटे चा[र] कैपिटल ऑफ़ 'द कन्ट्री।"

"मिस्टर गूजरसिंह। यह व्हाट् टाइप ऑफ़ लैंगवेज आप बोल[ते] हैं। मैं फ़ॉलो तो करता हूँ लेकिन बहुत स्ट्रेन्ज साउन्ड करती है।"

"माई लैंग्वेज इज़ बिलकुल मिलती-जुलती विद योर लैंग्वेज मि[स्टर] के० टी० एम०।"

"हाऊ ? कैसे ?"

"जब आप हिन्दी व्याकरण के हिसाब से बने वाक्य में चार पी[छे]

दो शब्द अंग्रेजी के डाल देते हैं, तो अगर मैं अंग्रेज़ी व्याकरण के हिसाब से बने वाक्य में चार पीछे तीन शब्द हिन्दी के डाल देता हूँ तो क्या बेजा करता हूँ ?"

"ओ हो...हो...हो ! नावेल आइडिया ! मैं होप करता हूँ कि आप का यह एक्सपेरिमेन्ट सक्सेसफुल होगा।"

"आई ऐम आशावादी टू। इतना कि आई बिलीव इन् कमिंग भविष्य, साहित्य विल बी रिटेन इन् दिस भाषा।"

"ओ हो...हो ! मेरी कारें देखिए। दुनियाँ की हर बेहतरीन कार मेरे पास है। मर्सेडीज़, ब्यूक, लिंकन, कैडिलेक...डबल आर...आई मीन, रॉल्स रायस। और रेस कारें। वर्ल्ड की बेस्ट रेस कारें। यह मेरी हॉबी है। यू नो, हर साल मैं कॉन्टीनेन्ट का टूर क्यों करता हूँ ?"

"आई विल बी टू खुश टु नो। व्हाई यू प्रोसीड ऑन भ्रमण ऑफ़ कॉन्टीनेन्ट ?"

"रेस देखने। पेरिस और आम्स्टर्डम् की वर्ल्ड फ़ेमस रेसेज़ देखने। तुम सोच सकते हो थिरी हन्ड्रेड से भी ऊपर की स्पीड पर दौड़ती हुई कारों की बाबत ?"

"यस। दैट नक्शा इज़ विकनिंग साफ़ एण्ड साफ़ इन् माई माइन्ड।"

"मैंने भी इसकी बहुत प्रैक्टिस कर ली है और अब मेरा फ़र्म डिटरमिनेशन है कि अगले साल फ्रान्स की रेस में मैं और मेरी यह एम० बी० भी होगी।" कहते हुए के० टी० एम० ने जिस कार पर प्यार से हाथ रखा, वह बड़ी अजीब और बड़ी लम्बी कार थी। उसके पहिए और टायर बहुत बड़े-बड़े थे, बॉडी से भी दो फ़ीट ऊपर उठे हुए।

"एम० बी० ?"

"एम० बी०। मैं इसे मुहब्बत से एम० बी० कहता हूँ। एम० बी०। माई बिलवेड। मेरी हॉबी की तुमने तारीफ नहीं की मिस्टर गूजरसिंह ?

www.akfunworld.wordpress.com

दूसरे तमाम लोग तो तारीफ़ करते-करते हाँफ तक जाते हैं। आप की भी तो कुछ हॉबी होगी माई ऑनरेबल गेस्ट।"

"माई हाबीज़ आर आल्सो वेरी वेरी अजीबोगरीब, ऐण्ड लोग बाग गो आन...गो आन डूइंग तारीफ़। माई हॉबीज़ आर तलवार भाँजना, भाला फेंकना, घुड़ सवारी करना, तोप चलाना।"

"आई सी। लेकिन आजकल इन हॉबीज़ की इम्पार्टेन्स क्या है!"

जाट की आँखें चढ़ गयीं, "मिस्टर के० टी० एम। फ़र्स्ट सोचो, देन बोलो। मैं जाट हूँ। यू नो व्हाट अर्थ दिस शब्द हैज़। माई एक फ़ोरफ़ादर वाज़ दाहिना हाथ ऑफ़ जाट सूरजमल। हैव यू हर्ड नाम ऑफ़ सूरजमल ? सूरजमल जाट ?"

"सूरजमल ? कौन सूरजमल ?"

"सूरजमल ! व्हू हैड हिलाओड दि वेरी नींव ऑफ़ मुगल साम्राज्य इन् इण्डिया। बहरहाल। छोड़िए इसको।"

"छोड़ो ! हाँ, पहले तुम मेरी एम० बी० की तारीफ करो। इसकी तारीफ सुनना मुझे पसन्द है। मैं रेस में इसी गाड़ी से भाग लूँगा। दुनियाँ में यह सबसे तेज़ गाड़ी कहलायेगी। यह इज़्ज़त इसे मिल कर ही रहेगी। आलम साब को भी पूरा यकीन है। आलम...आलम !"

जाट लड़खड़ा गया। उसके पैरों में ठोकर लगी थी। परे हट कर उसने देखा, एम० बी० के नीचे से एक मानव आकृति धीरे-धीरे सरक कर बाहर आ रही थी। दुबले-पतले लेकिन निहायत ही चुस्त जिस्म का मालिक सलाम कर खड़ा हो गया।

"आलम ! यह आलम साब है। कारों के बारे में जितना यह जानता है, पूरी बम्बई में कोई और नहीं जानता। इसको तुम आधा टन स्टील दे दो, यह एक घन्टे के अन्दर उसकी शक्ल बदल कर तुम्हारे सामने एक कार खड़ी कर देगा। मेरे इस प्राइड पजैशन की

सारी देख-रेख इसके सिपुर्द है। आलम, तुम क्या बोलते हो ? रेस में मेरी एम० बी० की पोज़ीशन क्या होगी ? बोलो फिर।"

"फ़र्स्ट ! एकदम फ़र्स्ट !"

जाट को लगा, चाभी भरा बबुआ बोला है जैसे।

"गुड। आलम साब, मैं तुम पर उतना ही फ़ख्र करता हूँ, जितना एम० बी० पर। देखा तुमने गूजर सिंह। अब तुम तारीफ करो।"

"गूजर सिंह से तारीफ पाना इतना आसान नहीं है मिस्टर के० टी० एम०। पहले मैं काम देखता हूँ, फिर तारीफ करता हूँ।"

"ओ ओ ! तुम बहुत आउट स्पोकन हो। एनी व्हे। जब मैं तुम्हें लाइक कर चुका हूँ तो लाइक करता ही रहूँगा।"

"मैंने अपने आने का कारण आप को फ़ोन पर बताया था।"

"ओ...यस यस ! तुम नूरजहाँ बेगम के बारे में कुछ कह रहे थे। क्या हुआ उसे ?"

"वह गायब हो गयी है।"

"ओ ओ ! कैसे गायब हो गयी है ?"

"मुझे इसी का पता लगाना है कि वह कहाँ है। किन्हीं बदमाशों का इसमें हाथ है और मैं उनका सिर तोड़ दूँगा। मैं आप से यह जानना चाहता हूँ कि आप नूरजहाँ के बारे में क्या जानते हैं ?"

के० टी० एम० सिगार का धुआँ उड़ाता दो गज़ ज़मीन के दायरे में घूमता रहा। बोला, "नूरजहाँ बेगम। अच्छी लड़की है। तुम्हारी ही तरह आउटस्पोकन। उसमें उम्र की ताज़गी है। उसका दिल और दिमाग अभी-अभी खिले फूल की तरह ताज़ा है।"

जाट ने लाठी ठोंकी। होठों को चबा कर बोला, "इसके अलावा और क्या जानते हैं आप ?"

"बड़ी भोली बातें करती है। सुन कर हँसी आती है। याद आता है कि कभी हम भी ऐसी ही बातें करते थे।"

www.akfunworld.wordpress.com

"और कुछ ?"

"मैं तुम्हें सब बताऊँगा मेरे ऑनरेबल गेस्ट। तो वह गायब हो गयी है ?"

"जनाब।"

"च...च...! मुझे भी ऐसा ही शक हुआ था। बहुत दिन हो गये उससे मिले हुए। वही मैं सोचता था कि फिर वह आयी क्यों नहीं। तो इसमें बदमाशों का हाथ है ? गूजर सिंह, मेरा खून अब उबल रहा है।"

"जान कर खुशी हुई।"

"गूजर सिंह, तुम उसका पता लगाओ।"

"उसकी खोज में आप क्या मदद कर सकते हैं ?"

"मैं ! मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"यही मैं जानना चाहता हूँ।"

"मैं ? मैं क्या करूँ ? ठहरो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं तुम्हें जासूस के रूप में नियुक्त करता हूँ। जाओ, मेरी ओर से तुम उसकी खोज करो। मैं तुम्हें मेहनताना दूँगा।"

जाट ने दाँतों को कचकचा कर तीन बार लाठी ठोंकी, "मुझे मेनहताना नहीं चाहिए। यह मेरा अपना काम है।"

"नहीं, तुम्हें मेहनताना लेना ही होगा। यह मेरी इच्छा है। अगर नहीं लोगे, तो मेरा-तुम्हारा साथ नहीं निभेगा। मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूँगा।"

जाट बड़े असमंजस में पड़ा। इस पागल आदमी का दिमाग़ जिस ओर मुड़ गया, बस मुड़ ही गया। कुछ सोच कर जाट ने कहा, "अच्छी बात है। आप मुझे अपना प्राइवेट डिटेक्टिव ही समझिए और मेहनताना दीजिए। मुझे स्वीकार है।"

"गुड ! अब तुमने काम की बात की है। तलाशो। खूब तलाशो। पूरे बम्बई की और पूरे देश की खाक छानो। तुम्हें जो चाहिए, सब

दूँगा। शायद तुम्हें कार की भी ज़रूरत पड़ेगी। मैं तुम्हें कार दूँगा। तुम जो कार चाहो, ले जाओ। ठहरो। तुमने मेरी एम० बी० की तारीफ़ नहीं की है। तुम इसका काम देखना चाहते हो। ठीक है ! तुम एम० बी० ले जाओ। कार चलाना जानते हो ?"

"जानता हूँ बड़े भाई।"

"एम० बी० को चलाना मज़ाक नहीं। कोई बात नहीं। आलम शाब तुम्हें देखते-देखते इसका चलाना सिखा देगा।"

"सो तो ठीक है महाराज, पर काम की बात तो कुछ हुई नहीं। आप सोचिए, आप से मुझे काम की बात क्या मालूम हुई !"

"काम की बात जाननी है तो उस आदमी के पास जाओ, जिसकी मारफत नूरजहाँ मुझ तक पहुँची थी, या कहना चाहिए, जिसने नूरजहाँ का परिचय मुझसे कराया था।"

"कौन है वह ?"

के० टी० एम० की आँखें कड़वाहट से भर गयीं, "एक हराम-ज़ादा, जिसका नाम है एल० एल० राय। वह तुम्हें बताएगा कि वह मॉडल एजेन्सी चलाता है, पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि इस खूबसूरत आर्ट का बहाना करते हुए और मॉडल गर्ल्स को मजबूर करते हुए वह उनके शरीरों का व्यापार चलाता है। सही मायनों में वह हरामज़ादा है। जाओ उससे मिलो। उससे ही तुम्हें बहुत कुछ मालूम हो सकेगा।"

जाट के दिमाग़ पर घन बरस रहे थे। एल० एल० राय ! लॉरेन्स लाल राय !...नूरजहाँ ने मॉडल गर्ल बनना चाहा था...उसे बताया गया था फ़िल्म लाइन का प्रवेश द्वार यही है...एल० एल० राय !

के० टी० एम० उसके साथ-साथ चला।

"मैं तुम्हें उसका पता देता हूँ। उससे मिलो। इसका लेकिन तुम्हें ध्यान रखना होगा कि उससे तुम्हारी जो-जो बातें होंगी, वह आ कर तुम मुझे बताओगे।"

www.akfunworld.wordpress.com

Bijay's Scan

जाट खामोश था।

"यह मेरी ब्यूक ले जाओ। एम० बी० को सीखने में कुछ समय तो लगेगा ही।"

के० टी० एम० ने ब्यूक पर, जो एक दम आखीर में थी, हाथ रखा और फिर?

के० टी० एम० इस तरह पीछे लड़खड़ा कर हटा, जैसे जीवन का सबसे अप्रियकर दृश्य उसने इस समय देखा हो।

उसकी रंगत सफ़ेद पड़ गयी, आँखें जड़ हो गयीं और आवाज़ गुम!

जाट आगे बढ़ा।

फिर जाट ने विण्डो पर दोनों हथेलियों को टिका लिया और होठों पर एक मुस्कान ले, जो कुछ सामने था उसे देखने लगा।

चिरपरिचित दृश्य सामने था।

वह एक लड़की थी। खूबसूरत...इतनी कि अभी भी खूबसूरती उसके इर्द-गिर्द थी। पीछे की सीट पर उसका निस्पन्द शरीर जैसे बहुत ही एहतियात से रखा गया था।

वह लड़की मृत थी।

उसका गला एक तरफ से ले कर दूसरी तरफ़ तक बड़ी सफाई से तराशा हुआ था।

www.akfunworld.wordpress.com

कौन थी वह

खामोशी थी। बहुत देर से खामोशी थी और इतनी कि जब हवा के झोंकों से पेड़ों की सूखी पत्तियाँ टूट कर उड़ती हुई आ गिरीं, तो उसकी हलकी थपथपाहट साफ़ सुनाई दी।

के० टी० एम० की अँगुलियों में सिगार अभी भी था, पर वह इस समय सिगार ही को नहीं, सारी दुनिया को भूला बैठा था। उसकी आँखों में दहशत की थाक जम कर बैठी हुई थी और होंठ केवल दो बार भगवान को याद कर खामोश हो गये थे।

जाट का दिमाग पूरी तरह सन्तुलित था। इन क्षणों को, जो चेतना को शून्य में डुबो देते हैं, वह खूब अच्छी तरह पहचानता था। वह भी खामोश था, पर कहना चाहिये कि खामोशी का अभिनय कर रहा था। वस्तुतः वह अध्ययन कर रहा था। के० टी० एम० का अध्ययन और वह भी काफी मनोरंजन के साथ।

और, उन दोनों के पीछे एक आदमी और खड़ा था। आलम सा'ब।

आलम सा'ब आगे आया और, अपने मालिक को उसने दो बार पुकारा।

कोई उत्तर नहीं।

आलम सा'ब ने के० टी० एम० के दोनों कन्धों को पकड़ा और इतने ज़ोर से झिंझोड़ा कि वह एकदम लड़खड़ा कर एक तरह से ब्यूक की गाड़ी से टकरा गया। भीतर पड़ी लाश एक बार हिल गयी।

जाट को आलम साब के इस कदम पर, जिसके पीछे हद दर्जे की बेबाकी थी, कुछ अचरज ही हुआ।

इसका असर लेकिन बहुत ठीक ही हुआ। के० टी० एम० की आँखों में होश और शरीर में कुछ गरमी की वापसी हुई।

"आलम साब...आलम साब..."

"हुज़ूर। घबराने की कोई बात नहीं है।"

"मेरे लिये तुम फौरन शराब का इन्तज़ाम करो। नहीं...मेरे दोस्त [illegible] सिंह के लिये भी इन्तज़ाम हो। सुनो। पुलिस को भी फ़ौरन फ़ोन कर दो।"

www.akfunworld.wordpress.com

कोठी की ओर जाते हुए आलम साब ने कहा, "वैसे ब्यूक में भी ड्रिंक कॉरनर है हुज़ूर।"

के० टी० एम० धीरे-धीरे ब्यूक की ओर बढ़ा। उसकी आँखों में अब उत्कण्ठा थी, हद दर्जे की बेसब्री। वह इधर-उधर से, बिना गरदन हिलाये, जिस तरह लाश को वह देख रहा था, उससे स्पष्ट था कि उसे किसी चीज़ की तलाश थी। जिस तरह वह गूजर सिंह से नज़रें चुरा रहा था, उससे भी स्पष्ट था कि उसकी उपस्थिति उसे इस समय नागवार गुज़र रही है। एक बार तो वह यूँ हाथ बढ़ा कर कुछ आगे बढ़ा कि लाश को उलट देखेगा कि उसके नीचे क्या है, पर कुछ सोच कर वह रुक ही गया।

"भाई ऑनरेबल गेस्ट! तुम ड्रिंक कॉरनर को खोलो। उस नीले बटन को दबा दो, बस।"

जाट ने रूमाल निकाला और अपनी अँगुली में लपेट उसने बटन दबा दिया।

एक खूबसूरत सा बोर्ड धीरे-धीरे सामने आ गया। ब्लैक नाइट की बोतल, सोडा और आइस बैग सजे थे और सजे थे दो गिलास। एक गिलास के तले में चन्द क़तरे अभी बाकी थे और दूसरे गिलास में कुछ न होते हुए भी बहुत कुछ था। उसके किनारों पर एक तरफ लिपस्टिक के हलके दाग़ थे। जाट ने एक बार मृत लड़की के होठों की तरफ़ देखा।

"गूजर सिंह, जल्दी से दो गिलास तैयार करो।"

"मेरा खयाल है मिस्टर के. टी. एम. कि यहाँ की किसी भी चीज़ को छुआ न जाए। पुलिस शायद यही चाहेगी।"

"हूँ! ठीक कहते हो। रहने दो। आलम साब ला ही रहा होगा।"

"वैसे...मिस्टर के. टी. एम., यह लड़की कौन है?"

"राका शीराज़ी। यही इसका नाम है। मॉडल गर्ल। उस कुत्ते एल० एल० राय की ही मॉडल एजेन्सी की एक लड़की।"

"आप इसे कैसे जानते हैं?"

"भाई गूजर सिंह। यह सवाल तुम मुझसे न करो। इस शहर की अनगिनत लड़कियों को मैं जानता हूँ और उन सबको जानने के पीछे कारण एक ही है।"

"आपकी इससे आखिरी मुलाकात..."

"अरे भाई, बहुत दिन हो गए। इसे तो मैंने महीनों से नहीं देखा था। कैसे यह यहाँ आ गयी...क्या-क्या माजरे हुआ करते हैं! मेरी गरीब जान को कहीं चैन नहीं है।"

"मेरी सहानुभूति लीजिए।"

आलम साब हाथों में एक ट्रे लिए लौटा। के. टी. एम. ने लपक कर ट्रे ले ली और ड्रिंक खुद ही मिक्स करते हुए बोला, "यह आफ़त की मारी हम लोगों की ब्यूक में कैसे आ गयी आलम साब?"

आलम साब के तौर-तरीके और हर बात पूरी तरह से संयत ही थे।

"कहा नहीं जा सकता हुज़ूर। ब्यूक तो कई दिनों से इस्तेमाल में भी नहीं आयी। कल रात ये गाड़ियाँ यहीं खुले में रही थीं। आधी रात तक मैं ब्यूक के ही इंजन पर काम कर रहा था। यह बिन बुलाई मेहमान, इसलिए, आयी तो आधी रात के बाद ही आयी।"

"तुमने फ़ोन कर दिया?"

"इन्स्पेक्टर जोगेलकर चल पड़े हैं हुज़ूर।"

"लो भाई गूजर सिंह!"

"मैं शराब पीता हूँ और खूब पीता हूँ मिस्टर के. टी. एम.। लेकिन क़ानून को तोड़ने में मेरी कोई रुचि नहीं और मेरा खयाल है कि यह इलाका बम्बई की हदों के भीतर ही आता है।"

"के. टी. एम. लेकिन, क़ानून की हदों के भीतर नहीं आता है। समझे गूजर सिंह?" के. टी. एम. ने कहा और देखते-देखते दोनों गिलास उसने खाली कर दिये।

www.akfunworld.wordpress.com

दूर से भारी बूटों की आवाज़ आयी और, फिर कानून अपने प्रतिनिधियों के रूप में वहाँ आ उपस्थित हुआ।

के. टी. एम. ने ठीक ही कहा था। करोड़पति के. टी. एम. क़ानून की हदों के भीतर नहीं आता था।

दोनों भद्र पुरुषों ने फ़र्शी सलाम ठोंका।

"मैं इन्स्पेक्टर जोगेलकर हूँ। यहाँ शायद कुछ गड़बड़ी हो गयी है!"

के. टी. एम. ने अँगूठे से ब्यूक की तरफ इशारा कर दिया।

ब्यूक की कई बार प्रदक्षिणा की गयी। कुछ पास और कुछ दूर तक नज़रें दौड़ाई गयीं, आया-जाया गया। निहायत ही अदब से चन्द, सिर्फ चन्द सवाल पूछे गये। आलम साब और जाट से भी निहायत शराफ़त से पेश आया गया।

जोगेलकर के साथ जो महापुरुष थे, उनका परिचय नहीं दिया गया था (यूँ परिचय की कोई आवश्यकता थी भी नहीं) और न ही वह खुद ही अपने जुबाने मुबारक से अब तक कुछ बोले थे। जोगेलकर के ठीक पीछे वह लगातार खड़े रहे। वह कुछ खिसकता, तो वह भी खिसक जाते। वह जिधर देखता, वह भी उधर देखने लगते। उसका हाथ जिस दिशा में घूम जाता, उधर उनका सिर घूमता। इस बीच वह एक काम और करते जा रहे थे। लिखना, लगातार लिखना। जो कुछ पूछा गया, उसे। और जो कुछ बताया गया, उसे।

तफ़्तीश और तहकीकात पूरी हो गयी।

"सहयोग के लिए धन्यवाद सेठ साहब। हम लोग अभी कुछ देर यहाँ रुकेंगे, जब तक कि हमारे फ़ोटोग्राफर और डॉक्टर यहाँ नहीं आ जाते। लाश बहुत जल्दी हटवा दी जाएगी। श्री गूजरसिंह जी, आपसे तो मुलाकात सेसिल में हो सकेगी?"

के. टी. एम. ने जल्दी से कहा, "नहीं नहीं। गूजरसिंह जी यहीं ठहर रहे हैं। यहीं मिलेंगे।"

जाट कुछ परेशान हुआ। बोला, "कहीं भी मिल लीजिएगा। एक ही बात है।"

"अच्छा! अब आप लोगों को और ज्यादा तकलीफ़ नहीं दी जायेगी।"

जाट ने मन-ही-मन अपना माथा पीटा।

●

महाशय के. टी. एम. लगातार चहल क़दमी करते जा रहे थे। उन्होंने नया सिगार सुलगा लिया था और, एक जाट को भी थमा दिया था, जिसे वह बड़ी बेवकूफ़ी से पी रहा था और बार-बार खाँस रहा था। उसकी नज़रें कमरे में नाच रही थीं, जिसमें बड़ी-बड़ी आल्मारियाँ सजी हुई थीं और, उनमें मोटी-मोटी किताबें पड़ी किस्मत को रो रही थीं। दुनियाँ के हर विषय पर वहाँ पुस्तकें थीं और ज़ाहिर है कि एक ही आदमी उतने विषयों में रुचि नहीं रख सकता था। घर में लाइब्रेरी अध्ययन के लिए नहीं, इसलिए थी कि फैशन की माँग यही थी।

"हूँ! तो तुम पानीपत से आ रहे हो? पहले भी कभी बम्बई आये हो?"

"दो साल पहले आया था। एक फ़िल्म कम्पनी मुझे महाराणा प्रताप का रोल करने के लिए बुला लायी थी।"

"फिर?"

"फिर मेरा कम्पनी वालों से झगड़ा हो गया और मैंने स्टूडियो को ही हल्दी-घाटी का मैदान बना दिया।"

"फिर?"

"फिर मैं वापस पानीपत जा खेती करने लगा।"

फिर कुछ देर खामोशी रही।

"तुम नूरजहाँ का पता लगाना चाहते हो। मैं भी उसका पता

www.akfunworld.wordpress.com

लगाना चाहता हूँ। मैं राका शीराज़ी के हत्यारे का भी पता लगाना चाहता हूँ। इन रहस्यों का भेद एक ही आदमी के पास है और वह है एल. एल. राय। पुलिस उसे भी परेशान नहीं करेगी, जिस तरह वह मुझे नहीं करती। उसके इर्द-गिर्द क्या रहस्य हैं, इनका पता, मेरे दोस्त, तुम लगा सकते हो। मैं तुम्हें भरपूर मेहनताना दूँगा।"

"मेहनताना का..."

"और तुम्हें रहना भी यहीं मेरे साथ होगा।"

इस प्रश्न पर जाट ने सोचा तो इसे लाभदायक ही पाया। रहस्य, इस आधे पागल आदमी के सीने में भी दफ़्न हैं और उन्हें जानना ही है। हो सकता है, नूरजहाँ और राका के बीच कोई तारतम्य हो। दोनों को यह नीम पागल जानता रहा है। जाट ने स्वीकारात्मक उत्तर दे दिया।

"गुड! मेरी बात तुम मान लेते हो तो मुझे बड़ी खुशी होती है। आलम साब तुम्हारा सामान ले आएगा। तुम एम. बी. का चलाना भी सीख लो अभी!"

"होटल मेरा एक बार जाना ज़रूरी है। मैंने रेस कारों को बखूबी चलाया है। एम. बी. भी मेरे इशारे पर रहेगी, आप फ़िक्र न करें।"

"रात, डिनर पर मुलाकात होगी।"

एम. बी. अनुमान से कहीं अधिक तेज़ और फ़ुर्तीली निकली। ह्वील पर ज़रा हाथ घूमता नहीं कि वह नागिन की तरह सर्र से बल खा जाती। सड़क पर कहीं कोई मुकाबला उसका नहीं था। कोई उसके आगे निकल ही नहीं सकता था। जाट को देखते-देखते एम. बी. से मुहब्बत सी हो गयी।

बम्बई के लोग अजीब ही नज़ारा देख रहे थे। बदसूरत सी, बेहद लम्बी लाल रंग की उस खुली गाड़ी को, जिसके पहिए बेहद उठे हुए थे, एक निपट गँवार सा आदमी भगाता लिए जा रहा था।

खान ने लम्बा सैल्यूट मारा। जाट होटल के भीतर आया।

"वेल मैनेजर।"

"हुज़ूर।"

"हम अभी ही यहाँ से जा रहे हैं। बिल भेजो।"

"बहुत बेहतर। आपके पीछे यह लेटर आपके नाम आया है।"

जाट ने लिफ़ाफ़ा फाड़ा। एक चिट्ठी थी—

> **प्यारे हमवतन,**
>
> **आज रात अपने चुने हुए दोस्तों को मैं दावत दे रहा हूँ। अपनी और अपनी पत्नी की ओर से आपको बाइज्जत दावतनामा भेज रहा हूँ। तशरीफ़ लाने की जहमत जरूर ही गवारा फरमाएंगे।—यल. यल. राय।**

जाट अपने सूट में गया और, अपना सामान उसने पैक कर लिया। और फिर दरवाजे पर दस्तक हुई।

वह एक लड़की थी। उम्र की पकान अभी उसके चेहरे पर नहीं थी। उसके चेहरे पर कुछ और ही था। खूबसूरती!

जाटराम आँखें फाड़े देखने लगे। उन्होंने इस रहस्य का पता पा लिया कि अगर उस लड़की के चेहरे पर शहद था, तो उसके जिस्म में शराब थी।

शहद और शराब ने दुबारा आदाब अर्ज़ किया।

"हे हो भवानी! को हो तुम?"

लड़की आगे बढ़ी। जाटराम पीछे हटे।

"कनीज़ को राबिया के नाम से जाना जाता है। आज रात एक दावत में आपको शिरकत फ़रमानी है और, मैं आपको ले जाने के लिए आयी हूँ। और मुझे सख्त हिदायत है कि आप से 'न' किसी भी सूरत में न सुनूँ।" शहद और शराब हवा में तैरा।

"पर यह तो सुनो कि आज की ही रात मुझे एक अज़ीज़ की मिट्टी

www.akfunworld.wordpress.com

में जाना है। उसे कन्धा देना है। वह बेचारा कफ़न ओढ़े मेरा इन्तज़ार कर रहा होगा।"

"और वहाँ पर कितने ही लोग आपको कन्धों पर, सर-आँखों पर लेने के लिए बेताब होते रहेंगे। इसका खयाल नहीं ज़रा आपको?"

"खयाल तो बहुत है राबिया बेगम, पर कफ़न वाले का खयाल ज्यादा रखना पड़ेगा।"

इसके बाद एक दम बिजली सी कौंध गयी। राबिया बेगम एक दम जाटराम के सीने से एकदम यूँ आ टकरायी, जैसे उन्होंने कहीं साँप को देख लिया हो और जाट राम एक दम दीवार से जा टकराए।

इसके बाद जाट के दोनों हाथ ऊपर यूँ उठे हुए थे, जैसे किसी ने पिस्टल की नली पर उन्हें हैन्ड्स् अप का आदेश दे रखा हो और राबिया बेगम उनके सीने के बालों में अँगुलियों से खिलवाड़ करते हुए पूछ रही थीं, "तो दावत नामा के क़बूल फ़रमा रहे हैं न?"

"बिलकुल कबूल फरमा रहा हूँ।"

भट और संकेत

एल. एल. राय का छोटा बँगला था और, शानदार बँगला था। हर तरफ जिसके बोल पक्के राग की तरह उठ रहे थे, फैल रहे थे, वह था धन।

उस हाल नुमा कमरे में कितने ही लोग थे और, सब घूम-घूम कर यूँ बातें कर रहे थे, गोया किसी गार्डेन पार्टी में हों। म्यूज़िक के रिकार्ड चढ़े हुए थे और नशीली धुनें मीठी खुमारी की तरह फैल रही थीं। पूरे दरवाजे को घेरते हुए दैत्य आ खड़ा हुआ और, लाठी तीन बार ठोंकी गयी।

चलते हुए व्यापार ने इधर एक बार देखा, सहमा, ठिठका और फिर रुक गया। एक औरत चीख पड़ी। (उसने बाद में बताया कि वह यही समझी थी कि डाकुओं ने घेरा डाल दिया है।)

राय बड़े तपाक से लपकता हुआ आया, 'मेरे दोस्त, मेरे अज़ीज़।' जैसे शब्दों की चाशनी घोलते हुए वह एक दम जाट से लिपट गया।

"मैं जानता था तुम आओगे। मैंने पयाम भेजा ही था बहुत कायदे के आदमी के हाथों। है न?"

साथ आ खड़ी राबिया मुस्करा पड़ी। उसके खूबसूरत दाँत खिल-खिला गए। जाट को अब याद आया, उस खूबसूरत लपट को उसने कहाँ देखा था। उस टुथ पेस्ट के विज्ञापन में जो एक कहानी सुनाता था कि एक राजकुमारी को शादी के बाद उसके पति ने उसके बदसूरत दाँतों की वजह से नहीं चाहा, लेकिन जब से वह उस टुथपेस्ट का इस्तेमाल करने लगी, वह उस पर जान छिड़कने लगा।

"क़यामत के हाथों जब पयाम भेजोगे, तो न आने का सवाल ही नहीं उठता।"

"मेरे दोस्त। मेरे अज़ीज़। न जाने क्यों तुमसे उन्सियत इतनी बढ़ती जा रही है। मैंने कभी अपने दिल को इस क़दर किसी की ओर [illegible] न पाया। दोस्तों, आज मैं आपका परिचय एक मशहूर और [illegible] हस्ती से कराता हूँ। श्री गूजरसिंह किलेदार। पानीपत के खान-दानी रईस। आपने दुनिया को एक करिश्मा दिया है..."

एक साहब यूँ छूट कर पास आ गिरे, जैसे स्प्रिंग लगा कर उन्हें [illegible] गया हो।

"आपका शुभ नाम?" हाथ में नोट बुक और पेन्सिल ले कर पूछा गया।

www.akfunworld.wordpress.com

"गूजरसिंह किलेदार !"

"जन्म स्थान ?"

"पानीपत !"

"यह पाँचों पैदावारें आपने एक ही खेत में की ?"

"जनाब ।"

"भारत सरकार को आपने इसकी सूचना दी ?"

"देने वाला हूँ ।"

"कृषि विभाग से अपने इन प्रयोगों के लिए आपको कुछ अनुदान मिला था ?"

"दस लाख रुपए । पाँच लाख घूस देने-दिवाने में खर्च हो गये, पाँच लाख हाथ में आये ।"

"उनका आपने क्या किया ?"

"उस रकम को मैंने बीस प्रतिशत ब्याज पर उठा दिया ।"

"फिर ?"

"फिर सरकार को लिख दिया कि सारा अनुदान प्रयोगों में खर्च हो गया है, नये की व्यवस्था की जाए ।"

"फिर ?"

"मुझे आश्वासन मिला है कि अगले साल के बजट में दस लाख का प्राँविज़न मेरे लिए और किया जायेगा ।"

"गुड । आपका यह इन्टरव्यू उन विरोधी दलों के लिये मुँह तोड़ जवाब साबित होगा, जो आए दिन चिल्लाते हैं कि सरकार कृषि के क्षेत्र में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं कर रही है । धन्यवाद !"

नोट बुक जेब में रख, रिपोर्टर इज्ज़त में कुछ झुकता हुआ पीछे हट गया ।

"आगे आओ मेरे अज़ीज़ दोस्त । तुम्हारा परिचय पाने के लि[illegible]

मेरे यह मुअज़्ज़िज़ मेहमान बहुत बेताब हैं । आपसे मिलो । आप हैं श्री सोहराब जी दोराब जी । फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर ।"

एक तरफ सिर यूँ हिलाया गया...ठीक है, ठीक है । दूसरी तरफ मूँछों को हवाई दी गयी ।

"आप श्री रणछोड़ दास, जगछोड़ दास देसाई ।" (कान में आपके दो घोड़े रेस में दौड़ते हैं और दोनों ने कितनों को लखपति बना दिया है ।)

जाट ने बात पूरी की, "और कितनों को फ़क़ीर भी ।"

"आप श्री नैनसुख लाल मनसुख लाल झब्बाली । बाज़ार में, आज भी इम्पोर्ट रिस्ट्रिक्शन के बावजूद, घड़ियाँ जो इतनी इफ़रात से मिल रही हैं, उसके लिए यह आप सब के धन्यवाद के पात्र हैं ।"

भृकुटि कुछ और खिंच गयी । हटाओ इस बेहूदे नक्शे को सामने से ।

"अब इस नौजवान से मिलो । रूपकिशोर । सिल्वर-स्क्रीन पर [illegible] से उभरने वाला नया सितारा । लेटेस्ट फ़िल्म है..."

नया सितारा बोला, "आप मुझसे कल मेरे फ़्लैट पर मिलिए । मैं आपको स्टडी करना चाहता हूँ । ऐसा ही एक रोल मेरा अगली फ़िल्म में है ।"

लाठी की ठकठक और जवाब, "पानीपत के स्टेशन पर उतरिएगा और किसी से भी गूजरसिंह किलेदार का पता पूछ लीजिएगा । वहाँ [illegible] खूब अच्छी तरह कर सकेंगे आप ।"

"श्री पी० पी० पाराशर..."

"श्री एम. कास्मेटिक वाला । हिन्दोस्तान भर की सभ्य स्त्रियाँ आपके [illegible] और पाउडर-क्रीम से अपने रूप को चार चाँद लगाती हैं । आप [illegible] के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं कॉस्मेटिक वाला जी ! शिकायत है ।"

www.akfunworld.wordpress.com

हो-हो करके चारों ओर से उठने वाली हँसी। भोंडे मज़ाक को शक्ल दी गयी कि वाह क्या बात है!

"मेरे अज़ीज़ ओ मारूफ़ दोस्त। अब आओ, मेरे प्रेशश ट्रेज़र को देखो। निगाह इस तरफ़। हुस्न की इस मालामाल दौलत को देखो। यह मेरा खजाना है। दुनियाँ इन्हें एक ही नाम से जानती हैं। 'राय गर्ल्स'! तरह-तरह के सोप्स्, कॉस्मेटिक्स, कास्ट्यूम्स्, टुथपेस्ट की सेल को पूरे कन्ट्री में पुश अप करने के पीछे इनका बहुत बड़ा हाथ रहता है। साड़ियों की स्टाइल इनसे सीखो, स्कर्ट के अन्दाज़ यह बताएँगी, जूड़ों की डिज़ाइन इधर ही पनपते हैं, मुख्तलिफ एअर ऐजेन्सीज़ के गुण इनके मुँह से सुनो, शूज़ और सैन्डिल्स् की स्टाइल के लिए इनके पैरों पर झुको। नेशनल और इन्टर नेशनल टॉप मोस्ट मैगेज़ीन्स् में लाखों इनको देखते हैं, सिल्वर स्क्रीन पर फिल्म शार्ट्स् में करोड़ों इनके हुस्न को सराहते हैं।"

'राय गर्ल्स्' के होठों पर बड़ी ही मँजी और बड़ी मोहक मुस्कानें तैर रही थीं।

"आओ। मिलो इनसे। कुमारी रेणुका मुखर्जी!"

होठों के कोनों पर बड़ी ही महीन वक्रता। आँखों में कहीं बहुत दूर उदासी।

"कुमारी सुनीत आबर्ज्या!"

सघन बरौनियों में शिष्ट अभिवादन। आँखो में कहीं बहुत दूर पर तटस्थता।

"कुमारी अलका मीरचन्दानी!"

माथे पर दो पतली रेखाएँ। आँखों में बहुत दूर एक आक्रोश रोष।

"कुमारी रोज़ विन्सेन्ट!"

गालों में हलके-मासूम गड्ढे। आँखों में एक ही कमरे के बाद बैठी हुई दशहत।

"कुमारी रेखा नारंग!"

मौन हँसी में खिंचते फैलते होंठ। आँखों में स्पष्ट ही दीख रही विक्षिप्तता।

"कुमारी..."

"कुमारी..."

"कुमारी..."

"कुमारी..."

"आओ अब मेरी पत्नी से मिलो। सोमा! मेरी सोमा!"

सोमा राय ने सिर हिला अभिवादन किया। वह कुछ प्रौढ़ा थीं। अधिकार भावना चपड़ों की तरह उनके इर्द-गिर्द थी। उनमें खूबसूरती थी...अपनी एक निज़ी खूबसूरती।

"राय...राय साहब।" किसी ने पुकारा।

"मुआफ करना, अभी आया।" कह राय उस ओर बढ़ गया।

सोमा राय होठों में बोलीं, "कमीना...कमीना...कमीना..."

पी. पी. पाराशर पास ही मँडरा रहा था। पास आ बोला, "आपका मतलब श्रीमती जी, मेरे प्यारे दोस्त यानी अपने प्यारे पति से है क्या?"

जाट ने पाराशर को ध्यान से देखा। वह नशे में था, काफ़ी नशे में। और जिस तरह से वह सोमा राय को और सोमा राय उसे देख रही थीं, उसमें झलक केवल शिष्टाचार का ही नहीं था और न ही वह मात्र परिचय का ही परिचायक था।

जाट ने मन ही मन उस आदमी को ना पसन्द किया।

बैरे अब ड्रिंक सर्व कर रहे थे।

"इधर आओ मेरे अज़ीज़ दोस्त।"

www.akfunworld.wordpress.com

राय की पुकार पर जाट उसकी ओर उठा।

राय ने टहलते हुए धीरे धीरे उससे कहा, "पाराशर से कुछ बातें हुईं ?"

"नहीं ! मैं उससे बोलना भी नहीं चाहूँगा।"

राय हँसा। बोला, "नाराज़ हो गए उससे, बिना बोले ही। मैं भी उसे ना पसन्द करता हूँ और अक्सर मैंने उसे मार तक डालने का विचार किया है। फिर भी मैं शान्त प्रकृति का ही आदमी हूँ और हर बार चुप लगा गया हूँ।"

"पाराशर भी क्या मॉडल की शक्ल में आता है ?"

राय फिर हँसा, "तुम अभी मॉडलिंग के बारे में कुछ नहीं जानते। आओ, इस भीड़भाड़ से अलग दूसरे कमरे में चलें। तुमसे कुछ बातें करूँगा।"

जाट को भी उससे बात करनी थी। नूरजहाँ के बारे में।

●

दूर से मिली खुली खिलखिलाहटें आ रही थीं। बैन्ड की ध्वनियों में गिलासों की खनखनाहट मिल रही थीं।

राय ने सिगरेट सुलगा लिया। वह एक खूबसूरत कमरा था और दोनों अब आराम से बैठे थे।

"मॉडलिंग के लिए जिस्मानी खूबसूरती बहुत ज़रूरी है। ज़रूरी तो है से मेरा मतलब है, यही एक मापदण्ड नहीं । इस लाइन में सबसे मुख्य बात और सबसे महत्वपूर्ण बात होती है, इसमें आ कर इसमें टिके रहना, जड़ों को मज़बूत रखना। मॉडल बहुत जल्दी उखड़ जाता है अक्सर। इसके लिए ज़रूरी होती है पब्लिसिटी। लगातार चलने वाली पब्लिसिटी, जो मॉडल को करेन्ट टॉपिक बनाए रखे, जो उसे नज़रों में खुबोए रखे। इसके लिए मॉडल का बहुत सक्रिय रहना ज़रूरी है। हाई सोसाइटी में, बड़े-बड़े लोगों के बीच वह उठती-बैठती रहे, उनके साथ

फोटो खिंचाती रहे। उसका ज़िक्र चलता रहना चाहिए, चाहे वह तारीफ़ में हो और चाहे स्कैन्डल की शक्ल में। स्कैन्डल इस लाइन में बुरा नहीं माना जाता। मॉडल का वह बहुत ही मददगार साबित होता है।"

"नूरजहाँ...मेरा..."

"इसीलिए हमें उन लोगों का भी स्वागत करना पड़ता है, जिन्हें हम यूँ बरदाश्त भी नहीं कर सकते। पाराशर और मैं यूँ दुश्मन हैं, पर यूँ बड़े अच्छे दोस्त भी हैं। वह हाई सोसाइटी का एक मज़बूत खम्भा है और इसलिए मेरे बड़े काम का है। मैं भी उसके बड़े काम का हूँ। उसे खूबसूरत औरतें चाहिए और उसे दूसरी जगह जिस्म मिल सकता है, पर खूबसूरती मेरे ही यहाँ मिलती है।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब क्या ? बात साफ़ है।"

"तो..."

"हाँ मेरे अज़ीज़। पाने के लिए बहुत कुछ देना भी पड़ता है। एक मॉडल जो आज काफी माँग में है, पैसे से भरपूर एक आरामदेह ज़िन्दगी की गारन्टी जिसे दी जा चुकी है, जो विज्ञापनों के फ़िल्म मार्केट में आ रही है, कल जो इसी रास्ते पर बढ़ते हुए हीरोइन बन सकती है, उसे इन सबके एवज़ में कुछ देना भी तो पड़ेगा। हाई सोसाइटी के यह खम्भे यूँ ही तो अपनी शख्सियत का इस्तेमाल नहीं होने देंगे। और फिर इसके लिए यह पे करते हैं, बहुत ही खूबसूरत और माकूल रकम को अपने हाथ से खिसक जाने देते हैं।"

"इसमें आपका परसेन्टेज कितना होता है ?"

सिगरेट का गहरा कश और जवाब, "फ़कत बीस परसेन्ट।"

"तो पाराशर को आप इसलिए बरदाश्त करते हैं ?"

"तुम अब समझ गए।"

www.akfunworld.wordpress.com

www.akfunworld.wordpress.com

"और के. टी. एम. को भी आपने इसीलिए बरदाश्त किया होगा ?"

"हूँ...?...हाँ...। तुम के. टी. एम. को कैसे जानते हो ?"

"पहले यह बताइए, आप नूरजहाँ के बारे में क्या जानते हैं ?"

"तुम नूरजहाँ को जानते हो ?"

"मैं उसकी तलाश में ही यहाँ आया हूँ। उसे गायब कर दिया गया है।"

"मैं जानता हूँ।"

जाट खामोश रहा और राय की ओर देखता रहा।

"मैं खुद उसका पता लगाना चाहता हूँ, कि वह कहाँ चली गयी," राय ने क्षण भर बाद कहा।

"तुम्हारे और उसके सम्पर्क, अथवा सम्बन्ध के बारे में मैं जानना चाहूँगा।"

"मैं तुम्हें बताता हूँ। वह बम्बई क्यों आई थी, इसका वास्तवि[क] कारण शायद उसके वालिद भी नहीं जानते," राय बोला।

"क्या ?" जाट चौंका।

"वह यहाँ आयी थी, फ़िल्म लाइन में दाखिला लेने के लिए। व[ह] एक हीरोइन की शक्ल में अपने आप को परदे पर देखना चाहती थी। इस कैरियर के लिए अक्सर उस दौर से गुजरना पड़ता है, जिसके [सूत्र] मेरे हाथों में हैं। वह मॉडलिंग के लिए तैयार हो गयी और फिर [मेरे] पास आयी।"

"हूँ।"

"मैंने उसके साथ काफी हमदर्दी बरती। यूँ मैं जल्दी किसी [को] ब्रेक नहीं दिया करता। उसकी मैंने पब्लिसिटी शुरू की, उसे [हाई] सोसाइटी में इन्ट्रोड्यूस कराया..."

"के. टी. एम. से उसका परिचय शायद आपही के माध्यम से हुआ।"

"हूँ...? हूँ...! फिर मैंने उसे कुण्डली बोरकर के यहाँ भेजा..."

"वह सज्जन कौन हैं ?" जाट ने पूछा।

"कुण्डली भी मॉडेल एजेन्सी रन करता है। हम सबको परस्पर सहयोग बरतना होता है। कुण्डली में एक गुण है। आला दरजे का वह फ़ोटोग्राफर है। इस फ़न में उसका जवाब मुश्किल से मिलेगा। मॉडेल की फ़ोटो उसके हाथों यूँ निखर आती है कि आँखें न हटें। कुण्डली ने नूरजहाँ के कुछ शाट्स् लिए। एक दिन वह आयी तो बहुत खुश थी। कुण्डली उसके फ़ोटोग्रैफ्स् सरकुलेट कर रहा था। प्रोड्यूसरों के पास भी वह भेजे गये थे। नूरजहाँ कितनी ही आशाओं से सिहर-सिहर जा रही थी। उस दिन मैंने आखिरी बार नूरजहाँ को देखा।"

"हूँ !"

"मुझे याद नहीं, कितने दिन पहले की यह बात है। तीन हफ्ते पहले कुण्डली मुझसे मिला। नूरजहाँ को बहुत बेसब्री से पूछ रहा था। उसकी कोई सख्त ज़रूरत उसे आ पड़ी थी। उस समय उसके लिए वह किसी भी रकम को खर्च करने के लिए तैयार था। नूरजहाँ को ढूंढ़ा गया लेकिन, उसका कहीं पता नहीं चला। होटल उसने छोड़ दिया था।"

"हूँ !"

"कुण्डली उसके बाद भी उसकी पूछ-ताछ करता रहा है, पर नूरजहाँ की तलाश नहीं हो सकी।"

Bijay's Scan

"हूँ !"

लम्बी खामोशी।

"राका शीराजी के बारे में तुम क्या जानते हो ?" जाट ने पूछा।

"राका ? क्यों ? राका भी 'राय गर्ल' है और इस समय उसका

www.akfunworld.wordpress.com

बिज़नेस बहुत अच्छा जा रहा है। उसकी बहुत माँग है। मेरी एजेन्सी को उस पर गर्व है।"

"उसे तुमने आखिरी बार कब देखा था ?"

"क्यों ?...कल ही तो। कल रात वह पाराशर के साथ थी। दोनों को मैंने 'रोरपा' में डिनर लेते देखा था। राका के बारे में तुम्हारी दिलचस्पी क्यों ? उससे मिलना चाहते हो ? अगर ऐसा है, तो मेरे अज़ीज़, मैं इसका इन्तज़ाम करूँगा।"

"अब तुम ऐसा इन्तज़ाम न कर पाओगे। इसलिए, कि वह अब इस दुनियाँ को छोड़ चुकी है।"

राय के हाथ से सिगरेट छूट गया। वह कितनी ही देर तक होठों को दबाए जाट को देखता रहा। अगर वह अभिनय कर रहा था, तो बहुत ही सफल अभिनय कर रहा था।

जाट ने उसे पूरी कहानी सुनायी। आद्योपान्त।

"हत्या आधी रात के बाद हुई है। आलम साब आधी रात तक उन गाड़ियों की सफाई करता रहा था। हत्या किसी ऐसे व्यक्ति ने की है जिसे राका अच्छी तरह जानती थी और जिसके साथ वह मरने से कुछ देर पहले तक शराब पीती रही थी।"

फिर लम्बी खामोशी।

"मैं अभी आता हूँ...गूजरसिंह।"

जिस तरह से, जिस चाल से राय कमरे से बाहर निकला, उससे यही ज़ाहिर होता था कि उसने बेतरह पी रखी है।

जाट भी बाहर निकला। क़हक़हे अब कुछ हलके पड़ रहे थे। आगे बढ़ा। सामने से दो छाया मूर्तियाँ आ रही थीं। जाट ने पहचाना। एक पाराशर था और साथ में रेवा नारंग थी।

दोनों गहरे नशे में थे।

रेवा ने हाथ आगे बढ़ाए, "ओ...ओ...माई डियर गूजरसिंह...

मेरे पास...आओ। मैं...मैं...तुमसे बात करना...बात करना...चाहती...हूँ...। तुम...मुझे बहोऽऽत अच्छे लगे। डार्लिङ्ग...डार्लिङ्ग पी. पी...."

पाराशर की ओर उसने हाथ का खाली गिलास बढ़ाया। मन मारे पाराशर गिलास ले उसे फिर से भरने के लिए हाल की ओर मुड़ा।

रेवा नारंग गूजरसिंह के पास आ गयी।

"तुम...नूरजहाँ के लिए यहाँ...आये हो। नूरजहाँ बड़ी अच्छी लड़की है और इस समय वह बड़ी...मुसीबत में है। उसकी मदद करो।"

जाट ने उत्तेजना में रेवा नारंग के कन्धे पकड़ लिए।

"तुम नूरजहाँ को जानती हो ? कहाँ है वह ?"

"मैं इस समय तुमसे...तुमसे ज्यादा बात...नहीं करूँगी...नहीं कर सकती। नूरजहाँ कहाँ है, मुझे नहीं मालूम। तुम कासिम मुल्तानी नाम के आदमी का पता करो। उसकी मारफ़त...तुम नूरजहाँ तक पहुँचोगे..."

"मैं तुमसे कहाँ मिल सकता हूँ ?"

"के. टी. एम....उसके यहाँ..."

इधर कुछ अँधेरा था। दूर हाल में राय भरा हुआ गिलास पाराशर को दे रहा था। अँधेरे ही में एक और आकृति आ प्रकट हुई। वह [illegible] थी।

"हाय मेरी जान रेवा ! तुमने इतनी जल्दी इस आदमी पर डोरे डाल दिए, जिसके लिए मैं पलकें बिछाए बैठी हूँ। बॉस ने मुझे नज़राना दिया है, नज़राने के तौर पर इस आदमी को मेरे हवाले किया है। अभी नहीं...मेरी जान...एक महीने के बाद उम्मीद करना।"

"तुम्हीं को मुबारक...मुबारक यह जाहिल-जट्ट गँवार।" रेवा चली गयी।

www.akfunworld.wordpress.com

"हाँ तो राबिया बेगम ! अब क्या प्रोग्राम है ? टैक्सी जुहू के लिए बुलवाऊँ या..."

"हाय जाने मन ! रेवा ठीक ही कहती थी। गँवार हो तुम ! चाहते हो इस भरी पार्टी में सबकी नज़रें हमारी ओर उठ जाएँ। फिर मिलूँगी तुमसे...जल्दी ही। अच्छा...टा...टा..."

जाट के दिमाग में कितने ही सवाल घुमड़ रहे थे। पार्टी के ज़ोर का अब दूसरा दौर शुरू हो रहा था। नशा उठान पर था और बैन्ड, रॉक ऐण्ड रोल की आग लगाती गत बजा रहा था। किसी से कोई बात होने की अब सम्भावना नहीं थी।

जाट ने मेज़बानों से छुट्टी ली और बाहर निकला।

नूरजहाँ मुसीबत में है...यह कासिम मुल्तानी कौन है ? कुण्डली बोरकर कौन है ? अभी के. टी. एम. ने भी अपने सारे भेदों को नहीं खोला है। राका की लाश के नीचे उसे तलाश किस चीज़ की थी ! (यह बात वह राय से छिपा गया था।) फिर उसका नौकर आलम साब ! जिस तरह उसने के. टी. एम. को झिंझोड़ा था, उससे यही ज़ाहिर था कि वह नौकर के अलावा भी कुछ है। यह पाराशर कौन है ? इस बदसूरत ड्रामे में उसका क्या रोल है ? वह भूल गया। उसे पूछना चाहिए था कि क्या नूरजहाँ की मुलाकात पाराशर से भी करायी गयी थी ?

जाट बँगले के बाहर निकला।

सामने सड़क पर से एक खुली कार गुज़र गयी। उसमें दो आदमी थे।

एक को जब जाट ने पहचाना तो उसे अचरज हुआ। वह के. टी. एम. था।

और जब दूसरे को जाट ने देखा, तो उसका उठा हुआ कदम भी हवा में ही रुक गया।

जाट ने अपने सिर को कई झटके दिए। इस शक्ल को कहीं देखा है...कहीं देखा है...कहीं देखा है। लेकिन कहाँ...कहाँ ? दिमाग़ का हाल उस भारी-लदी-लम्बी मालगाड़ी के इंजन-सा था, जो कराह कर दहाड़ता है, पर उसके पहिये अपनी ही जगह नाच-घूम कर रह जाते हैं।

बिलकुल बगल में एक टैक्सी आ रुकी। राबिया ने सिर बाहर निकाला।

"आओ तुम्हें होटल तक छोड़ आऊँ।"

"ओह ! तो प्रोग्राम तुमने इतनी जल्दी बना लिया ?"

"क्या बकते हो !"

टैक्सी की धुँधली रोशनी में जाट ने देखा, राबिया के चेहरे पर विषाद था।

"सॉरी !" वह टैक्सी में आ गया, "राय ने तुम्हें भेजा है मुझे पहुँचाने के लिए।"

"नहीं। मैं अपनी खुशी से आयी हूँ। राय की नौकरी का वक्त ख़त्म हो गया है और अब अपने वक्त की मैं खुद मालिक हूँ। आराम से बैठो। सेसिल होटल ड्राइवर।"

जाट अचरज में था। उसने अपनी बगल में एक दूसरी ही औरत को महसूस किया, जिसकी बोलचाल में, लहज़े में, कदमों में एक शराफ़त थी। भद्दे मज़ाक जिससे नहीं किये जा सकते थे। जिसके साथ शराफ़त से ही पेश आने के लिए हर कोई मजबूर होता।

"पार्टी में तुमने ड्रिंक नहीं किया ?"

www.akfunworld.wordpress.com

"मैं ड्रिंक नहीं करती। इसे बचा जाने की ही कोशिश करती हूँ। बहुत मजबूरी आ जाए तो बात दूसरी है।"

जाट खामोश था।

"क्या सोच रहे हो?"

"सोच रहा हूँ कि जो वक्त तुम्हारा अपना है, उसमें तुम एक दूसरी ही मिस राबिया हो।"

"मिस राबिया पीछे उसी पार्टी में छूट गयी है मेरे दोस्त! मैं अब राबिया जहाँ बेगम हूँ।"

जाट ने उसकी ओर देखा, फिर कहा, "अपनी गुस्ताखियों के लिए मुआफी चाहता हूँ।"

राबिया के होंठ कुछ थरथराए, पलकें काँपी, फिर वह खामोश बैठी रही।

फिर लम्बी खामोशी।

"क्या सोच रहे हो?"

"सोच उस कहानी के बारे में रहा हूँ, जो बहुत पुरानी है, बहुत जानी-पहचानी है, कितनी ही दफ़ा कितनों पर घट चुकी है और कोई ज़रूरी नहीं है कि राबिया जहाँ बेगम को जानने के लिए उसे एक बार फिर सुना जाए।"

फिर लम्बी ख़ामोशी।

"क्या सोच रहे हो?"

"सोच रहा हूँ कि खुशियाँ इन्सानों को उतना करीब नहीं लातीं, जितना कि ग़म।"

फिर लम्बी ख़ामोशी।

"क्या सोच रहे हो?"

"सोच राबिया जहाँ बेगम के बारे में रहा हूँ।"

राबिया हँस पड़ी।

टैक्सी, सेसिल पर आ रुकी।

दोनों उतरे तो उनके हाथ एक दूसरे के हाथों में थे।

कमरे में पहुँचते ही वह जाट अनायास ही ठठा कर हँस पड़ा!

"क्या हो गया है तुम्हें?"

"मुझे? दो साल पहले मैंने एक आदमी का चेहरा एक मिनट के लिए देखा था। आज उसी आदमी को मैंने फिर देखा और, ठीक इसी समय मुझे याद आया कि हाँ, इस आदमी को मैंने कहाँ देखा था।"

राबिया चुपचाप सुनती रही।

"दो साल पहले वह पानीपत के नवाब मिर्ज़ा, नूरजहाँ बेगम के वालिद, का खास नौकर था। नाम मुश्ताक। नवाब साहब के एक काम के सिलसिले में मुझसे मिला था। और उसी मुश्ताक को अब के. टी. ए. के साथ एक ही गाड़ी में देखा जा रहा है," जाट बोला, "छोड़ो इसे। हम सब अपने-अपने चक्करों में पड़े हुए हैं राबिया। दो मिनट का वक्त निकाल कर किसी से घरेलू बातें भी कर सकें, यह हमारे नसीब में नहीं है। यूँ...तुम्हारा घर कहाँ है? मेरा मतलब, तुम्हारी पैदाइश कहाँ हुई?"

"मैं हैदराबाद की रहने वाली हूँ।"

"यहाँ किसके साथ रहती हो?"

"हम तीन लड़कियाँ हैं। मिल कर एक फ्लैट को शेयर करती हैं। तुम्हें अपने यहाँ ले चलूँगी कभी। आओगे? मैं चाय बनाऊँगी और हम दोनों चाय सिप करते हुए खिड़की से डूबते सूरज को देखेंगे।"

"यहाँ बम्बई में भी ऐसे नज़ारे मिल जाते हैं?"

"वह बिल्डिंग समुद्र के किनारे है और मेरी खिड़की समुद्र की तरफ खुलती है। दूर सागर में जब सूरज धीरे-धीरे डूबता है, तो मैं पागल सी हो उठती हूँ। कितने शोर मेरे भीतर मचलने लगते हैं! मैं उस मंज़र को रोज़ देखना चाहती हूँ, उसे पी जाना चाहती हूँ। फिर भी, महीने-

www.akfunworld.wordpress.com

दो-महीने में कभी एकाध बार ही मुझे मौका मिल पाता है कि शाम को अपनी खिड़की के पास बैठ सकूँ।"

"राबिया !"

"हूँ।"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो।"

"चलो घूमने चलें। आधी रात होने को है। वीरान सड़कों पर हम लोग घूमें।"

राबिया हलके से हँसी, "इन सड़कों पर कितने ही होटल हैं, रेस्तराँ हैं, शॉपिंग सेन्टर हैं। यह सड़कें कभी नहीं सोतीं और जिस वीरानगी की हमें तलाश है, वह वहाँ हमें कहीं नहीं मिलेगी।"

"अब तुम यहाँ से जा कर क्या करोगी ?"

"मैं ? यहाँ से जाऊँगी...चुपचाप अपना कमरा खोलूँगी। बाकी दोनों लड़कियाँ या तो अभी आयी नहीं होंगी और, अगर आयी होंगी तो इस समय तक सो चुकी होंगी। उनके सीनों पर खुली हुई अमेरिकन मैगेज़ीनें पड़ी होंगी। लाइट ऑफ़ कर मैं बिस्तरे पर पड़ जाऊँगी। नींद का जुगाड़ बड़ी देर में हो पाता है। पता नहीं, क्या-क्या बे सिर-पैर की बातें सोचूँगी। कोई शेर गुनगुनाऊँगी। आँख की कोर में अनजाने ही में आ बसी आँसू की बूँद खुद मुझे हैरत में डाल देगी और फिर कब आँख लग गयी, इसका मुझे पता नहीं होगा।"

"राबिया !"

वह खामोश ही रही।

और थोड़ी देर बाद जाट अपना सामान ठीक करने लगा, के. टी. एस. के यहाँ शिफ्ट करने के लिये।

सामान ही कितना था ! ठीक कर वह सोफे पर यूँ ही खाली बैठ गया और बैठा रहा।

"क्या सोच रहे हो ?" अब राबिया ने पूछा।

जाट सोच रहा था कि स्त्री केवल दो ही उपलब्धियों को चाहती है। वह पत्नी होना चाहती है और माँ बनना चाहती है। इसके अलावा वह कुछ और नहीं चाहती, भले ही वह खुद भी कुछ और सोचे या दूसरे उसके बारे में कुछ सोच लें। इसके अतिरिक्त किसी भी और स्थिति में उसका मन विद्रोह करता रहेगा, चीत्कार करता रहेगा।

लेकिन अपने मन की बात दबा कर जाट ने कहा, "मैं सोच रहा था...तुम कितनी अच्छी हो !"

"हूँ।"

एम. बी. होटल को सलाम बोल चल पड़ी।

"तुम नूरजहाँ को जानती हो ? उससे मिली हो ?"

"मैंने उसका नाम सुना है, लेकिन उससे मिली नहीं हूँ।"

"कासिम मुल्तानी नाम के आदमी को जानती हो ?"

"ना !"

"पाराशर कैसा आदमी है ?"

"पाराशर ! उसके लिये मेरे पास एक ही लफ्ज़ है...कमीना !"

" 'राय गर्ल्स' के पीछे..."

"हाथ धो कर पड़ा हुआ है। वह कहता है, वह मुहब्बत करता है। एक साथ वह रेवा नारंग, रोज़ विन्सेन्ट, राका शीराज़ी और राबिया से मुहब्बत कर रहा है। दिन को उसने चार भागों में बाँट रखा है और छः-छः घन्टों के लिये उसके दिल में एक-एक लड़की की मुहब्बत जोश मारती है। एक का टाइम खत्म हुआ, दूसरी का शुरू हुआ।"

"राका शीराज़ी में उसकी दिलचस्पी खास मालूम देती है," जाट ने कहा।

www.akfunworld.wordpress.com

"राका पागल है । वह समझने लगी है, कि पाराशर उससे समसुच मुहब्बत करने लगा है । सीमेन्ट और लोहे का वह कारोबारी दिल भी सीमेन्ट और लोहे का रखता है, इतनी सी बात वह जान-बूझ कर नहीं समझना चाहती । राका आज आयी नहीं । यह कुछ अजीब सी बात है," राबिया बोली ।

"पाराशर का सारा ध्यान आज...रेवा नारंग पर ही था ।"

"जानती हूँ । मेरे सामने ही वह रेवा के साथ पार्टी से निकला था ।"

राबिया का फ्लैट आ गया । एम. बी रुक गयी ।

"यह के. टी. एम की गाड़ी है न ?" राबिया ने पूछा ।

"हाँ !"

"उसे सब सिनिक समझते हैं और, वह भी अपने को सिनिक ही दिखलाना चाहता है । इतना मैं तुम्हें बता दूँ, वह सिनिक नहीं है। वह बहुत अक्लमन्द है ।"

"मैं जानता हूँ ।"

"मेरे यहाँ आना है तुम्हें । याद रहेगा न ? अच्छा खुदा हाफ़िज ।"

"खुदा हाफ़िज ।"

●

के. टी. एम. की कोठी आयी और एम. बी. गराज़ की तरफ लपकी। उसकी तेज़ हेड लाइट में कोठी का मैदान चमक रहा था ।

गराज के पास...तेज़ हेड लाइट में कुछ और भी चमका ।

जाट ने गाड़ी रोक दी और मुस्कराया ।

फिर वही चिर-परिचित दृश्य ।

एक और हत्या !

खून ! चारों ओर खून !

उफ़ ! दो फीट के दायरे में इतना खून भर गया है कि ज़मीन दलदली हो चुकी है । दूर-दूर तक छींटे उड़े हुए हैं, जैसे फ़ौव्वारा छूटा हो । पैरों में खून लग रहा है, हर तरफ चपचपाहट है । खून...एक पवित्र चीज़ । हर एक के पैरों में अब लिथरेगा । पवित्र था यह...जब तक शरीर के भीतर था । आबरू है, जब तक वह घर के भीतर रहे ।

पास ही एक मासूम शरीर पड़ा हुआ है । हलचल...गरमी...मुहब्बत, नफ़रत...सभी जज़्बात...सभी कुछ जिसे छोड़ अब जा चुके हैं। वह अब एक पदार्थ मात्र है । बस ।

गला, एक कान से लेकर दूसरे कान तक बड़ी सफ़ाई से कटा हुआ है । यह काम जैसे बड़ी ही फुरसत, बड़े ही आराम से किया गया है ।

खून के कतरे अब भी एक-एक कर निकल रहे हैं ।

वह कभी एक मासूम लड़की थी, और वह थी...

वह थी...

रेवा नारंग !

●

जाट को याद आया, रेवा नारंग ने कहा था—'...मैं इस समय तुमसे...तुमसे ज्यादा बात...नहीं करूँगी...नहीं कर सकती ...नूरजहाँ बड़ी...अच्छी लड़की है...तुम...नूरजहाँ के लिए यहाँ...आए हो..."

●

जाट खामोश था । धीरे-धीरे उसके भीतर सजगता लौटी ।

उसके पहुँचने के कुछ ही देर पहले गला काटा गया है । वह पाराशर के साथ पार्टी से निकली थी । गुज़श्ता रात में राका भी पाराशर के ही साथ थी । गले कटे हैं । एक ही पैटर्न ।

www.akfunworld.wordpress.com

राका के चेहरे पर उसकी पुतलियों में भय अथवा आतंक नहीं था। वह शायद हँस रही थी, बोल रही थी और जब मौत आयी, तो वह उससे बिलकुल बे खबर थी।

रेवा के होठों, दाँतों, पलकों, पुतलियों में लेकिन आतंक था, स्तब्धता थी। वह जानती थी कि मौत उसके पास आ रही है और जब मौत सामने आ खड़ी हो गयी थी, तो दोनों की आँखें कुछ पलों के लिए मिली थीं।

कुछ आहट हुई।

जाट पलटा।

इसके पहले ही कोई तूफ़ान की तरह उस पर टूट पड़ा।

सधे हुए घूँसे उसकी नाक और कनपटी पर पड़े। जाट ने भी दुश्मन के पेट और उसकी गरदन पर घूँसे बरसाए। उसके वार में लेकिन ताकत नहीं थी। उसका सर घूम रहा था और नाक फट गयी थी। सहसा ही हो गये हमले ने उसे लड़खड़ा दिया था।

दोनों भिड़ गये और जुट कर लड़ते रहे। जाट ने दुश्मन का चेहरा देखने की कोशिश की। वहाँ लेकिन, काली पट्टियाँ थीं और सिर्फ़ आँखें दहक रही थीं।

जाट के चेहरे पर खून ही खून फैल गया था। मल्ल युद्ध चलता रहा। फिर बाज़ी बराबर पड़ने लगी। शत्रु भी यह समझ रहा था और जब उसने यह समझा कि जाट उसे घायल करने की नहीं, अपितु उसे पकड़ लेने की कोशिश कर रहा है, तो वह चिकनी मछली की तरह फिसल कर निकल गया और अँधेरे में गुम हो गया।

जाट के हाथ से बाज़ी जाती रही।

आँखों के आगे से अँधेरा साफ हुआ, तो वह लड़खड़ाता हुआ उठा और कोठी की ओर बढ़ा।

फ़िरदौस ने दरवाज़ा खोला।

"मुझे फ़ोन तक ले चलो," जाट बोला।

फ़िरदौस समझदार आदमी था। बेकार की बातचीत में उसने समय नहीं गँवाया।

जाट ने पुलिस को फ़ोन किया।

फ़िरदौस उसकी ओर देख रहा था।

"हाँ! तुम्हारी इस कोठी में एक और खून हो चुका है। बात अब बहुत संगीन है। तुम्हारे मालिक अगर घर ही पर हों, तो उन्हें बुलाओ। आलम साब कहाँ है?"

"मालिक लगभग दो घन्टे हुए, लौट आये हैं। मैं उन्हें जगाता हूँ। आलम साब की आज छुट्टी है। वह घर गया है।"

के. टी. एम. भी आया और इन्स्पेक्टर जोगेलकर भी आया और साथ ही साथ उसका सहयोगी भी। के. टी. एम. परेशान था और जोगेलकर परेशानी के साथ-साथ इस बार कुछ रूखा भी था। चौबीस घन्टों के भीतर एक ही कोठी में दो-दो खून! यह ऐसी बात थी, जो के. टी. एम. जैसे करोड़पति के लिए मुसीबत का बायस हो सकती थी।

अदब की हद को फिर भी लाँघा नहीं गया। चन्द सवालात पूछे गए। के. टी. एम. ने रेवा नारंग को देखा था....करीब तीन घन्टे पहले। हाँ...उसके साथ एक आदमी था; पाराशर। दो-एक बार वह रेवा से मिला है और उसके बारे में कुछ खास नहीं जानता। इन मुसीबतों को बन्द करो इन्स्पेक्टर। मेरे सर में दर्द होने लगता है। राका का क्या हुआ?

"पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट है कि उसका खून रात एक बजे हुआ। कल वह भी पाराशर के साथ थी और आज रेवा भी पाराशर के साथ।" जोगेलकर ने बताया।

"पाराशर क्या कहता है?"

www.akfunworld.wordpress.com

"उसका कहना है कि रात साढ़े दस के आस-पास राका की तबीयत कुछ खराब हो गयी थी। उसे वह घर पहुँचा आया और उसके बाद क्या हुआ, उसे नहीं मालूम।"

"पाराशर खून नहीं करेगा।" के. टी. एल. के इस फ़तवे प जोगेलकर ने कुछ देर गौर किया। उसके ठीक पीछे खड़े उसके सहयोगी ने भी गौर किया।

लाश हटायी जा चुकी थी। के. टी. एम. की आँखों में अब नीं भर रही थी। जोगेलकर ने सलाम ठोंका और बाहर निकल आया।

बाहर जाट उसका इन्तज़ार कर रहा था।

"मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि लड़की रेवा यहाँ मुझसे मिलने आयी थी," जाट ने कहा।

फिर जाट ने पार्टी की पूरी कहानी उसे सुनाई। रेवा से जो-जो हुई थीं, उन्हें भी और मुश्ताक के बारे में भी बताया।

"इन सूचनाओं के लिए धन्यवाद। आप जो कुछ भी देखें सुनें, उसकी सूचना हमें ज़रूर दें, भले ही आपके अपने लिहाज़ से किसी महत्व का हो या नहीं। नूरजहाँ की बाबत मुझे मालूम है। पु भी उसकी खोज कर रही है। इन सब घटनाओं का नूरजहाँ की घ से किसी न किसी रूप में सम्बन्ध ज़रूर है। आप हमारे लिए बहुत के हो सकते हैं। के. टी. एम. बहुत बड़ा आदमी है। हम जब-तब तक नहीं पहुँच सकते और आप...यहीं...उसके पास रह रहे हैं," जोगेलकर ने कहा।

जाट को खुशी हुई कि के. टी. एम. को इन लोगों ने संदेह लोगों की सूची से काट नहीं रखा है। उसने पूछा, "ब्यूक में लोगों को राका की लाश के अलावा और क्या मिला?"

"राका का अपना वैनिटी बैग था, जिसमें वही सब चीजें थी होनी चाहिएँ। ड्रिंक कॉरनर में दो गिलास थे। राका ने एक गि

से ड्रिंक किया था। दूसरा गिलास साफ था और उसे इस्तेमाल में नहीं लाया गया था। और कुछ भी खास वहाँ नहीं था। आपके खयाल से क्या वहाँ कुछ और भी था?"

जाट ने बताया कि के. टी. एम. के अपने खयाल से वहाँ 'कुछ और' भी था, जिसकी तलाश उसे राका की लाश के नीचे थी।

"हूँ! के. टी. एम. किसी बात को, भेद को अपने सीने में छुपाए हुए हैं और यह उनके अपने लिए ठीक नहीं है," जोगेलकर बोला।

"यही खयाल मेरा अपना भी है," जाट ने कहा।

और, जब जाट लौट कर आया तो के. टी. एम. ऊँघ सा रहा था।

"आओ मिस्टर गूजर सिंह। क्या बात है कि लाशों का आगमन भी तुम्हारे साथ-साथ हुआ? शायद तुम जहाँ रहते हो, वहाँ लाशें भी रहती हैं। ऐसा तुम्हारे पानीपत में भी हुआ है क्या?"

"यह बात सच है मेरे अज़ीज़। मेरा साबका हमेशा लाशों से ही पड़ा करता है," जाट बोला, "हाँ, क़ासिम मुलतानी को आप जानते हैं?"

"कासिम...हाँ, मैं जानता हूँ उसे। मिला है वह मुझसे। कुण्डली बोरकर के यहाँ फोटोग्राफी का काम करता है वह। एक बार मेरे पास वह महाबलेश्वर का मेरा बँगला किराए पर माँगने आया था। कुछ नैचुरल फोटोग्राफी उसे करनी थी। बँगला मैंने उसे दे दिया। किसी को निराश करने की मेरी आदत नहीं," के. टी. एम. ने कहा।

"कासिम मुल्तानी आपके पास..."

"कुछ अपना भी खयाल किया करो जाट गूजरसिंह। तुम्हारा चेहरा अभी भी खून फेंक रहा है और फ़िरदौस कब से बैन्डेज का सामान लिए तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है। बैन्डेज करवा लो। सुबह मुलाकात होगी," के. टी. एम. बीच ही में बोल उठा और उठ खड़ा हुआ।

www.akfunworld.wordpress.com

दूसरे दिन। एल. एल. राय का ऑफ़िस।

राय बहुत चिन्तित था। वह उन लोगों में था, परेशानी में जिनकी आवाज़ और महीन पड़ जाती है। बहुत ही महीन आवाज़ में उसने कहा, "पहले राका और अब रेवा! कौन है वह? कौन है वह?"

जाट ने पीछे देखा। कोई नहीं था।

"मेरा मतलब है, खूनी कौन है?" राय बोला।

"खूनी? अच्छा! इस बारे में आप ही बेहतर बता सकते हैं श्री एल. एल. राय! लड़कियाँ आपके यहाँ काम करती थीं! उनके बारे में आप बखूबी जानते थे," जाट ने कहा।

"मैं सुबह से इस विषय पर हर तरफ से सोच रहा हूँ। उन दोनों के व्यक्तिगत जीवन के बारे में मुझे कुछ अधिक नहीं मालूम। उनका मेल-जोल, हिलना-मिलना, उठना-बैठना फिर भी बहुत से आदमियों के साथ था। बिज़नेस के लिए यह ज़रूरी था। हो सकता है, कहीं वह बकवास भी पैदा हो गयी हो, जिसे मुहब्बत कहते हैं और फिर प्रतिद्वन्दी भी तैयार हो गये हों और फिर वह सब कुछ हो गया जो हमारे सामने हैं।"

"हाँ यह एक नज़रिया है।"

राय ने कुछ आगे झुक एक बदली हुई आवाज़ में कहा, "इसका एक नज़रिया और भी है। राका और रेवा मेरे यहाँ सबसे अच्छे मॉडलों में थीं। उनके खात्मे से मेरा जो नुकसान हुआ है, उसका अन्दाज़ सिर्फ मुझको है। बहुत पैसा लगेगा और बहुत समय लगेगा दूसरी लड़कियों को तैयार कर ट्रेन्ड कर उस स्तर तक लाने के लिए। हो सकता है, प्रतिद्वन्दी उनका नहीं, बल्कि मेरा हो, जो इस तरह से एक-एक कर मेरे मॉडलों को खत्म करते हुए मुझे मुकम्मिल बरबादी की तरफ धकेल रहा हो। ऐसी सूरत में अभी एक-दो क़त्ल का इन्तज़ार और करना पड़ेगा।"

जाट उठ खड़ा हुआ।

"कहाँ जा रहे हो?" राय ने अचकचा कर पूछा।

"मैं परेशान हूँ नूरजहाँ के लिए और परेशान हूँ इन हत्याओं के लिए। हो, सकता है नूरजहाँ भी इसी तरह खत्म की जा चुकी हो, या खत्म की जाए, इसलिए इस मामले में हम और तुम सहयोगी की तरह काम कर सकते हैं हाथ से हाथ मिला कर।"

"मुझे तुमसे यही उम्मीद थी मेरे अज़ीज़ दोस्त।" राय ने अपना हाथ बढ़ाया।

"मैं जा रहा हूँ उस आला फोटोग्राफर से मिलने, जिसका नाम आपने कुण्डली बोरकर बताया था।"

"मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा।"

"एक बात। क्या तुमने नूरजहाँ को भी पाराशर से मिलवाया था?"

"हाँ?...हाँ। मिलवाया था।"

"पराशर की दिलचस्पी फिर नूरजहाँ में भी काफी बढ़ गयी थी?"

"शायद।"

"धन्यवाद।"

●

"किससे मिलना है आपको?" वह रूखी शिष्टता, जो केवल अभ्यासवश् आ जाती है और बरती जाती है।

"महाशय कुण्डली बोरकर से," जाट ने कहा।

रिसेप्शनिस्ट गर्ल गर्द के उन निशानों को देख रही थी, जिन्हें [illegible] के भारी जूते बनाते आए थे। उसने यही समझा कि यह उजड्ड [illegible] पहली बार शहर आया है और फ़ोटो खिंचवाना चाहता है। वह [illegible], "आप गलत जगह आ गए हैं। हम लोग फ़ोटो नहीं खींचा

www.akfunworld.wordpress.com

करते। ये फ़ोटो जो आप देख रहे हैं, किसी और ही मक़सद से खींचे गये हैं।"

"ग़लत आप समझ रही हैं। फ़ोटो खिंचवाने का चाव इस गरीब बन्दे को बिलकुल नहीं। चाव है तो फ़क़त अपने दोस्त कुण्डली से मिलने का।"

रिसेप्शनिस्ट गर्ल ने सेन्ट में बसाया गया रूमाल नाक पर रखा और, घन्टी बजायी।

ऑफिस ब्वॉय जा कर कुण्डली बोरकर को बुला लाया।

कुण्डली काफी मज़बूत काठी आदमी था। कद से तो बहुत ऊँचा नहीं था, लेकिन उसका चेहरा काफी लम्बा था। जबड़े की मज़बूत हड्डियाँ कटकटा रही थीं। गौर वर्ण। आगे के बाल कुछ हलके पड़े हुए। क्लीन शेव्ड। उम्र चालीस के आस-पास।

उसने बड़ा तपाक और बड़ा अदब दिखाया। हाथ मिला बोला, "आप के. टी. एम. के मित्र हैं तो मेरे भी अभिन्न मित्र हुए। मुझे बड़ी खुशी है कि के. टी. एम. ने आपको मुझ नाचीज़ से मिलने भेजा। के. टी. एम. की हमेशा मुझ पर कृपा दृष्टि रही है। आपसे मैं अपना परिचय खूब गाढ़ा करने का यत्न करूँगा। मुझे इसका बड़ा शौक है कि अपने दोस्तों की संख्या बढ़ाता रहूँ।"

"कुछ ज़रूरी बातें आपसे करूँगा।"

"ज़रूर ज़रूर। एक निवेदन है कि एक घन्टे के लिए मुझे छुट्टी दे दें। भीतर स्टूडियो में बहुत ज़ोरों से काम चल रहा है। कितने ही मॉडल काम कर रहे हैं। अभी वहाँ से हटने का मतलब होगा, बहुत ही ज्यादा नुकसान। आप आराम से बैठें। यह पत्रिकाएँ पढ़ें, मैं जल्दी से जल्दी खिदमत में हाज़िर होऊँगा।"

कुण्डली चला गया। जाट ने आराम से सोफे पर आसन जमाया।

चमरौधा उतार दिया और पैर ऊपर कर लिए। पत्रिकाएँ उठा लीं और उल्टा-सीधा उन्हें देखने लगा।

यह दृश्य शायद रिसेप्शनिस्ट गर्ल के लिए बहुत भयंकर सिद्ध हो रहा था, इसीलिए वह भी वहाँ से चल दी।

ऑफिस में अब जाट अकेला था। एक दूसरे सोफे को खींच कर उसने पैर फैला उस पर रख लिए और, चेहरे पर पत्रिका फैला कर सोने का उपक्रम करने लगा।

बाहर का दरवाज़ा खुला और दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। जाट ने कनखियों का इस्तेमाल किया।

उनमें एक पाराशर था और, उसके साथ थीं श्रीमती सोमा राय।

उन लोगों ने इधर कोई ध्यान नहीं दिया। उन लोगों ने किसी भी तरफ ध्यान नहीं दिया। आगे बढ़ते गये और फिर दाहिने हाथ के दरवाज़े के सामने जा खड़े हुए, जिसमें एक ताला पड़ा हुआ था।

पाराशर ने पास से चाभी निकाली और ताला खोल कर दरवाज़ा थोड़ा-सा खिसकाया। सोमा राय पहले भीतर गयीं और उनके पीछे पी. पी. पाराशर।

जाट एक दम उछला और दो छलाँगों में दरवाज़े के पास पहुँच गया और इसके पहले कि भीतर से कुण्डी बन्द हो, उसने हाथ अड़ा दिया।

फुसफुसाहट हुई, "जल्दी आओ। दरवाज़ा बन्द कर देना। रोशनी बिलकुल न हो।"

जाट ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

वह अब एक छोटे से कमरे में था। घुप्प अँधेरा। सामने जैसे कोई स्टेज सा था। एक कमरे की सेटिंग थी और उसमें रोशनी हो रही थी। जाट ने आँखें गड़ा-गड़ा कर देखा। अँधेरे कमरे में बारह-

www.akfunworld.wordpress.com

पन्द्रह कुर्सियाँ यूँ पड़ी हुई थीं, जैसे वह कोई थियेटर हो और लोग बैठे हुए थे। एक खाली कुरसी पर उसने भी अधिकार जमाया।

स्टेज खाली था। कहीं कुछ नहीं हो रहा था। फिर भी लोग दम साधे बैठे हुए थे।

अपने मन में वह बोला, "यू कोन सा थेटर हो।"

कुछ क्षणों बाद स्टेज पर एक लड़की ने प्रवेश किया।

वह आयी, बैठी, कुछ देर सोचती रही। फिर ड्रेसिंग टेब्ल के सामने जा बैठी। अपने बालों को उसने खोल दिया और उसके लम्बे काले बाल उसकी पीठ पर लहरा गए। अपना मेकप वह उतारने लगी।

फिर वह खड़ी हो गयी। हैंगर पर से उसने कपड़े उतारे और वहीं स्टेज पर अपने कपड़े बदलने लगी। पहले धीरे-धीरे, एक-एक करके उसने अपने सारे कपड़े उतारे। फिर निरावरण कुछेक मिनटों तक आदम क़द शीशे के सामने खड़ी, अपने आपको, अपने रूप और यौवन को मुग्धा दृष्टि से देखती रही और होठों में मुस्कराती रही, गर्वीली और नशीली मुस्कान। अपने ही हाथों अपने आपको, अपने रूप और यौवन को सहलाती और दुलारती रही। फिर धीरे-धीरे दूसरे कपड़े पहनने लगी...

जाट राम ने कई बार पलकें झपकायीं। आँखों को मला। यह सपना नहीं था। सब कुछ सामने था। दो-एक बार उसकी अँगुलियाँ होठों तक गयीं, कि ज़ोर से सीटी बजाएँ। लेकिन दम था कि सध गया था। पलकें थीं कि गिरना भूल गयी थीं।

आस-पास और सामने की सीटों पर साँसों के भारी हो जाने और ज़ोर-ज़ोर से चलने का साफ़ पता चल रहा था। दो-एक आकृतियाँ एक दूसरे पर झुक गयीं और दो-एक के हाथ अँधेरे में कहीं गुम हो गये।

बगल वाले सज्जन की एड़ियाँ बहुत ज़ोरों से मचल रही थीं और एक-दो बार जाट के पैरों से भी आ टकरायीं।

हलकी-दबी सिसकियों, चुम्बनों के नशीले स्वर बन्द हवा में तैरे। एक कोने से महीन-सी जनाना स्वर आया, "अँ...अँ...अभी, यहाँ नहीं...और लोग भी हैं...थो...थोड़ी देर बाद अपने कमरे में..."

जाट राम के खून में एक ओर आग लग रही थी और दूसरी ओर नफ़रत से उसका सर भन्ना रहा था।

फिर एक दम अँधेरा हो गया। स्टेज बुझ गया।

जाट राम ने सोचा, पहला अंक शायद समाप्त हो गया। यह नाटक बढ़िया है। सोलो आइटम। सम्वाद-रहित नाटक। केवल भाव-भंगिमाएँ। लेकिन कितना गंदा! कितना अश्लील! ऐसे दृश्यों को लोग कैसे बर्दाश्त करते हैं!

थोड़ी देर बाद दूसरा अंक शुरू हुआ।

दाहिने हाथ की दीवार का एक हिस्सा एक दम जगमगा सा गया। स्टेज अब सामने नहीं था, इस तरफ था। लोगों ने बहुत धीरे-धीरे आहिस्ते से कुरसियों का मुँह इधर कर लिया।

जाट की समझ में अब आया। कड़वी मुस्कान उसके होठों पर फैल गयी।

तो यह माजरा है! स्टेज-विस्टेज कहीं कुछ नहीं है। दीवार पर शीशा दिखायी दे रहा था। यह करामत 'टू वे मिरर' की है। सब कुछ है दीवार के उस तरफ कहीं किसी और ही कमरे में, और यहाँ यह शीशा फिट कर वहाँ घटित होने वाले दृश्य को देखा जा रहा है, उसका मज़ा लिया जा रहा है। उस लड़की को शायद यह मालूम भी नहीं होगा कि उसकी गतिविधियों को, उसके निरावरण शरीर को इस तरह चौदह-पन्द्रह जोड़ा आँखें चोरी से देख रही हैं, उसके शरीर के रेशे-रेशे पर रेंग रही हैं।

www.akfunworld.wordpress.com

और अब सामने स्नान घर का दृश्य था।

उस दृश्य में लड़की के आते ही लोग बड़े मुस्तैद हो गये। साँसें रोक ली गयीं। लड़की शावर बाथ लेने की तैयारी करने लगी...अपने सारे कपड़े उतार कर उसने एक अँगड़ाई ली और फिर उसी अवस्था में शावर के नीचे जा खड़ी हुई...लेकिन उसी तरह से वह वहाँ खड़ी नहीं रहती...कभी इधर घूमती है और कभी उधर...कभी बैठ जाती है और कभी...

जाट राम ने आँखें बन्द कर लीं और हनुमान चालीसा का पाठ करने लगे—'हे...पवन सुत, भव बाधा हरो...'

सूखे हुए गलों में बार-बार थूक गटका जा रहा था। खुश्क होठों पर ज़ुबान फेरी जा रही थी। कुर्सियों पर बार-बार पहलू बदले जा रहे थे। जाट राम ने एक बार अगल देखा, फिर बगल देखा। सामने देखने की हिम्मत नहीं हुई। आँखें शर्म के मारे बन्द हो गयीं।

उनका दिमाग तेज़ी से नाच रहा था। कौन जाने अभी बाएँ हाथ की दीवार पर शीशा चमक उठे...शयन कक्ष में एक युवक और एक युवती और दोनों...और वहाँ भी कुछ नज़ारे देखने को मिलें... शायद...शयन कक्ष...एक पलँग...और...

'हे पवन सुत...आए शरण तिहारी...रक्षा करो हमारी...'जाट राम होठों में बुदबुदाते रहे।

कुण्डली बोरकर। मित्रों की संख्या बढ़ाने की जिनका यत्न रहता है और अपने चुने हुए मित्रों को वह यह 'बायस्कोप' दिखाया करते हैं। पता लगाया जाए कि इस बायस्कोप की टिकट दर क्या है।

शो पूरा हो गया। कमरे में बत्ती जल गयी। लोग उठ खड़े हुए। आँखों में अंगारे दहक रहे थे।

जाट ने देखा, उस 'सलेक्टेड गेदरिंग' में स्त्रियों की संख्या कम नहीं थी। पचास प्रतिशत! सभी लोगों के शरीर पर भव्य परिधान!

चेहरों पर आभिजात्य और सम्भ्रान्त कुल की मोहर! धन, यश, शिक्षा, मर्यादा, संस्कार और सम्पन्न परम्परा के खम्भों पर खड़े उच्च वर्ग के यह प्रतिनिधि!

दिन भर काम-काज के बखेड़े रहते हैं। दम मारने की फ़ुरसत नहीं मिलती। बेचारे दो घड़ी का मनोरंजन करके लौट रहे हैं। उत्तेजना और उन्माद के यह इन्जेक्शन ले अब अगर यह जा अलग-अलग होटलों में बँट जाते हैं, तो इसमें किसी को आपत्ति करने का भला क्या अधिकार है!

किसी का पैर हलका सा दब गया। कुछ आगे झुक बड़ी ही भद्रता से कहा गया, "ओह...आई ऐम सॉरी!"

शिष्टता! शालीनता! एटीकेट!

जिसके जिस्म को गिद्ध दृष्टियों के भार से दबा कर अभी-अभी उठा गया है, वह हमेशा इस वाक्य के इन्तज़ार में रहेगी 'ओह! वी आर सॉरी!'

नॉनसेन्स! गोश्त खाने के लिये होता है। मुआफी माँगने के लिये नहीं। जाट भी उठ खड़ा हुआ।

ठीक सामने पाराशर और सोमा राय खड़े थे।

पाराशर कुछ ठिठका, फिर हँसा, फिर बोला, "ओह! अज़ीज़ दोस्त गूजरसिंह किलेदार। आप यहाँ भी तशरीफ लाए हैं! अब तो आप हमारे राज़दार हैं। कहिये...सुना है राबिया के साथ इश्क की पेंचें बहुत ज़ोरों से लड़ रही हैं। मुआमला कहाँ तक पहुँचा? बम्बई में एक रोमांस को बहुत लम्बी ज़िन्दगी नहीं बख़्शी जाती है। जल्दी क्लाइमेक्स पर पहुँचिए, छुट्टी कीजिये और फिर दूसरे का स्वागत कीजिये। यहाँ आपको राबिया के साथ आना चाहिये था, क्लाइमेक्स जल्दी क्या, आज ही आ जाता।"

एड़ी से ले कर चोटी तक आग लग गयी। जाट ने पूरा हाथ

www.akfunworld.wordpress.com

घुमाया और भरपूर घूँसा, यह आश्वासन देते हुए कि उसका जवाब नहीं मिल पाएगा, पाराशर के चेहरे पर बरस पड़ा।

डोज़ एक ही काफी था। फिर भी गिरते हुए पाराशर को जाट ने थामा और, एक और भरपूर वार नाक को चिथड़ाता हुआ बरसा।

श्री पी० पी० पाराशर धराशायी हो गये।

जाट बाहर निकल आया। अपनी लाठी उसने थामी और उसे घुमाता हुआ, नचाता हुआ उस 'अध्यात्म भवन' के बाहर आ गया।

रात जिस भूत से टक्कर हुई थी, वह पाराशर नहीं ही था। वह भूत मज़बूत जबड़ों और कसरती शरीर का था, पाराशर की तरह कोमल और नाज़ुक नहीं।

उसे पुकारा गया।

पुकारने वाली सोमा राय थीं।

"मुझे दुःख है, कि मैंने आपके साथी को कुछ सबक दिये," जाट बोला।

"मेरा कोई साथी नहीं और मुझे किसी बात का दुःख नहीं। आप मुझे घर तक पहुँचा देंगे?"

"आप ऐसी अबला तो दीखती नहीं है कि अकेली घर न जा सकें। वह पैर जो इस 'सिनेमा घर' तक आ सकते हैं, उन्हें बहुत मज़बूत ही होना चाहिये।"

सोमा राय ने कोई बुरा नहीं माना। आज़िज़ी से अपनी बात उन्होंने दोहराई, "मुझे घर तक पहुँचा दीजिये।"

"चलिये। मुझे भी राय से बातें करनी हैं। ऐ टैक्सी, इधर आना।"

बँगला आ गया। सोमा राय ने कहा, "आइए! भीतर चलिये।"

"मैं राय के दफ्तर जा रहा हूँ।"

"नहीं, मेरे साथ आइये। मैं बहुत परेशान हूँ। मेरा सर फटा जा रहा है। मैं इस समय अकेली नहीं रह सकती। मेरे साथ आओ।"

जाट को एक तरह से खींच लिया गया। उसने सोचा कि ऐसे दृश्यों को देखने के बाद सर क्या, शरीर की नसें तक फट जाती हैं। सोमा राय का केवल सर ही फट रहा था, इसी पर उसे आश्चर्य हुआ।

सोमा राय उसे पकड़े हुए ड्राइंग रूम में लायी। उसे बैठा, उसके कन्धों को दबाते हुए बोली, "मैं तुम्हारे लिये शराब से लबरेज़ गिलास लाती हूँ।"

"बड़ी मेहरबानी होगी, अगर महज़ ठण्डे पानी का गिलास मिल जाए।"

"बुद्धू!" कहती हुई सोमा राय भीतर चली गयी।

वैसे, जाट का भी दिमाग फटा जा रहा था। कासिम मुल्तानी के बारे में कुछ भी मालूम न हो पाया था। दोनों हत्याएँ किसने कीं? शक घूम-फिर कर पाराशर ही पर जाता था। वह बम्बई का रहने वाला था, जहाँ किसी रोमांस को बहुत लम्बी ज़िन्दगी नहीं बख्शी जाती है। वह जल्दी ही क्लाइमेक्स पर पहुँचने और छुट्टी पाने में विश्वास करता था। और अगर कोई लड़की क्लाइमेक्स के बाद भी छुट्टी देने के लिए तैयार न हो, तो उसे दुनिया से और खुद को उससे छुट्टी दिलाने के लिए वह हत्या जैसा क़दम बिला हिचक उठा सकता है। फिर भी पिछली रात गराज के पास वह नहीं था। वह कोई और ही था।

और फिर मुश्ताक़?

रात गराज में खुद कुण्डली हो सकता था। वह उतना ही मजबूत दीखता है, जितना कि वह था, जिससे साबका पड़ा था। हत्या के लिए बहुत सार्थक उद्देश्य भी उसका हो सकता था। हो सकता है, राका और रेवा के जिस्मों की नुमायश भी उसने अपने 'बायस्कोप' में की हो और यह भेद उन लड़कियों पर खुल गया हो। शायद उन्होंने बहुत आग उगली हो और इसके पहले कि सारे ज़माने पर उसके दुष्कृत्य खुलते, उसने इन्हें मौत की गोद में सुला दिया।

www.akfunworld.wordpress.com

सारा बँगला निर्जन मालूम दे रहा था। कहीं कोई आवाज़ नहीं।

दरवाजे पर श्रीमती सोमा राय प्रकट हुई।

सोमा राय की आँखें पागलों की सी विक्षिप्तता बटोरे हुए थीं। गहरे नशे में थी जैसे वह। उनके नथने रह-रह कर फड़क जा रहे थे और होंठ अजीब सी वक्रता ले चुके थे। उसने कपड़े बदल डाले थे और जो कपड़े अब उसके तन पर थे, उससे यह कहना चाहिए कि उसके तन पर कपड़े थे ही नहीं।

उनके हाथ में शराब से लबरेज़ गिलास था।

जाट की हवा खिसक गयी।

"लो पियो।" सोमाराय पास आ गयी।

"हे हो भवानी। मैं धरम-करम वाला आदमी हूँ! यह सब मुझसे कोई सरोकार नहीं रखते। तो चलता हूँ मैं अब।"

"बैठ जाओ। पियो इसे।"

वह इतना पास आ गयी कि जाट को उसकी साँस और शरीर की दहकन छू गयी। जाट ने आँखें बन्द कर लीं और हनुमान जी को याद करने लगा।

"मेरी ओर देखो।"

आँखों को बिना खोले ही जाट ने जवाब दिया, "भवानी...मैं हिन्दू हूँ और मेरा धर्म कहता है, पर दारेषु मातृ वत्! इसका मतलब होता है, दूसरे की औरत माता के समान है। यह शास्त्र वचन है।"

सोमा राय चीखी, "मेरी ओर देखो।"

जाट ने आँखें खोल दीं। सोमा राय ने गिलास फर्श पर पटक दिया।

"उसके पास एक औरत है। उसके पास हमेशा औरतें रही हैं। औरतें उसके पास आती रही हैं और जाती रही हैं," वह बड़बड़ा रही थी, "यह औरत आयी है, लेकिन जायेगी नहीं। वह उसे हमेशा के लिए रखना चाहता है। उसे उसने कहीं छिपा कर रखा है, मुझसे दूर। मुझे उसका पता चाहिये। मैं उसका खून कर दूँगी, दोनों का खून कर दूँगी।"

"मैं पता लगा दूँगा। आपको खून कर देना चाहिये, बिलकुल कर देना चाहिये," जाट बोला।

"मेरी ओर देखो।"

"ना।"

"क्या मैं खूबसूरत नहीं हूँ? मेरे शरीर को देखो," सोमा ने अपने कपड़ों को थोड़ा इधर-उधर किया, "अगर इसमें खूबसूरती है तो जाकर उससे कहो। उसे बताओ कि मैं खूबसूरत हूँ।"

'हे पवन सुत! आये शरण तिवारी...रक्षा करो हमारी।' जाट फिर होंठों में बुदबुदाया।

"तुम यह क्या बुदबुदा रहे हो?"

"मैं एक आदमी को याद कर रहा हूँ। उसका नाम संकट मोचन है। वह बड़ा वीर है। उसने एक ही छलाँग में समुद्र पार कर लिया था। उसने पूरे पहाड़ ही को उखाड़ लिया था। वह बाल ब्रह्मचारी है। मैं उसका भगत हूँ। हर अखाड़े में आप उसका फ़ोटो पाएँगी और इतना खूबसूरत फोटो कि कुण्डली बोरकर तक वैसा फ़ोटो नहीं उतार सकता। बैठिये, मैं आपको उसकी कहानी सुनाता हूँ।" जाट एक ही साँस में बोल गया।

"कहानी तुम्हें मैं अपनी सुनाऊँगी," सोमा राय बोल उठी, "मैं बहुत कमज़ोर हूँ। मैं एक कमीने आदमी से आज तक पार नहीं पा सकी। आज तक मेरी जात से कहीं एक घास का तिनका तक नहीं उखड़ा है। नौ साल की उम्र में ही मेरा कौमार्य भंग हो गया था। हर गन्दी महफ़िल में तुम मेरा ज़िक्र पाओगे, जो इतना बदसूरत है कि टालस्टाय जैसा कथाकार भी उसका सही चित्र नहीं उतार सकता। बैठो, मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाती हूँ।"

www.akfunworld.wordpress.com

जाट ने उसे देखा। भरपूर नज़रों से उसे देखा।

उस औरत को, जो अपनी कहानी सुनाने वाली थी, विक्षिप्तता फिर कहीं बहा ले गयी। दहकन फिर आ गयी, फ़र्श पर से शराब की तेज़ बू फिर उठी।

बीच का फ़ासला फिर एक बार मिटा दिया गया। सोमा राय के शरीर की दहकन फिर जाट के सीने को जलाने लगी।

जाट घिघियाया, "भवानी!"

"मेरा नाम सोमा राय है।"

"भवानी...मैं बाल-बच्चे दार आदमी हूँ। इज्ज़तदार आदमी हूँ। आप मेरे होने वाले बच्चों की अम्मा को नहीं जानतीं। वह एक खतरनाक औरत है। कहीं उसे पता चल गया तो पहले वह आपको गोली मार देगी, फिर अपने आप को गोली मार लेगी। मुझसे लेकिन, कुछ नहीं कहेगी। समझ लीजिए, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा..."

"मुझे गोली मारी जाएगी?" सोमा राय चीखी और उसका रूप बदल गया।

उसकी आँखों में दूसरी ही चमक आ गयी...पागलपन...वहशत। निमिष् मात्र में सारा का सारा अस्तित्व ही बदल गया।

वह जाट पर दुश्मन की तरह टूट पड़ी। उसके शरीर में बला का पशु बल उठ आया था। जाट के कन्धे पकड़ उसने घसीटे और फिर उसे ज़मीन पर गिरा दिया। उसे वह पागलों की तरह नोचने लगी। आहत, क्षत-विक्षत पशु की सी गुर्राहट उसके मुँह से निकल रही थी।

जाट के देवता कूच कर गये। वह रौद्र-रूपी कल्पना उसकी पहुँच के बाहर थी। सोमा राय दाँत किटकिटा रही थी, आँखें कटोरों से बाहर निकली पड़ रही थीं और वह उसे जैसे चबा डालने, उसे कचकचा कर चबा डालने के लिये तड़प रही थी...एक बिजली थी, जो उसके भीतर कड़क रही थी, तड़क रही थी।

जाट ने दो क्षण में अपने मन को सम्हाल लिया। वस्तु स्थिति समझी। यह एक बीमार औरत है। इसे तो सहानुभूति चाहिए। इसे इलाज चाहिए।

जाट ने वारों को थामा और फिर उसके दोनों हाथों को कस कर पकड़ लिया। सोमा राय तड़प गयी, पर छूट न सकी। उसका सारा शरीर जैसे तड़-तड़ कर चिटख रहा था। खण्ड-खण्ड हो गिर रहा था। उसके मुँह से झाग निकल आया। गुर्राहट लहर-लहर जा रही थी।

जाट ने उसके हाथ बाँध दिए। उसे सोफ़े पर बैठाया और फिर सोफ़े से बाँध दिया। उसके कपड़े बिलकुल अस्त-व्यस्त हो चुके थे। जाट ने उसके ऊपर एक चादर डाल दी।

दावानल अब भी धधक रहा था।

"शायद तुम्हें अपने पति से कभी भी प्यार नहीं मिला," जाट धीरे से बोला, "शायद मन और शरीर की माँगों के बीच, तुम्हारे लिए कभी भी, तालमेल नहीं बैठा।"

वह फ़ोन की ओर बढ़ा। राय के दफ़्तर का नम्बर उसने घुमाया।

"राय, मैं गूजरसिंह हूँ। तुम्हारे घर से बोल रहा हूँ।"

"क्यों, क्या बात हुई?" उधर से राय ने पूछा।

"मैं कुण्डली के यहाँ गया था। वहाँ तुम्हारी मिसेज़ से मुलाकात हुई। उनके अनुरोध पर मैं उन्हें यहाँ घर ले आया, लेकिन..."

"मैं समझ गया।" राय का स्वर बुझ गया, "उसे फिर दौरा पड़ गया होगा। शायद वह तुम्हारे साथ बड़ी बुरी तरह पेश आयी है। मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ मेरे दोस्त। मैं सब जानता हूँ। कैसी है वह अब?"

"मुझे मजबूरन उन्हें बाँध देना पड़ा है।"

"मैं अभी आ रहा हूँ। क्या तुम मेरे आने तक रुक सकोगे?" राय ने पूछा।

www.akfunworld.wordpress.com

Bijay's Scan

"नहीं। मैं जा रहा हूँ। मुझे अभी ही कुण्डली से फिर मिलना है। तुम आ कर इन्हें सम्हालो।"

फ़ोन रख जाट सोमा राय की ओर मुखातिब हुआ और बोला, "उस औरत को आपने देखा है, जो इस बार उसके पास है...जिसे उसने छिपा रखा है?"

कोई उत्तर नहीं।

"उसका नाम आप जानती हैं? कैसी है वह? कुछ भी बताइए। शायद मैं आपकी मदद कर सकूँ।"

खामोशी।

जाट ने लाठी सम्हाली और आदाब अर्ज़ किया।

सोमा चीखी, "मैंने उसे बनाया है...उसे सब कुछ दिया है। वह दर-दर का भिखारी था। कुछ नहीं था।"

जाट ने उसे कुछ देखा, फिर मुड़ा।

"वह सम्मोहन विद्या जानता है। वह हिप्नोटाइज़ कर देता है। उससे बचो...उससे बचो..." सोमा राय चीखती रही और, जाट बाहर निकल गया।

www.freehindinovel.blogspot.com

एक और हत्या!

रिसेप्शनिस्ट गर्ल ने कहा, "आप कहाँ चले गये थे? बॉस ने कई बार आपको पूछा। हम लोगों के पास इतना फ़ालतू समय नहीं है कि किसी एक के पीछे इस तरह गँवाते फिरें।"

"ओ...हो...ओ! आपके पीछे तो हम जान गँवाते फिर सकते हैं, आप थोड़ा समय भी नहीं गँवा सकतीं।" जाट मुस्कराया।

"ईडियट!" धीमे स्वर में वह बोली, "तुम यहाँ से भाग जाओ, नहीं तो वाकई तुम्हारी जान जाती रहेगी। यहाँ क्या कर गये थे तुम?"

"एक बात बताओ," जाट ने पूछा, "यहाँ कासिम मुल्तानी नाम का आदमी काम करता है?"

"हाँ, हाँ!"

"उससे मिलवा सकती हो मुझे?"

"वह बाहर गया हुआ है। शहर के बाहर। बॉस ने उसे कुछ नैचुरल फ़ोटोग्राफ़ी के लिए भेज रखा है। दो-एक दिन में आ जायेगा।"

"किस तरह का आदमी है वह? मेरा मतलब है, उसके नाक-नक्शे और जिस्मानी गठन के बारे में बता सकती हो?" जाट रिसेप्शनिस्ट गर्ल के पास आया। और, उसने जो वर्णन किया, जो नक्शा खींचा, उससे जाट हैरत में आ गया। यह तो...यह तो बिलकुल मुश्ताक का ही ढाँचा है। तो क्या...यह दोनों एक ही आदमी हैं...?

"उसका एक नाम और भी है न? जानती हो?"

"नहीं तो।"

"ऐ हज़रत! तो फिर आ मरे तुम!" पीछे से आवाज़ आयी।

जाट मुड़ा। देखा। सामने कुण्डली बोरकर खड़ा था।

"मैंने तुम्हें के. टी. एस. का आदमी जान कर इज्ज़त दी थी और तुम यहाँ मेरे ऑफ़िस में खुले साँड़ की तरह घूमने लगे। जहाँ तुम्हें नहीं जाना चाहिए, वहाँ पहुँच गये। लखपतियों पर हाथ उठाने लगे। तुम्हारी यह मजाल! दो टके के जाहिल-गँवार आदमी अपनी हैसियत भूल गये..." कुण्डली बोरकर बिफर पड़ा।

कुण्डली बहुत कुछ कहना चाहता था, पर इसके आगे कुछ नहीं कह पाया। जाट ने लाठी पटक दी थी। आस्तीन चढ़ा ली थी और, जब कुण्डली बोरकर ने सधे हुए घूँसे को यमदूत की तरह अपनी नाक

www.akfunworld.wordpress.com

की तरफ लपकते देखा, तो उसके स्पर्श का प्रसाद पाने के पहले ही वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

"हरामज़ादा। लखपतियों को नंगा बायस्कोप दिखाता है।" जाट बड़बड़ाया।

रिसेप्शनिस्ट गर्ल चीखी, हाथ-पैर उसने फटकारे और, फिर फ़ोन उठा बिना डायल किए ही चिल्लाने लगी—'पुलिस...पुलिस...!"

●

के. टी. एम. ने कॉफ़ी का प्याला उसकी ओर बढ़ाया।

"मुझे आपके आदमी आलम साब के बारे में भी मालूम हो जाना चाहिए," जाट का स्वर गंभीर था, "कौन है वह?"

"क्यों? मेरा नौकर है। ड्राइवर है। उसका सवाल कैसे पैदा हुआ?" के. टी. एम को थोड़ा सा आश्चर्य हुआ।

"कल रात वह छुट्टी पर था और, परसों रात उसके बयान की पुष्टि के लिए कि वह आधी रात तक गाड़ियों की सफाई करता रहा था, कोई भी प्रमाण नहीं है। और हत्याएँ दोनों रातों में हुई हैं।"

"ओह! तुम्हें मैंने नूरजहाँ का पता लगाने के लिए नियुक्त किया है, या इन हत्याओं की जाँच करने के लिए?" के. टी. एम. थोड़ा सा खिझलाया।

"आप जानें। आपकी भलाई वैसे इसी में है। शायद एक-दो घन्टे के भीतर ही आप हिरासत में ले लिए जाएँ। दोनों लाशें आपकी कोठी के कम्पाउण्ड में बरामद हुई हैं। यह खिलवाड़ नहीं है।" जाट ने चेतावनी दी।

"मुझे हिरासत में लिया जाएगा? यह कैसे हो सकता है? तुम्हें मालूम है, सुबह से मैं चार संस्थाओं को, जिनमें से दो गवर्नमेंट स्पॉन्सर्ड हैं, कुल मिला कर अस्सी हज़ार रुपये अनुदान की शक्ल में बाँट चुका हूँ और इसकी पूरी सूचनाएँ अधिकारियों तक पहुँच चुकी हैं।"

"इसके अलावा भी तो आपने आज कुछ रुपया बाँटा है।"

"उसका हिसाब मन-ही-मन में रखा जाता है मिस्टर गूजरसिंह।".

"हाँ, तो आलम साब कौन है?" जाट फिर अपने पुराने सवाल पर आ गया।

"उसने मोटर मैकेनिक के रूप में अपनी ज़िन्दगी शुरू की थी। मोटरों की वह पूजा करता है, उनका दीवाना है। इधर-उधर ठोकरें खा रहा था। मैंने उसकी योग्यताओं को पहचाना और उसे अपने यहाँ ले आया।"

"कहाँ ठोकरें खा रहा था वह?" जाट ने पूछा।

"एल. एल. राय के यहाँ काम करने को मैं ठोकरें ही खाना समझता हूँ।"

"ओह! तो वह राय के यहाँ से हो कर यहाँ आया है!" जाट थोड़ा सा चौंका।

"राय ने इसका बहुत बुरा माना था। बहुत चीखा-चिल्लाया था। मैं, लेकिन, आदमी की कीमत को पहचानता हूँ और उसकी इज्ज़त करना चाहता हूँ।" के. टी एम. के स्वर में आत्मश्लाघा थी।

"पाराशर और कुण्डली..."

"तुम सिर्फ़ राय पर अपना ध्यान दो," के. टी. एम. बीच ही में बोल उठा, "मैं तुम्हें उसका भेद बता चुका हूँ कि वह एक हरामज़ादा है।"

"हाँ! यह तो सचमुच भेद की बात है।"

"तुम्हें हर रहस्य का उत्तर उसके यहाँ मिलेगा।"

"कुण्डली के यहाँ एक बायस्कोप दिखाया जाता है..."

"जानता हूँ। कौन नहीं जानता इसे! क्या नयी बात बतला रहे हो! कुण्डली का लेकिन न इन हत्याओं से कोई वास्ता है और, न नूरजहाँ से ही उसका कोई मतलब है।"

www.akfunworld.wordpress.com

"और पाराशर ?"

"पाराशर ! जोगेलकर आया था । उसका कहना है कि बीती दोनों रातों में अपने एक-एक क्षण का हिसाब पाराशर ने दे दिया है और पुलिस उसकी जाँच कर रही है । पाराशर लफंगा है । वह हलके-फुलके रोमान्स लड़ा सकता है, लेकिन हत्या नहीं कर सकता । तुम राय की ओर देखो । सिर्फ राय की ओर देखो मिस्टर गूजरसिंह ।"

"राय की ज़िन्दगी की शुरुआत कैसे हुई ?" जाट ने पूछा ।

"भीख माँगता था । भीख माँगता था पहले वह । क्या था वह ! कुछ भी तो नहीं । कौन जानता था उसे ?"

"फिर ?"

"फिर उसने उस लड़की से शादी कर ली, जिसके बाप के पास लाखों की जायदाद थी । वह लड़की जब कुमारी थी, तब ही उसके पेट में एक जीव ने हाथ-पैर कुलबुलाने शुरू कर दिए थे । बाप ने कहा, गिरवा दे । लड़की नहीं मानी । तब उस चादर की तलाश शुरू हुई, जिसे इज्ज़त की लाश पर डाला जा सके । राय ने अपने आपको पेश किया और बताया कि वह हैन्डलूम की बनी हुई बहुत खूबसूरत चादर है । बहुत फबेगी ।"

"फिर ?"

"फिर वह चादर ओढ़ ली गयी ।"

"फिर ?"

"फिर दुनियाँ ने राय को एक लड़के का बाप बनने के उपलक्ष्य में बधाई दी ।"

"फिर ?"

"फिर राय का ससुर तो अपने समय पर मरा, लेकिन राय का लड़का अपने समय से पहले ही मर गया । समझ गए न गूजर सिंह ! अपने समय से पहले ही मर गया ! उसकी माँ पागल सी हो गयी । आज भी पागल ही है, पर राय बहुत समझदार हो गया है, इतना कि उसके पास रुपया बढ़ता गया...बढ़ता गया..."

"और कुछ ?"

"और ! और यह कि वह हरामज़ादा है ।" के. टी. एम. के स्वर में बला की नफ़रत थी ।

"हूँ ।"

"उसके पास ढेर-सारी लड़कियाँ हैं, जिन्हे वह 'राय गर्ल्स' कहता है । वह लड़कियाँ मॉडल तो हैं ही, पर उसके इशारों पर उन्हें और भी कई नाच दिखाने पड़ते हैं । रुपया आता है और राय...बेचारा कमीशन एजेन्ट...अपना कमीशन ले कर अपनी सूखी रोटी खाता है और, पानी पी कर भगवान का नाम लेता है ।"

"एक बात । इतनी नफ़रत जो आपके दिल में राय के लिये है, उसकी वजह ?" जाट ने सीधा सवाल किया ।

के. टी. एम. ने आँखें बन्द कर लीं और, निढाल हो कर पड़ गया ।

"नफ़रत की कोई खास वजह है ! क्या है वह ?" जाट ने फिर पूछा ।

के. टी. एम. कुछ बोला नहीं । आँखें बन्द किये वह जैसे स्वप्न लोक में विचरता रहा ।

"उसका आप पर कुछ 'होल्ड' है । क्या है वह ?" जाट ने दूसरा सवाल किया ।

खामोशी !

"उसने आपको ब्लैक मेल किया है क्या ?"

ख़ामोशी । बिलकुल ख़ामोशी ।

"कासिम मुल्तानी से आपके क्या सम्बन्ध हैं मिस्टर के. टी. एम. ?"

खामोशी टूटी नहीं ।

www.akfunworld.wordpress.com

जाट उठ खड़ा हुआ। के. टी. एम. को जो कहना था, वह कह चुका था। बिज़नेस मैन है। फालतू बात नहीं करता।

फिर जाट हैरत में आ गया। उसने देखा, के. टी. एम. सचमुच सो गया था।

●

एम. बी. समुद्र के किनारे रुकी।

रात घिर चुकी थी।

सामने वह इमारत थी, जिसमें राबिया का फ़्लैट था।

घन्टी बजायी गयी। दरवाजा खोलने वाली राबिया ही थी।

"तुम...ओह तुम! ओह!" राबिया मारे खुशी के हाथ मलने लगी।

"राबिया बेगम। इस नाचीज़ को क्या भीतर आने के लिए भी नहीं कहोगी?" जाट मुस्कराया।

राबिया ने कुछ कहना चाहा, पर खुशी भी तो वाणी को रोक देती है। वह एक तरफ़ हट कर खड़ी हो गयी।

जाट भीतर आ गया।

"तुम कहोगी कि न कोई पूर्व सूचना, न अप्वाइन्टमेन्ट। कहाँ से आ टपका यह जट्ट गँवार! मैं भी सोच रहा था, पता नहीं तुम मिलो या न मिलो। मेरा मन उदास है...मेरे मन ने कहा, तुम्हारे यहाँ चलूँ, तो कोई जरूरी तो नहीं है कि भेंट हो ही जाए," जाट ने कहा।

"अचानक ही आ जाने वाला मेहमान अपने साथ किन खुशियों को लाता है, इसका मुझे बहुत दिनों बाद एहसास हो रहा है।" राबिया अपनी ख़ुशी छिपा नहीं पा रही थी।

"और इस तरह फ़ुरसत निकाल कर किसी के यहाँ यूँ ही जाने में जो खुशियाँ हैं, उसके एहसास भी मेरे पास रोज़ नहीं आया करते हैं राबिया बेगम!"

फिर दोनों हँस पड़े। हाथों को बाँधे राबिया एक बार फिरहरी सी नाच सी गयी।

"यह शाम तुम्हारी अपनी है न?" जाट ने पूछा।

"हाँ...और वह भी इत्तफ़ाकन। मेरे बॉस की पत्नी अचानक ही बीमार पड़ गयी हैं और, उनके साथ वह इस समय अस्पताल में तशरीफ़ फ़रमा रहे हैं। और इसलिये आज छुट्टी है। छुट्टी।"

"जब मैं पढ़ता था और स्कूल में कभी छुट्टी हो जाया करती थी, तो मैं इसी तरह खुश हुआ करता था।"

"जिन खुशियों के दौर पूरे हो चुके होते हैं, कभी-कदा जब उनसे मुलाकात हो जाती है तो कितना अच्छा लगता है! सब कुछ...कितना भला!"

"उतना ही, जितनी अच्छी तुम हो...जितनी भली तुम हो!"

"दुनियादारी निबाह रहे हो?" राबिया मुस्करायी।

जाट ने उसके हाथ को थाम लिया और, उसने केवल एक शब्द कहा, "नहीं!"

"मेरा कमरा देखो। यहीं मैं रहती हूँ। मैं तुमसे आज बहुत सी बातें करूँगी, बहुत सी पागलपन की बातें। बैठो। यहाँ नहीं। यहाँ, पलँग पर।"

राबिया ने सचमुच ही बहुत सी पागलपन की बातें की।

आज दोपहर ही में एक और पागल औरत सोमा राय से जाट का साबका पड़ा था। उसने सोचा, इस पागलपन में कितनी ताज़गी है और उस पागलपन में कितनी सड़ाँध थी! यह बताता है कि यहाँ पैर अभी भी जमे हुए हैं और ज़माने के थपेड़े पैरों से लगते हुए हलकी खुशनुमा फ़ुरहरी सी पैदा करते हुए निकले जा रहे हैं और, वहाँ पैर कब के उखड़ चुके हैं और गँदला पानी ऊपर से हो-हो कर अब बह रहा है।

पैर लेकिन कब तक जमे रह पाएँगे? कब तक?

www.akfunworld.wordpress.com

हो सकता है...हो सकता है नहीं...यही होगा कि आगे आने वाले समय में इतनी खुशगवार बातें करने वाली यह राबिया भी कहेगी...'मुझे देखो...मैं खूबसूरत हूँ न ! खूबसूरत हूँ...!' यह भी वहशत में अपने पंजे तौल किसी पर टूटेगी और उसे नोच-खसोट डालेगी ।

जाट की आँखें नम हो आयीं । चुपचाप वह खामोश, उस पागल लड़की की बातें सुनता रहा ।

सहसा फ़ोन की घन्टी बजी ।

राबिया ने फ़ोन उठाया । वह आने वाले सन्देश को सुनती रही, उसके चेहरे का रंग ज़र्द पड़ता गया, वह बदलती गयी और जब उसने फ़ोन रखा तो उसका वह वक्त ख़त्म हो चुका था, जिसकी वह खुद मालिक थी...रॉय की नौकरी का वक्त शुरू हो गया था ।

"मुझे इसी समय जाना होगा । इतना ही वक्त मिल गया, इतना ही वक्त तुम्हारे साथ हँसी-खुशी गुज़र गया, इसी के लिये मैं शुक्र गुज़ार हूँ," भरे गले से वह बोली ।

"किसकी ?"

"अल्लाह की और...तुम्हारी ।"

जाट हँसा । अपनी लाठी उसने थामी और उठ खड़ा हुआ ।

"बहुत से लोग होंगे, जो तुमसे डरते होंगे...जिन्हें तुम, तुम्हारा यह रूप बहुत भयंकर लगता होगा ।"

"तुम भी डरती हो ?" जाट बोला ।

वह हँसी, "मैं ? मुझे तो तुमसे बिलकुल डर नहीं लगा । मुझे तो तुम एक खिलौने की तरह लगते हो, जिससे बच्चा खेलता है ।"

"यह सच है राबिया । लोग मुझसे डरे हैं, डरते हैं, लेकिन मुझसे कोई बच्चा आज तक नहीं डरा, जैसे तुम नहीं डरीं," जाट ने धीरे से कहा ।

"तो क्या मैं बच्चा हूँ ?" राबिया चौंक पड़ी । उसका स्वर बहुत ही मासूम था ।

"अब बचपन ही तक खूबसूरती सीमित हो कर रह गयी है । विकास के पहले चरण में ही अब बदसूरतियाँ बढ़ आने लगी हैं । इसलिये जो भी अब खूबसूरत है, उसे बचपने ही में माना जाएगा, बच्चा ही कहा जाएगा," जाट ने कहा और चलने को हुआ । कुछ बहुत ही अस्पष्ट सी ध्वनि उसके मन में कहीं बहुत दूर उठी कि वह न जाए, राबिया को भी जाने से मना करे, दोनों अभी साथ ही रहें । पर वह उस ध्वनि को पकड़ न पाया और बाहर आ गया ।

एम. बी. को उसने स्टार्ट किया और आगे बढ़ा ।

मुश्किल से वह दो फर्लाङ्ग ही गया था कि उसे ब्यूक गाड़ी दिखाई दी । के. टी. एम. की ब्यूक । यह यहाँ...यहाँ क्या कर रहा है ? उसने एम. बी. रोकी और ब्यूक की ओर बढ़ा । और तब ही...

एक काली चादर उसके सिर से आ लिपटी और साथ ही किसी भारी चीज़ से उसके सिर पर प्रहार किया गया । आँखें अँधेरे में आ गयीं । जाट ने दो ही क्षण में अपने को सम्भाल लिया और जवाबी हमले के लिये वह पलट गया । एक मज़बूत कट्टे के जिस्म से उसकी भिड़न्त हो गयी ।

जाट जानता था, यह उसे दूसरा मौका मिला है । मौके बार-बार नहीं मिला करते । इस बार इस हमलावर को पकड़ना ही होगा । सर पर लिपटी चादर सब काम खराब किए दे रही थी । अगर वह हमलावर को देख ही पाता । इसका समय नहीं था, कि चादर से पहले मुक्त हुआ जाता ।

जाट प्राण-पण से लड़ रहा था । और फिर विपक्षी का हाथ उसकी वज्र मुष्टिका में कस गया, कसता गया । लेकिन तब ही जाट के सिर पर दुबारा प्रहार हुआ । लोहे की भारी मूठ दुबारा आ कर गिरी ।

www.akfunworld.wordpress.com

आँखें अँधेरे में जाने लगीं, होश सोने लगे, दुश्मन का हाथ धीरे-धीरे छूट गया और वह बेहोश कर गिर गया।

सिर में भयंकर पीड़ा हो रही थी। उसने आँखें खोलनी चाहीं, पर पलकें तक कितनी भारी हो रही थीं। वह रास्ते में गिरा पड़ा है। लोग इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए होंगे। कितना खराब है यह! उसके जैसे आदमी के लिए यह स्थिति असहनीय है। उसे उठ जाना चाहिए...धूल में यूँ नहीं पड़ा रहना चाहिए। कितना समय बीत गया होगा? दस मिनट से भी ऊपर हो गए होंगे।

उसने एक दम आँखें खोल दीं।

रोशनी में पहले कुछ भी नहीं दिखाई दिया, फिर धीरे-धीरे नक्शे साफ़ होने लगे। यह वह कहाँ है? यह तो उसका अपना कमरा है। के. टी. एस. की कोठी में उसका अपना कमरा। यह रोशनी तो दिन की फैल रही है। कितनी देर वह बेहोश रहा है?

गरदन घुमाने में तकलीफ हुई। आँखें घुमायी गयीं। पलँग के पास ही कुर्सी पर इन्स्पेक्टर जोगेलकर खोया सा बैठा था। परेशान हाल।

"जोगेलकर।" उसने क्षीण स्वर में पुकारा।

जोगेलकर की तन्द्रा भंग नहीं हुई।

"जोगेलकर!" उसने फिर पुकारा।

"ओह! होश आया तुम्हें?"

"मैं यहाँ कब लाया गया? क्या कई दिन से मुझे होश नहीं आया? कुछ पता चला, किसने मुझ पर प्रहार किया था? कोई पकड़ा गया?" जाट कई सवाल एक साथ ही पूछ गया।

जोगेलकर का चेहरा निराशा में बुझ गया। धीरे से बोला, "हम उम्मीद कर रहे थे कि इस बार तो तुम बता पाओगे कि हमला किसने किया था। तुम आँखें बन्द करके चलते हो क्या?"

"मुझ पर मोटा कपड़ा फेंक दिया गया था इन्स्पेक्टर। मैं कुछ भी

न देख सका। फिर भी उस आदमी की बनावट से मैं कह सकता हूँ कि यह वही आदमी था, जिसने पहले यहाँ कम्पाउण्ड में मुझ पर वार किया था," जाट ने कहा।

"तुम्हारी इस जानकारी से हम कहीं भी तो नहीं पहुँचते।" जोगेलकर की परेशानी कम नहीं हुई।

"चलती हुई सड़क पर हमला किया गया था। किसी ने तो उसे देखा होगा," जाट बोला।

"लोगों ने देखा था। उन्होंने यही देखा कि दो आदमी झगड़ रहे हैं, लड़ रहे हैं और फिर एक भागा और आगे अँधेरे में जा गुम हो गया," जोगेलकर बोला, "अँधेरा वहाँ भी था। साफ-साफ कोई नहीं देख सका। कोई उस आदमी के बारे में कुछ,नहीं बताता। कुछ भी ठीक पता नहीं चलता। तुम वहाँ कैसे पहुँचे? राबिया के पास तुम क्या कर रहे थे?"

जाट ने पूरी कहानी बयान की।

"यह गलत बात है। वहाँ पर ब्यूक गाड़ी नहीं थी," जोगेलकर ने कहा, "लोगों ने साफ देखा था कि वह आदमी पैदल ही भागा था। हादसे के पाँच ही मिनट के भीतर पुलिस पेट्रोल वहाँ पहुँच गया था और उसे भी वहाँ पर के. टी. एस. की ब्यूक गाड़ी नहीं दिखायी दी थी।"

"मैंने अपनी आँखों से देखी थी इन्सपेक्टर। उसे देख कर ही मैंने एम. बी. रोकी थी।"

"तुम राबिया से मिल कर आ रहे थे?"

"मैंने पूरी बात बयान कर दी है।"

"तुम्हारे हक़ में यह अच्छा ही था गूजरसिंह कि चोट खा कर तुम बेहोश हो गये। रात भर तुम आँखों के सामने रहे और निगरानी में रहे, यह तुम्हारे लिए अच्छा ही था, नहीं तो जिस तरह लाशों का

www.akfunworld.wordpress.com

सिलसिला बना है और साथ ही तुम्हारा सिलसिला जो उन लाशों से बना है, उससे तुम भी सन्देह से अछूते नहीं रह जाते।"

"मैं तुम्हारी बात समझा नहीं।" जाट थोड़ा-सा चौंका।

"राबिया बेगम का कल रात क़त्ल हो गया है।"

जाट तड़प गया, "क्या ?"

"राबिया जहाँ बेगम का कल रात क़त्ल हो गया है। वही तरीका, वही पैटर्न ! आधा गला इस तरह कटा हुआ कि सिर अलग तो नहीं है, लेकिन झूल गया है। फ़र्क़ इतना ही है कि इस बार लाश यहाँ के कम्पाउण्ड में नहीं, अँधेरी की एक सड़क पर मिली। क़त्ल करने के बाद उसे मोटर के नीचे धकेल दिया गया।" जोगेलकर ने बताया।

इसके बाद क्या सुनना बाकी था ! जाट पलँग पर औंधा गिर गया। कलेजे में ऐसा दर्द उठा कि साँस तक न ली जा सकी। आँखें धीरे-धीरे बन्द हो गयीं। बेहोशी फिर आ गयी।

●

धीरे-धीरे आँखें खुलीं। सर में बेहद सूनापन सा भरा हुआ था। आँखें खुल नहीं पा रही थीं।

"कौन...इन्स्पेक्टर ?"

"हाँ। होश आ गया तुम्हें ?"

"कब से मैं बेहोश पड़ा हूँ ?" जाट ने पूछा।

"सिर्फ़ दस मिनट हुए, जब आप फिर बेहोश हो गए थे।"

"सिर्फ़ दस मिनट ? मुझे तो लगा था, मैं कई दिनों के बाद आँखें खोल रहा हूँ।"

फिर बातें साफ होने लगीं।...किसका क़त्ल हुआ था। राबिया... राबिया...! राबिया जहाँ बेगम !

"हम लोग ज़ोर-शोर से काम कर रहे हैं। मॉडल गर्ल्स का या क़त्ले काम इस तरह नहीं चल सकेगा। इसे रोकना ही है। हर उस

आदमी की, जो किसी न किसी रूप में इन लड़कियों के सम्पर्क में था, जाँच की जा रही है। तारीफ यह है कि पिछली रात के लिए हरेक के पास सफ़ाई मौजूद है कि वह कहाँ था, क्या कर रहा था। सफ़ाई के लिए सबूत भी हरेक के पास मौजूद है। हरेक को इसका ध्यान है कि अपने एक-एक मिनट को याद रखे।"

जाट चुपचाप सुनता रहा।

"कितने ही बड़े आदमियों के दामन सने हुए हैं। इन लड़कियों से कितनों ने सम्पर्क रखा हुआ था। उन लोगों के बारे में जाँच बड़ी मुश्किल हो जाती है।"

जाट चुपचाप सुन रहा था।

"लेकिन अब हद हो चुकी है। खयाल एक हद तक ही रखे जा सकते हैं। चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन अब हम किसी को नहीं छोड़ेंगे। एक-एक को अपनी सफ़ाई देनी होगी।"

जाट खामोशी से सुनता रहा।

"सबके पास सफ़ाई है। नहीं है, तो एक के पास नहीं है।"

जाट ने उसकी ओर देखा।

"पी. पी. पाराशर।"

"पाराशर ?"

"पाराशर कल रात कहाँ था और इस समय कहाँ है, इसका किसी को कोई पता नहीं," जोगेलकर ने कहा।

सारे शरीर का दर्द जाने कहाँ चला गया। मन पर थकान और अवसाद की जो परत थी, वह भी कहीं नहीं रही। वह यहाँ हाथ-पैर तोड़ कर लेटा हुआ है। उसे काम करना है। उसे बदला लेना है। वह जाट है। वह कोई और नहीं, जाट है।

"हाँ...हाँ...क्यों उठ बैठे ? तुम्हारे सर में बहुत चोट है," जोगेलकर ने उसे रोकना चाहा, "डॉक्टर कई दिन तक हिलने-डुलने

www.akfunworld.wordpress.com

को भी मना कर गया है। मैं के. टी. एम. से कह रहा था कि जाट का सर है, झेल गया। कोई और होता तो चूर हो जाता।"

"पाराशर का क्या हुआ? उसने राबिया के बारे में बहुत गन्दी बात कही थी। बाकी दोनों लड़कियों की तरह वह ही राबिया के साथ था? था न? बोलो।"

"भई, उसका कुछ पता ही नहीं चल रहा है, मैंने बताया न। वह कल रात से ही गायब है। हर जगह उसे ढूँढ़ा जा चुका, पर वह कहीं नहीं मिल रहा है। इस तरह वह अपने ऊपर शक और अपने लिए मुसीबत ही बढ़ा रहा है।"

"और दूसरे लोग?" जाट ने पूछा।

"सब अपनी-अपनी जगह हैं। 'सफ़ाई' का रिकर्ड चढ़ा हुआ है, और लगातार बज रहा है।"

"कुण्डली बोरकर?"

"एक-एक पल का हिसाब उसके पास है।" जोगेलकर ने बताया।

"कासिम मुल्तानी?" जाट बोला।

"कासिम मुल्तानी? उसके बारे में भी जाँच की गयी है। रेवा ने, पता नहीं, उसका नाम आपको क्यों सुना दिया था। वह इस काण्ड में कहीं नहीं आता है। कुण्डली का मामूली नौकर है। बस। उसे दुनिया की किसी बात से कोई मतलब नहीं है। अपना काम करता है और एक मस्जिद में जा कर पड़ा रहता है। वहीं रहता भी है। उसकी कोई कीमत नहीं है।"

"इन्स्पेक्टर, तुम बेवकूफ हो।" जाट चीख़ पड़ा।

"क्या...? क्या फ़रमाया आपने?" जोगेलकर बौखला पड़ा।

"तुम गधे हो।"

"देखिए श्रीमान् जी..."

"कीमत वाले लोग अपने हाथ से कुछ नहीं किया करते हैं," जाट

बीच ही में बोल उठा, "वे सिर्फ़ अपने लिए सफ़ाइयाँ इकट्ठी कर लेते हैं और, आराम से बैठे रहते हैं। काम उनके इशारों पर वह लोग करते हैं, जिनकी, आपके शब्दों में, कोई कीमत नहीं होती है।"

"इस थ्योरी को मैं भी जानता हूँ।"

"कासिम मुल्तानी से मैंने मिलने की कोशिश की थी, लेकिन मैं यह कहूँगा कि उसे जान-बूझ कर मेरे सामने नहीं पड़ने दिया गया। उसके नाक-नक्शे का आप कोई बयान कर सकते हैं?" जाट ने पूछा।

इन्स्पेक्टर ने उसकी बनावट, उसके डील-डौल के बारे में काफी कुछ बताया।

कोई भी शक अब नहीं है। रिसेप्शनिस्ट गर्ल ने उसके जो विवरण दिये थे, उससे शक पैदा हुए थे और अब उनकी पुष्टि हो गयी है। एक आदमी के दो नाम हैं। पहले मुश्ताक और अब कासिम मुल्तानी।

"इस आदमी का कुछ पिछला इतिहास आप जानते हैं?" जाट ने पूछा।

"अगर तुम ज़रूरी समझो, तो तहकीकात की जाए।"

"अब मैं खुद ही करूँगा। के. टी. एम. कहाँ हैं? मुझे उनसे अब ज़रूरी बातें करनी हैं।"

इन्स्पेक्टर चला गया।

के. टी. एम धड़धड़ाता हुआ आया। जाट के होश में आने का जैसे उसे बेताबी से इन्तज़ार था। आते ही उसने कितने ही सवालों की झड़ी लगा दी। राय था न वह? राय ही था न वह?

जाट ने हाथ बढ़ा कर उसे रोक दिया। बोला, "मेरे एक सवाल का जवाब दो। तुमने कहा था एक बार कि तुम्हारा महाबलेश्वर का बँगला कासिम मुल्तानी ने किराए पर लिया था।"

"उसने क्या लिया था! लिया तो कुण्डली ने होगा। बहरहाल

www.akfunworld.wordpress.com

कासिम आया था बातचीत करने और रुपया देने।" के. टी. एम. ने बताया।

"वह बँगला अब भी किराए पर है?" जाट ने पूछा और उत्तर की आशा में जाट ने साँस रोक ली।

"मेरे अपने इस्तेमाल में वह बँगला अब आता नहीं। बहुत पुराना पड़ गया है। टूट-फूट भी गया है। कुछ रुपया मुझे उससे मिल रहा था। क्या बुरा था! मैंने उससे यही कहा कि महीने-दो-महीने के लिए नहीं दूँगा। कम से कम साल भर के लिए लेना हो तो ले। साल भर का उसने किराया दे दिया। बँगला अभी उसके पास ही है।"

जाट ने आराम से साँस छोड़ी और साँस ली। उसे इसी उत्तर की प्रतीक्षा थी। सामने से चट्टान हट गयी थी, और अब रास्ता दिखायी दे रहा था। बोला, "अपने उस बँगले का मुझे पूरा पता दो।"

"पता दे दूँगा। तुम इस वक्त क्या खाना पसन्द करोगे?" के. टी. एम. ने पूछा।

जाट चीखा, "मुझे खाना नहीं, पता चाहिए।"

के. टी. एम. ने घबड़ा कर हाथ सामने कर लिया। क्षण भर बाद धीरे से बोला, "देखो भई, मेरे ऊपर चिल्लाना नहीं। गुस्सा मत करो मेरे ऊपर। पता बताता हूँ। पूरा लोकेशन समझाए देता हूँ।"

सब कुछ अच्छी तरह समझ कर जाट उठ खड़ा हुआ।

"अरे भले आदमी। डॉक्टर कह रहा था, तुम्हारे सिर में तीन जगह फ्रैक्चर है।"

"एक बात भूलो मत कि मैं जाट हूँ...जाट।"

"हुक्म साहब?"

"एम. बी. बाहर निकालो।"

आलम साब गराज की ओर बढ़ा। वह बीमार सा लग रहा था और, झुक कर चल रहा था, जैसे उसके सारे शरीर में दर्द हो रहा हो। के. टी. एम. जैसे बड़े आदमियों के साथ रहते-रहते जिन सौजन्यपूर्ण व्यवहार में वह पटु हो चुका था, उसमें कोई कमी नहीं थी।

"क्या हो गया है तुम्हें?" जाट ने पूछा।

"बाई की बीमारी है साहब। कभी-कभी तंग कर ही जाती है," आलम साब ने कहा।

जाट ने एम. बी. सम्हाली। वह रेस कार उसके इशारों पर नाच कर दौड़ चली।

जाट सीधा राय के दफ्तर आया।

राय की कनपटी पर पेरिस प्लास्टर चढ़ा था और वह यूँ मरा-मरा सा बैठा था, गोया ज़िन्दगी का बवाल उठाए न उठा पा रहा हो।

"तुम्हें क्या हो गया मेरे अज़ीज़?" जाट बोला, "मुझ पर तो दुश्मनों ने धावा बोला था, तुम्हारी ख़बर किसने ली?"

"कुछ नहीं। ऐसे ही सीढ़ियों पर से पैर फिसल गया था!" राय ने कहा।

"हूँ! पैर फिसल गया था!" जाट के स्वर में अविश्वास था।

राय बगलें झाँकता रहा, फिर तेज़ी से बोला, "अच्छा...ठीक है, तुम मेरा विश्वास न करो। सच बात तो जानते ही हो। कल रात मेरी बीवी पर फिर दौरा पड़ गया था। जो भी उसके हाथ में आता गया, उठा-उठा कर मुझे मारती गयी। ज़िन्दगी तल्ख हो गयी है।"

www.akfunworld.wordpress.com

"अब राबिया को भी हटाया जा चुका है मिस्टर राय," जाट ने उसकी बात को अनसुनी करके कहा।

राय जैसे रो पड़ा। जब वह बोला, तो उसका स्वर काँप रहा था, "मेरी बरबादियों के पूरे इन्तज़ाम हो रहे हैं। अब हर रात आ रही है और एक 'राय गर्ल' का बलिदान ले कर जा रही है। क्या होगा! मेरा सारा बिज़नेस चौपट हो गया है। मैं दीवालिया हो जाऊँगा। मेरा दुश्मन यही चाहता है और यही होकर रहेगा। आज की रात पता नहीं किसका नम्बर है। मेरी सारी गर्ल्स भय से पीली पड़ गयी हैं। अपने-अपने फ़्लैट्स् से बाहर नहीं निकल रही हैं।"

"तुम यह सब रोकना चाहते हो न? चाहते हो कि यह वारदातें बन्द हों?" जाट बोला।

"मैं भला यह न चाहूँगा!" राय ने कहा।

"तो मेरे साथ चलो।"

"कहाँ चलना है?" राय ने पूछा।

"महाबलेश्वर।" जाट ने बताया।

राय ने अपना कोट पहनना शुरू किया। बोला, "वहाँ क्या है? कौन है वहाँ?"

"हो सकता है, वहाँ भी हमें एक लाश ही मिले। यह भी हो सकता है, अगर क़िस्मत साथ दे, कि वहाँ हमें वह लोग मिल जाएँ, जो एक-एक कर राय गर्ल्स का खात्मा कर रहे हैं," जाट ने कहा।

"मैं चलता हूँ। एक मिनट। ऑफ़िस को ज़रा हिदायतें दे दूँ।" और राय ने फ़ोन उठाया, "हाँ, देखिए मिस्टर जगन्नाथ, मैं अभी बाहर जा रहा हूँ। वापसी का कुछ ठीक नहीं। आज...हाँ...क्या कह रहे हैं?...कहिए...कहिए!..."

फिर फ़ोन रख कर राय बोला, "भई गूजर सिंह, मुझे अफ़सोस है, अभी न चल सकूँगा। मैनेजर ने एक अर्जेन्ट अप्वायन्टमेन्ट की याद

दिला दी है। बिज़नेस ऐसे ही खराब हो गया है...नेग्लेक्ट नहीं कर सकता। तुम्हें अभी जाना है?"

"अभी, इसी वक़्त," जाट बोला।

"तुम मुझे बतला दो कि वहाँ कहाँ जाओगे। मैं घन्टे-दो घन्टे के बाद रवाना हो सकूँगा। तुम्हारे पीछे मैं भी आता हूँ। वहीं मिल लूँगा," राय ने कहा।

"यह भी ठीक है," जाट बोला, "वह एक बँगला है और उसका पूरा लोकेशन मैं तुम्हें समझाए देता हूँ।"

राय बड़े ध्यान से सुनता रहा, फिर बोला, "ठीक! मैं पहुँच जाऊँगा। मैं बिलकुल समझ गया। वह इलाका मेरा देखा हुआ है। होशियार रहना। हम लोगों का साबका खूनियों से है। मज़ाक नहीं है। तुमने पुलिस को सूचना दे दी है कि तुम यहाँ जा रहे हो?"

"अभी नहीं। अभी मैं अनुमान ही पर चल रहा हूँ। कोई बहुत जरूरी नहीं कि सफलता मिले ही, फिर इस अँधेरी भटकन में पुलिस को क्यों फँसाया जाए। तुम चाहो तो खबर दे देना। मेरे पास एक मिनट का समय नहीं है। मैं चल रहा हूँ।"

और बाहर आ जाट ने एम. बी. को स्टार्ट किया।

कार के साथ-साथ जाट का दिमाग भी दौड़ रहा था।

...राय का सवाल उसका अपना सवाल था। लेकिन वह महाबलेश्वर में क्या पाने की, किससे मिलने की आशा रखता है? कुछ भी क्या कहा जा सकता है! नैचुरल फ़ोटोग्राफ़ी के लिए बँगले साल-साल भर के लिए किराये पर नहीं ले लिए जाते। यह बात कितनी अधकचरी है! के. टी. एम. जैसा सिनिक चाहे इसे महत्व न दे, पर इससे इसका महत्व कम नहीं हो जाता।

...कुण्डली बोरकर लखपतियों का दिल बहलाया करता है। हो सकता है, शहर से बहुत दूर उन पहाड़ियों में उसने उनके दिल को

www.akfunworld.wordpress.com

बहलाने के लिए दूसरे कितने ही आयोजन कर रखे हों। यह भी लेकिन सम्भव नहीं दीखता। ऐसी हालत में के. टी. एम. जैसे आदमी को छोड़ा न जाता। दिल बहलाव के लिए निमन्त्रण उसे भी दिया जाता। राय भी वहाँ के माहौल से अपरिचित ही दीख रहा था।

एम. बी. अपनी शानदार रफ़्तार में दौड़ती रही। शहर छूट गया। सबर्ब की बस्तियाँ छूटने लगीं। नब्बे मील की रफ़्तार से एम. बी. भाग चली।

सोचने का अच्छा अवसर मिला था। केस के हर पहलुओं पर और केस से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों के बारे में जाट गंभीरता पूर्वक सोचता जा रहा था।

...तीनों लड़कियों के क़त्ल का कारण एक नहीं ही था। राका शीराज़ी जिस कारण भी चिर निद्रा में सुला दी गयी हो, उसे नहीं मालूम। पर उसे विश्वास है, रेवा नारंग का मुँह इसलिए बन्द किया गया था क्यों कि वह उसे बहुत कुछ बताने के लिए उसके पास आ रही थी। और राबिया? जाट के साथ उसकी बढ़ रही मित्रता किसी को अपने लिए घातक लगी थी। राबिया को फ़ोन कर बहाने से घर से बाहर निकाल लिया गया और तब उसका क़त्ल किया गया। इससे यह भी स्पष्ट है कि जिसने भी उसे फ़ोन किया और बाद में जिसने उसका गला काट डाला, वह उसका परिचित ही था। उसे वह अच्छी तरह पहचानती ही नहीं थी, बल्कि उसकी बात मानने के लिए मजबूर भी थी, नहीं तो किसी भी सूरत में अपने उस सुखदायी समय को छोड़ कर वह जाती नहीं।

जाट ने स्पीड बढ़ा दी। सौ मील फ़ी घन्टे की रफ्तार से एम. बी. लपक गयी।

नूरजहाँ का ख़याल जाट को आया और उसे लगा कि नूरजहाँ शायद अब ज़िन्दा नहीं है। जिनके लिए हर रात में एक लड़की का

गला तराश देना इतना आसान था, वह नूरजहाँ को गायब कर कहीं रखेंगे नहीं। उसका भी गला तराश कर उसे कहीं दफ़्न कर देंगे।

और सोमा राय ने कहा था—'वह उसे कहीं छिपा कर रखे हुए है।'

...कौन? किसे?

...कुण्डली बोरकर! मज़बूत ढाँचे का आदमी। बार-बार ध्यान उसी पर जाता है कि हमले उसी ने किए।...यह थ्योरी बहुत तर्क संगत है कि जिन लड़कियों को उनके अनजाने में इस तरह बेइज़्ज़त किया गया, उनके अंग-प्रत्यंग की नुमायश की गयी, इस भेद के खुलने पर वे बहुत तड़पी होंगी, उन्होंने विद्रोह किया होगा, धमकी दी होगी कि वे इस राज़ का पर्दा फ़ाश कर देंगी। उस हालत में कितने ही उनकी जान के गाहक हो गए होंगे। कुण्डली बोरकर...और वे धनवान, जो नुमायश तो देखते हैं, पर साथ ही साथ अपनी इज़्ज़त का भी खयाल रखते हैं।

...और कासिम मुल्तानी ही मुश्ताक है, जो कभी नवाब मिर्ज़ा के यहाँ नौकरी करता था।

...रेवा नारंग कह रही थी—'कासिम मुल्तानी तक पहुँचो...नूरजहाँ तक पहुँच जाओगे।'

...और फिर आते हैं श्री के. टी. एम.। लाशें उसकी कोठी के कम्पाउण्ड में पहुँचा दी जाती हैं और, वह बेचारा संस्थाओं को अनुदान दे-दे अधिकारियों तक इसकी सूचना पहुँचाया करता है। जिसे वह बहुत सारे खर्चे भी करने पड़ते हैं, जिनका हिसाब सिर्फ मन में रखना होता है।

...इन उलझे हुए नक्शों में श्री के. टी. एम. का अपना द्वीप अथवा महाद्वीप कहाँ है? वह राय से इतनी खार क्यों खाए बैठा है?

...इसका सीधा सा एक ही जवाब है।

...जो धनिकों की सुख-सुविधाओं का इतना खयाल रखते हैं, वह

www.akfunworld.wordpress.com

अवसर मिलने पर क्या उन्हें ब्लैक मेल नहीं कर सकते ? औरत इनकी कमज़ोरी है और एक कमज़ोरी इनकी और है। इज़्ज़त।

...कुण्डली बोरकर बहुत अच्छा फ़ोटोग्राफर है। वह उन क्षणों और प्रकरणों के भी चित्र खींच सकता है, जो अगर प्रकाश में आ जाएँ, तो इज़्ज़त का शीशा खतरे में पड़ सकता है।

...शायद के. टी. एम. को ब्लैक मेल किया गया है।

...पी. पी. पाराशर !

...कल रात से उसका कोई पता नहीं है।

एम. बी. की स्पीड और बढ़ गयी। एक सौ बीस मील का घन्टा।

...महाबलेश्वर में शायद एक लाश मिले। पाराशर की लाश।

...हो सकता है, उसे भी ब्लैक मेल किया गया हो। हो सकता है, उसकी प्रतिक्रिया केवल खार खाने तक ही सीमित न रही हो। शायद वह उन सबको मिटाने के लिये तैयार हो गया हो, जिनका सम्बन्ध उसकी काली ज़िन्दगी से था। लड़कियों की तो आहुति पड़ चुकी और जब नम्बर उनका आया, जो सूत्रधार थे, तो उन्होंने भी सजगता दिखायी और इसके पहले कि उन पर वार हो, उन्होंने ही पाराशर पर वार कर दिया।

...कोई भी, इनमें से कोई भी सम्भावना हो सकती है।

पहाड़ियों पर, सड़क के खतरनाक मोड़ों पर एम० बी० बिजली की तरह लपकती-कौंधती जा रही थी। नीचे खड्ड थे। भयंकर खड्ड। किसी मोड़ पर सेकेन्ड के सौवें हिस्से की भी गलती, ग़फलत हो जाये तो हड्डी-पसली का पता नहीं मिलेगा। जाट ने रफ्तार गिरा तो दी, पर अब भी वह बहुत थी। उन पहाड़ों पर रेस करते हुए उसे आनन्द आ रहा था।

महाबलेश्वर की हद शुरू हो गयी थी।

...रात, उसने के. टी. एम. की ब्यूक साफ-साफ देखी थी। जोगेलकर कहता है कि उसका आक्रमणकारी पैदल भागा था और दस ही मिनट बाद पहुँचने वाले पुलिस पेट्रोल को वहाँ कोई ब्यूक नहीं दिखी या मिली थी।

के. टी. एम. ने जो लोकेशन बताया था, वह शुरू हो गया था।

सड़क के किनारे की एक दुकान के आगे एम. बी. रुकी।

दुकान में सब ही कुछ था। वह रेस्तराँ भी था और, उसमें आटे-दाल से ले कपड़ा तक मौजूद था। एक अधेड़ आदमी बैठा खाते देख रहा था।

"तुम मुझे यहाँ उस बँगले का पता बता सकते हो, जो के. टी. माहताब का है ?" जाट ने पूछा।

अधेड़ एम. बी. को देखे जा रहा था। बोला, "यह गाड़ी तुम्हारी है ? बड़ी अजीब गाड़ी है। तुम तो ड्राइवर होगे ?"

"मुझे एक बँगले का पता चाहिये," जाट ने फिर कहा।

"कितने की ली गयी थी यह ?" वह अधेड़ जाट के प्रश्न को जैसे सुन ही नहीं रहा था।

"मैं आपसे एक बँगले का पता पूछ रहा हूँ," जाट ने खिसिया कर फिर कहा।

"मैंने आज तक ऐसी गाड़ी नहीं देखी।"

जाट ने ग़ुस्से में आ लाठी ठोंक दी, और चीख़ पड़ा, "मैं आपसे कुछ पूछ रहा हूँ।"

"अरे, तो मारोगे क्या ! माहताब साहब के बँगले को कौन नहीं जानता !" वह अधेड़ घबड़ा गया, "मैं तुम्हें वहाँ तक पहुँचा दूँगा। घबराते क्यों हो, आज कल वह तो रहते हैं...वह...क़ासिम साहब। उन्हीं से मिलना है क्या ?"

जाट की साँस रुक गयी...साथ ही उसे खुशी भी हुई। जल्दी से बोला, "मुझे उन्हीं से मिलना है।"

"वह आज कहाँ मिलेंगे ! वह तो कभी-कभी आते हैं। इतवार-वितवार को वह मिल जाएँ, तो मिल जाएँ। आप उनसे बम्बई में ही मिल सकते हैं।"

www.akfunworld.wordpress.com

"वह आज भी आने वाले हैं। उन्होंने मुझसे कहा था," जाट ने कहा, "आप मुझे पता बताइये।"

"अरे...रे! आपका काम सुलझ गया। लीजिये, वह क़ासिम साहब की बेगम आ रही हैं।"

कासिम की बेगम? वह तो यही समझ रहा था कि वह खुदा से ख़ौफ खाने वाला, जो अपना खाली वक्त मस्जिद में गुजारता है, अकेला ही है। अगर उसकी बेगम यहाँ रहती है, तब तो बात बिगड़ गयी। उस हालत में यह मुमकिन शायद नहीं कि उस बँगले का इस्तेमाल कसी और काम के लिए हो रहा हो।

जाट ने बाहर देखा। एक औरत पेड़ों और झाड़ियों से होती हुई इधर आ रही थी। झाड़ियों की वजह से उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।

जाट बाहर आ गया।

वह स्त्री अब खुले में आ चुकी थी।

कासिम मुल्तानी की बेगम?

जाट के होठों में हरकत हुई। खुशी की हरकत!

वह स्त्री...नहीं, वह लड़की अब सामने थी और इन्तज़ार कर रही थी कि वह आदमी सामने से हटे, तो वह भीतर जाए।

"आदाब अर्ज़!" जाट बोला।

लड़की ने हाथ उठा आदाब किया।

"मेरा नाम गूजरसिंह किलेदार है और...नवाब मिर्ज़ा की मुझ पर बहुत मेहरबानियाँ है।"

लड़की चुपचाप सुनती रही।

"तुम अच्छी तरह तो हो नूरजहाँ बेगम?"

नूरजहाँ में अनिन्द्य सौन्दर्य था।

वह दुबली-पतली दीख रही थी। पीलेपन की परत उसके चेहरे पर थी। यह बातें यकीनन, हमेशा से नहीं थीं, पर उसकी खूबसूरती कुछ ऐसी थी, जो हर रौ से बढ़ती ही थी। उसकी आँखें साफ थीं, बड़ी-बड़ी थीं और पूरी खुलती थीं। छोटा सा माथा घने बालों के कुंज के नीचे एक घूँघट सा लिये मालूम देता था। इकहरा बदन और औसत ऊँचाई। शख्सियत ऐसी, अदब और आदाब की ही गुज़र जिसके नज़दीक होती।

"आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" नूरजहाँ ने पूछा।

"मैं तुम्हारी ही तलाश में यहाँ आया हूँ। अच्छा होगा, अगर हम लोग बँगले पर चलें। वहीं बातें हो सकेंगी," जाट ने कहा।

"यही ठीक होगा।"

जाट ने एम. बी. का दरवाज़ा खोल दिया। नूरजहाँ बिना कुछ बोले बैठ गयी। जाट ने गाड़ी बढ़ायी और बोला, "तुम बताती रहो, किधर चलना है।"

के. टी. एस. का वह छोटा सा बँगला, जो बाहर से कुछ उजाड़ सा मालूम देता था, यूँ था बहुत ही खूबसूरत। एक आराम देह ज़िन्दगी की रिहाइश के काफी सामान थे उसमें।

दोनों बैठ गये।

"मुझे तुम्हारे वालिद साहब ने भेजा है," जाट ने कहा, "तुम्हें वापस ले आने के लिये।"

"मेरा पता कैसे लगा आपको?"

"एक लड़की, जिसका नाम रेवा नारंग था, मुझे सिर्फ इतना ही बता पायी कि तुम्हें कहीं छिपा कर रखा गया है और तुम मुसीबत में हो।"

नूरजहाँ ने आँखें उठा कर उसकी ओर देखा।

"उसके बाद उस लड़की का क़त्ल हो गया," जाट ने कहा।

नूरजहाँ का निचला होंठ ज़रा सा काँप कर रह गया।

www.akfunworld.wordpress.com

"तुम तक पहुँचने के लिये मुझे दो और क़त्लों के दरियाओं से होकर गुज़रना पड़ा है ।" जाट ने बताया ।

नूरजहाँ ने फिर उसकी ओर देखा ।

"और मैं तुमसे यही कहना चाहता हूँ, कि तुम्हारी जगह उस हवेली में है, जिसमें तुम्हारे पूर्वज पीढ़ी-दर पीढ़ी इज्जत और अमन से रहते आये हैं । उन लोगों के बीच तुम्हारी जगह नहीं है, जो उठते-बैठते क़त्ल किया करते हैं और ज़ाहिर है कि क़त्ल करने से पहले वह और बहुत कुछ कर चुके होते हैं ।"

नूरजहाँ, हुस्न की मुजस्सिम तस्वीर, लेकिन खामोश थी ।

"तुम्हारे वालिद ने कुछ साफ़-साफ़ तो नहीं बताया, पर मैं जान और समझ चुका हूँ कि तुम्हारे बम्बई आने की वजह क्या है । फ़िल्म लाइन आर्ट की दुनियाँ ज़रूर है और, हर आदमी अपने भीतर की खूबसूरती का इज़हार आर्ट की शक्ल में करना चाहता है । लेकिन नूरजहाँ बेगम, फ़िल्म की दुनियाँ अभी इस काबिल नहीं है कि तुम इसमें दाखिला लो । उस वक्त के आने में, जब कोई नूरजहाँ इस लाइन में आये, अभी काफी देर है," जाट गंभीर स्वर में बोला, "औरत पहाड़ी सड़क की तरह होती है, जिसकी एक तरफ़ पहाड़ों की खूबसूरती और दूसरी ओर मौत होती है । और दोनों के बीच फ़ासला ज़रा सा ही होता है, तलवार की धार के बराबर । इस फ़ासले को भी पार करने में बहुत समय लग जाता है । फ़िल्म लाइन को अभी यह फ़ासला तय कर पहाड़ों की खूबसूरती की ओर आ जाने दो नूरजहाँ बेगम ।"

नूरजहाँ खामोश सुनती रही ।

"घर चलो नूरजहाँ बेगम," जाट ही फिर बोला, "तुम्हारे अब्बा तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं ।"

नूरजहाँ खामोश रही ।

"वह तुम्हारे अब्बा हैं । औलाद की गलतियाँ वालिद अपने दिल

में नहीं रखा करते । वहाँ मुहब्बत से कोई भी कोना खाली कहाँ रहता है, जो और कोई खयाल भी आ डेरा डाल सके । घर चलो ।"

नूरजहाँ खामोश थी ।

"तुम्हें किसी से भी अब डरने की ज़रूरत नहीं । तुम्हारी मरज़ी के खिलाफ कोई तुम्हें एक मिनट भी इस तरह कैदी बना कर अब नहीं रख सकता," जाट ने उसे आश्वासन दिया, "तुम्हारी मुसीबत के दिन अब खत्म हो गये । कोई अब नहीं रोक सकेगा । जाट गूजर सिंह की यह लाठी गिरते हुए पहाड़ को भी थाम लेगी ।"

नूरजहाँ ने सिर उठाया । फिर बहुत गंभीर स्वर में बोली, "मैं घर नहीं जाऊँगी ।"

जाट, धक्का-सा खा जैसे पीछे को हटा ।

"मैं घर नहीं जाऊँगी । यहाँ मैं क़ैदी नहीं हूँ," नूरजहाँ ने फिर कहा, "यहाँ मैं अपनी खुशी से रह रही हूँ ।"

जाट साँस भी नहीं ले सका ।

"यही अब मेरा घर है । जिसने भी मुझे यहाँ ला कर यह दुनियाँ मुझे दी है, वह मेरा सरताज है । उससे मैं मुहब्बत करती हूँ ।"

जाट की आँखें जैसे पत्थर की हो गयी थीं ।

"उससे मैं मुहब्बत करती हूँ ।" नूरजहाँ ने मज़बूत स्वर में अपनी बात दोहरायी ।

जाट ने नूरजहाँ को देखा । उसकी आँखों को देखा । नींद की हलकी परत सी उसकी आँखों में थी ।

—"मैं उससे मुहब्बत करती हूँ ।"

—"मैं उससे मुहब्बत करती हूँ ।"

नूरजहाँ इन शब्दों को दोहराती गयी और, धीरे-धीरे जैसे सोती गयी ।

"नूरजहाँ !" जाट चीखा ।

www.akfunworld.wordpress.com

"हाँ...!" नूरजहाँ की आवाज़ जैसे बहुत दूर से आ रही हो।

"नूरजहाँ, वह खूनी है, क़ातिल है। उसने अपनी जो भी तस्वीर तुम्हारे सामने पेश की हो, लेकिन उसकी असली तस्वीर मैं पिछले तीन दिनों से देख रहा हूँ," जाट बोला, "उसने तीन क़त्ल किए हैं। तीन रातों में तीन क़त्ल..."

"यह सब झूठ है," नूरजहाँ बीच ही में चीख उठी।

"कानून अपने हाथ फैलाए उसकी ओर बढ़ रहा है। उसकी अब असली जगह फाँसी का तख्ता । उसका सामाजिक स्थान या उसका पैसा उसे उस जगह तक पहुँचने से रोक नहीं सकते," जाट बोला, "उसका खयाल, या उसका साथ तुम्हारी ज़िन्दगी खराब कर देंगे। होश में आओ। होश में आओ नूरजहाँ।"

बहुत दूर से जैसे आवाज़ आयी, "यह सब झूठ है...झूठ है..."

जाट मुस्कराया।

उसके कानों में सोमा राय के शब्द गूँजे—'वह सम्मोहन विद्या जानता है। वह हिप्नोटाइज़ कर देता है।...'

नूरजहाँ कह रही थी, "मैं उससे मुहब्बत करती हूँ।"

जाट उठ खड़ा हुआ और बोला, "वक्त बहुत कम है नूरजहाँ। वह आ रहा है। उसके आने के पहले अगर हम यहाँ से चले नहीं गये, तो यहाँ सिर्फ खून-खच्चर होगा। हो सकता है मैं, तुम और वह सब मारे जाएँ। हमें अभी यहाँ से चल देना है। चलो।"

"मैं नहीं जाऊँगी। मैं कहीं नहीं जाऊँगी।"

जाट आगे बढ़ा, "मैं तुम्हें ले जाने के लिये आया हूँ नूरजहाँ।"

उसने नूरजहाँ का हाथ पकड़ा ही था कि तड़ाक से उसके चाँटा पड़ा। और वह तेज़ स्वर में बोल उठी, "तुम मुझे नहीं ले जा सकते। उसकी इजाज़त के बगैर मैं कहीं नहीं जा सकती।"

"वक्त बहुत कम है नूरजहाँ। वह आ रहा है।"

"उसे आ जाने दो। तुम्हें मैं भरपूर सज़ा दिलवाऊँगी।"

"मैं मजबूर हूँ। मुझे ज़बरदस्ती करनी पड़ेगी।"

नूरजहाँ चीख पड़ी। जाट ने उसके हाथों को पकड़ लिया। नूरजहाँ ने उसे जगह-जगह काट खाया। जाट चुपचाप अपना काम कर रहा था। उसने उसके हाथों को अच्छी तरह बाँध दिया और फिर उसे उठा कर कन्धे पर डाल लिया।

वह चीखती रही, चिल्लाती रही, काटती रही।

जाट ने उसे ले जा एम. बी. में रखा। उसकी चीखें गूँज रही थीं। जाट ने अपनी लाठी रखी और एम. बी. को स्टार्ट किया। तब ही...

जाट मुस्कराया।...तो वक्त आ ही पहुँचा!

ठीक सामने चिर-परिचित ब्यूक थी, जो अब एक फ़र्लाङ्ग की दूरी पर बँगले के गेट में प्रविष्ट हो रही थी।

अब बात सेकेण्डों की थी। एक-एक सेकेण्ड की कीमत थी। जाट ने एक्सीलरेटर दबाया और, एम. बी. तीर की तरह छूट गयी। ब्यूक के बगल से रगड़ खाती वह निकल गयी।

जाट ने बैक व्यू मिरर में देखा। ब्यूक पलट रही थी।

जाट के कानों के पास से एक गोली निकल गयी। विन्ड स्क्रीन तड़ाक से चूर हो गया।

जाट को फिर भी एम. बी. पर भरोसा था। ब्यूक उसे नहीं पकड़ सकती। उसे फ़ासला बढ़ाते ही जाना है, गोलियों की पहुँच के बाहर।

"अपना सिर नीचा कर लो नूरजहाँ।"

"मैं उसके हाथ से मरना भी पसन्द करती हूँ।"

पहाड़ी सड़क शुरू हो गयी थी। जगह-जगह मोड़ थे। बाएँ हाथ पर सैकड़ों फीट गहरे खड्ड थे। हर मोड़ पर एम. बी के टायर दहाड़ते और, बराबर जगह पर मुड़ कर सड़क पर आ जाते।

www.akfunworld.wordpress.com

सिर के ऊपर से फिर एक गोली निकल गयी। एक और गोली एम. बी. की बॉडी पर लगी।

जाट ने स्पीड बढ़ायी। साठ...सत्तर। और फिर उन पहाड़ियों पर, उस सड़क पर, जहाँ ज़िन्दगी और मौत के बीच बाल बराबर फ़ासला था, एम. बी. अस्सी की रफ़्तार से लपकने लगी। उसके टायर दहाड़ते रहे। जाट को उस रेस कार से एक बार फिर और इस बार बेपनाह मुहब्बत हो आयी।

बैक व्यू मिरर में ब्यूक अब भी चमक रही थी।

गलती हो गयी। जाट ने अब समझा कि उस गाड़ी में भी रेस कार का ही इन्जन फ़िट है। और जो उसे चला रहा है, उसे वह अच्छी तरह पहचानता है। वह खुद शायद एम. बी. की रफ़्तार और न बढ़ाए, लेकिन पीछे की गाड़ी का ड्राइवर, जिसकी जिन्दगी कारों के बीच गुज़री है, जो आधे टन स्टील को एक घन्टे में कार की शक्ल में बदल सकता है, वह इस पहाड़ी सड़क पर सौ से भी ऊपर की स्पीड पकड़ लेने में हिचकेगा नहीं।

सिर पर बँधी पगड़ी के बीच में से कपड़े को जलाती एक गोली निकल गयी।

मोड़ और खतरनाक हो गये थे। दस-दस सेकेण्ड पर अब मोड़ आ रहा था। वफ़ादार एम. बी. गोली की तरह से छूटती और दहाड़ती चली जा रही थी।

बैक व्यू मिरर में जाट ने देखा कि पिछले मोड़ पर ब्यूक आ गयी। बाल बराबर जगह को उसके व्हील भी पार कर गये।

सर्र्र्...। कान का चमड़ा जल रहा है, जाट को लगा।

वे मोड़ ही जाट को बचा भी रहे थे, नहीं तो कोई न कोई गोली उसकी खोपड़ी को अब तक तोड़ चुकी होती।

अब चढ़ाई बढ़ रही थी। पहाड़ ऊँचे होते गये। एम. बी. का इंजन दहाड़ रहा था।

बैक व्यू मिरर में ब्यूक फिर चमकी। जाट की साँस रुक गयी। फ़ासला कम होता आ रहा है।

जाट का पैर एक बार काँपा और, फिर एक्सीलेटर और दब गया। स्पीडोमीटर में सूई नब्बे पर नाचने लगी।

पहाड़ ऊँचे होते गये।

एक गोली फिर आयी और जाट के बाएँ बाजू का गोश्त जल गया। खून भल्ल् से निकल पड़ा। स्टीयरिंग पर हाथ एक बार काँप गये।

और आगे वह मोड़ है। मौत का मोड़। पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर का मोड़। बायीं ओर डेढ़हज़ार फीट से ज्यादा गहरा खड्ड।

दस सेकेण्ड के भीतर एम. बी. वहाँ पहुँचने वाली थी।

एम. बी के अगले व्हील आधे से ज्यादा सड़क के नीचे उतर गये।

वह समय ही कितना था! एक सेकेण्ड का हज़ारवाँ हिस्सा। जाट के दिल ने उस हिस्से में धड़कन बन्द कर दी। जाट, सेकेण्ड के उस हज़ारवें हिस्से में सचमुच मृत था।

एक सीमा होती है, जहाँ तक इन्द्रियाँ काम करती हैं, चेतना के साथ काम करती हैं, चेतना के साथ काम कर पाती हैं। उसके बाद एक दूसरी ही चेतना, जो मन के भी वशीभूत नहीं होती, आ जाती है और फिर सारे व्यापारों को, कार्य-कलापों को अपने हाथ में ले लेती है।

उस चेतना की जाग्रति हो गयी।

व्हील सड़क पर फिर आ गये। एम. बी. की बॉडी का पिछला हिस्सा सड़क छोड़ कर हवा में झूला और फिर सड़क पर आ गया।

और एम. बी. बिजली की तरह कौंध कर आगे लपक गयी।

बैक व्यू मिरर में जाट ने पीछे छूट गये मौत के मोड़ को देखा और ब्यूक को भी, जो मौत के उसी मोड़ पर आ गयी थी। ब्यूक में से एक

www.akfunworld.wordpress.com

हाथ बाहर निकला है और उसमें रिवॉल्वर है और फिर उस रिवॉल्वर में से आग निकली।

और मौत के उस मोड़ पर ब्यूक पूरा मोड़ न ले पायी।

वह दृश्य, जो उस निमिष् में जाट को दिखा, कभी भी उसकी स्मृति पटल पर से धुल न सकेगा। सड़क छोड़ कर ब्यूक खड्डे के ऊपर उड़ रही थी।

जाट ने एम. बी. के ब्रेक लगाए। काफी आगे जा एम. बी. हाँफती हुई रुक गयी।

वह भयंकर गर्जना, रोंगटे खड़े कर देने वाली वह आवाज़, जो कुछ देर पहले गूँज कर खामोश हो गयी थी, अभी भी कानों में भरी हुई तड़प रही थी।

•

इन्स्पेक्टर जोगेलकर बहुत चुस्त, कार्य-दक्ष और कर्त्तव्य-परायण दीख रहा था।

ठीक उसके पीछे उसका असिस्टेन्ट हमेशा की तरह नोट बुक और पेन्सिल लिए तैयार खड़ा था।

"खड्ड में उतर कर जब हम लोग दुर्घटना स्थल तक पहुँचे, तो उससे पहले ही वह दोनों मर चुके थे," जाट ने बताया, "वहाँ फिर एक और दिलचस्प नाटक हुआ। उन दोनों की लाशें नूरजहाँ ने जैसे ही देखीं, वह ठठा कर हँसी। हँसती रही, फिर रोने लगी। फिर वह एक दम ही उठ खड़ी हुई और, उसकी लाश के पास खड़े हो...यकीन कीजिए... हालाँकि वह बड़ा भयावाह और वीभत्स था, फिर भी...उसने अपने पैर से ठोकरें मारीं, उसकी लाश को ठोकरें मारीं, जिसके लिए वह कुछ ही देर पहले कह रही थी...'मैं उसके हाथों मरना भी पसन्द करूँगी।' वह रोती रही और कहती रही... 'इसने मुझे बरबाद किया है...मेरी ज़िन्दगी इसने तबाह कर दी...'..."

"ऐसा क्यों कर हुआ मिस्टर गूजरसिंह जी?" जोगेलकर ने पूछा।

जाट हँसा। बोला, "सम्मोहित करने वाला, मेस्मेराइज़ करने वाला मर चुका था। और उसके साथ ही साथ उसका सम्मोहन भी समाप्त हो चुका था।"

"आपने कमाल कर दिया गूजरसिंह जी," जोगेलकर बोला, "हम सब आपके आभारी हैं।"

जाट लेकिन उदास था। धीरे से बोला, "ऐसा मत कहो। मैंने बहुत गलतियाँ की हैं। ऐसी गलतियाँ, जो अगर न होतीं, तो शायद तीन बेगुनाह-मासूम लड़कियों की जानें बच जातीं। उनके गलों पर क़ातिल का छुरा न फिर पाता। सबसे पहली गलती उसी समय हो गयी, जब मैं बम्बई आया और सेसिल होटल में पहुँचा। गलती आज सुबह फिर हुई। एक आदमी बीमार सा लग रहा था और कह रहा था कि उसे बाई की तकलीफ है, जो अक्सर परेशान कर जाती है। मुझे याद करना चाहिए था कि रात जिस आदमी ने चादर उढ़ा कर मुझ पर हमला किया था, मैंने भी उसके पेट में इतने कस-कस के घूँसे मारे थे कि उसकी भी तबीयत का खराब हो जाना ज़रूरी ही था।"

"होटल में आपने क्या गलती की थी?" जोगेलकर ने चौंक कर पूछा। वह अब जाट को गौर से देख रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि साधारण सा दीखने वाला यह गँवार-जाट साधारण नहीं है। वह कुछ और भी है।

"मुझसे एक आदमी बहुत ही नाटकीय ढंग से आ कर मिला। हर आदमी का मुझसे बिदकना और बिचकना स्वाभाविक था, लेकिन मेरा वह 'हम वतन' मेरे गले लग रहा था। साठ लाख की आबादी के इस शहर में जो पहला आदमी मुझसे मिला, घुल-मिल गया, मेरा जिगरी दोस्त बन गया, वह वही हो सकता है जिसने नूरजहाँ को गायब कर रखा था, इस पर ध्यान और विश्वास नहीं जा सकते थे, लेकिन उन्हें जाना

www.akfunworld.wordpress.com

चाहिये था, क्योंकि सब कुछ बहुत अस्वाभाविक था," जाट ने कहा, "और यह अफ़सोस मुझे ज़िन्दगी भर रहेगा कि इस ओर मेरा ध्यान क्यों नहीं गया।"

"नूरजहाँ पर उसकी नज़र कब पड़ी थी?" जोगेलकर ने पूछा।

"मेरा स्वर्गीय 'हम वतन' एल. एल. राय, यानी लॉरेन्स लॉज राय, पानीपत या सोनीपत का रहने वाला नहीं था, लेकिन पानीपत गया ज़रूर था। वहीं उसने नूरजहाँ को देखा और, उस लड़की को उड़ा लेने के लिये, उसे बम्बई ला अपने पास रखने के लिये पागल हो उठा। नूरजहाँ के घर के नौकर मुश्ताक ने अपने मालिक से ग़द्दारी की और, एल. एल. राय के रुपये के आगे बिछ उससे मिल गया," जाट बोला, "नूरजहाँ फ़िल्म लाइन के लिए दीवानी थी। अबोध, अनुभव-शून्य लड़की थी। मुश्ताक ने उसे एल. एल. राय का परिचय फ़िल्म प्रोड्यूसर के रूप में उसे दिया और, वह उससे मिलने को तैयार हो गयी। राय ने दोनों को बम्बई आने की दावत दी। मुश्ताक पहले चला आया और नाम बदल कर कासिम मुल्तानी बन राय के दोस्त कुण्डली बोरकर के यहाँ फ़ोटोग्राफर के रूप में लग गया, जब कि ज़िन्दगी में उसने कभी कैमरा देखा तक नहीं था।"

जोगेलकर ग़ौर से जाट के चेहरे की ओर देखे जा रहा था।

"नूरजहाँ ने नवाब मिर्ज़ा के सामने उल्टे-सीधे बहाने रखे और बम्बई चली आयी," कुछेक क्षणों बाद जाट ही फिर बोला, "राय उसे सम्मोहन में कसता गया। उधर मुश्ताक की मारफ़त के. टी. एम. का महाबलेश्वर का बँगला लिया जा चुका था। नूरजहाँ को वहाँ ले जा रखा गया। राय का इरादा उसे 'राय गर्ल' बनाने का शुरू से था, फिर बदल गया। उसे अपनी रखैल ही बनाना चाहा उसने। तारीफ़ की बात यह थी, कि राय वहाँ महाबलेश्वर में कासिम मुल्तानी के नाम से जाता था। वहाँ लोग उसे ही कासिम मुल्तानी ही समझते थे।"

जोगेलकर बोला, "हूँ! फिर?"

"राय जानता था कि नूरजहाँ की तालाश में जो भी आयेगा, वह पहले होटल सेसिल में ही आएगा। होटल में वह रोज़ ही टोह लेता रहता था। वहीं वह मुझसे मिला और पहली नज़र में उसे मुझ पर शक हो गया था। उसने मुझसे दोस्ती बढ़ा ली, ताकि मेरी प्रगतियों का का उसे पता चलता रहे और मौका मिलने पर मुझे भी रास्ते से हटाया जा सके।" जाट ने बताया।

"आलम साब वैसे किसका नौकर था?" जोगेलकर बोला।

"नौकर था वह के. टी. एम. का और आदमी था राय का," जाट ने कहा, "वह पागल इसी में खुश था कि राय से उसने एक योग्य आदमी को हथिया लिया है, जब कि आलम साब की शक्ल में राय का जासूस उसके घर में दाखिल हो गया था और, राय के किये हुए क़त्लों को उस निर्दोष के मत्थे मढ़ने में पूरी मदद कर रहा था।"

"राय की स्कीम तो बहुत ख़तरनाक थी," जोगेलकर ने कहा, "हम तो ज़िन्दगी भर उस पर या आलम पर शक नहीं कर सकते थे। यह तो आपकी ही बदौलत असली अपराधी प्रकाश में आ सके।"

"आलम का जो व्यवहार मैंने पहले दिन देखा था, उसी से मुझे सम्हल जाना चाहिये था कि यह आदमी हक़ीक़त में 'नौकर' या 'ड्राइवर' नहीं है। वह काफी तगड़ा और मज़बूत आदमी था और मेरा ध्यान इस पर भी जाना चाहिये था कि हो सकता है, हमलावर वह ही हो," जाट ने कहा, "यह भी मेरी एक ग़लती थी। लड़कियों का क़त्ल जब कि राय ने खुद किया, मेरे खात्मे का ज़िम्मा आलम साब के हवाले कर दिया गया था। और उसने इसके लिये कोशिश भी की। दो बार कोशिश की।"

"तो आलम का लड़कियों की हत्या में कोई हाथ नहीं था?"

"लड़कियों का क़त्ल उसने नहीं किया लेकिन, क़त्ल के समय वह

www.akfunworld.wordpress.com

मौजूद ज़रूर था और हो सकता है, हाथ भी बँटा रहा हो। के. टी. एम. अपनी गाड़ियाँ उस 'योग्य' आदमी के हवाले छोड़ कर निश्चिन्त रहता था और, वह गाड़ियाँ राय के काम आती थीं। रेवा का गला काट कर जैसे ही राय गया, मैं वहाँ पहुँच गया था। आलम साब उस समय घटना स्थल पर ही था। मौका ठीक देख वह मेरे ऊपर टूट पड़ा, लेकिन मैं बच निकला," जाट बोला, "कल शाम मेरा पीछा हो रहा था। मैं राबिया के फ्लैट में गया तो हिदायत पा वह भी ब्यूक में वहाँ पहुँच गया और जैसे ही मैं बाहर निकला, मुझ पर चादर फेंक उसने आक्रमण कर दिया। उसे भागते देखा था लोगों ने, लेकिन पहचाना तो नहीं था। इसलिये आगे जा कर अगर वह बड़ी ही स्वाभाविकता से लौटा और एक शरीफ आदमी की तरह गाड़ी में बैठ, गाड़ी को चुपचाप आगे बढ़ा ले गया, तो इस पर किसी को शक कहाँ हो सकता था। हो सकता है, उस गाड़ी को भी वह ही चला रहा हो, जिस पर से राबिया को क़त्ल कर के नीचे धकेल दिया गया था।"

"राय ने लेकिन यह क़त्ल किये क्यों, जब कि वे लड़कियाँ उसके लिए कीमती थीं?" जोगेलकर ने पूछा।

"इसलिये कि लड़कियों की मारफत इस शहर के धनिकों को ब्लैक मेल किया जाता था और उन लड़कियों में से, कम से कम, राका ने पलट कर ब्लैक मेलर को ही ब्लैक मेल करना चाहा था," जाट ने कहा, "राय और कुण्डली बोरकर व्यवसाय के प्रतिद्वन्द्वी नहीं थे, बल्कि साझीदार थे। लड़कियाँ राय की होती थीं और स्टूडियो कुण्डली का। उस स्टूडियो में 'बायस्कोप' भी दिखाए जाते थे और, जब यह विलासी धनिक वहाँ के शयनकक्ष में ऐश करते रहते थे, तो उन्हीं 'टू वे मिरर' में उनके उस समय के फ़ोटो भी उतार लिये जाते थे। इसकी खबर न लड़की को होती थी और, न लड़की के खरीदार को। वे फ़ोटो फिर इज्ज़त की खरीदार बन जाती थीं और फिर रुपया खिंच कर राय और कुण्डली के पास आने

लगता था। हमारा बेचारा के. टी. एम. भी इस तरह अपनी हरकतों की काफी कीमत दे चुका था और, फिर भी राय पर रोष प्रकट कर लेने के बाद ज़बान सी लेने के लिए मजबूर था, क्योंकि राय देखते-देखते उसकी इज्ज़त धूल में मिला सकता था। उस रात राका की लाश के नीचे उसे तालाश किस चीज़ की थी, जानते हो? उसे तालाश उन अश्लील चित्रों की थी। उसका खयाल था, शायद वह वहाँ हों।"

"ओह! तुम तो बिलकुल गहराई तक बाहर से आकर पहुँच गये और हम यहाँ रह कर भी कुछ पता नहीं लगा सके।"

जाट हलके से मुस्करा कर बोला, "यह तो अपनी नज़र और कार्य-प्रणाली है। अपराधियों ने अपनी प्रणाली बदल दी है। पुलिस और गुप्तचर विभाग भी अगर अपनी कार्य-प्रणाली नहीं बदलेगा, तो सफलता कभी नहीं मिलेगी। आप लोगों की असफलता का यही कारण है। हाँ, तो मैं ब्लैक मेलिन्ग की बात कर रहा था। इस तरह की ब्लैक मेलिंग आगे चल कर इन लड़कियों से, कम से कम, छिपी नहीं रह सकती थी, जो उन चित्रों में होती थीं। फिर भी कुछ अपनी ही इज्ज़त के खयाल और कुछ अपने मालिकों के खौफ से वह खामोश रहने के लिए मजबूर थीं। राका ने लेकिन विद्रोह किया। वह राय और कुण्डली के और रहस्यों से भी शायद परिचित हो गयी थी। उसका उसने भण्डा फोड़ कर देने की धमकी दी और, रुपया माँगा। राय उस रात ग्यारह बजे उससे मिला, उसके साथ बड़ी नरम दिली से पेश आया। उसे के. टी. एम. की गाड़ी में घुमाता रहा। ड्रिंक कॉरनर से शराब पिलाता रहा। और फिर आलम साब ने गाड़ी वापस रखने के लिए के. टी. एम. की कोठी का रुख किया। वहाँ राका का गला काट डाला गया। उसे अपने ऊपर मँडराते खतरे का जरा भी आभास नहीं था। इसीलिए उसकी आँखों में स्तब्धता थी, भय नहीं।"

"और रेवा नारंग का क़त्ल भी शायद इसीलिए हुआ?"

www.akfunworld.wordpress.com

"नहीं। राका की हत्या का रहस्य शायद रेवा तक पहुँच गया था। वह राय से और उसके साथियों से नफ़रत करती थी। उसे और भी रहस्य मालूम थे। उसे कासिम और नूरजहाँ के भी रहस्य मालूम थे। वह राय को तबाह कर देने लिए मेरी ओर बढ़ी," जाट ने कहा, "लेकिन उसकी बदकिस्मती कि मुझसे बात करते उसे राय ने देख लिया। उस रात उसका पीछा किया गया। वह पार्टी से सीधी यहाँ मेरे पास मुझे सब कुछ बता देने के लिए आ रही थी। राय ने उसी रात, उसी घड़ी उसे खत्म कर देने का फैसला कर लिया। अगर उस रात वह के. टी. एम. की कोठी और न आती, तो शायद उस रात बच जाती। एक-दो दिन और जीती रहती। या हो सकता था, पाँसा ही पलट जाता। मैं, उस रात जो कुछ हुआ, उसकी कल्पना कर सकता हूँ। उसे मालूम हो गया कि उसका पीछा हो रहा है। वह भागी। दौड़ी। उसे दौड़ाया गया। वह के. टी. एम. की कोठी में मुझ तक पहुँच निरापद होना चाहती थी। उसे, लेकिन रास्ते ही में, जब वह कम्पाउण्ड के भीतर पहुँच चुकी थी और, कोठी से कुछ ही दूरी पर थी, पकड़ लिया गया। बेरहम राय ने उसका गला काट डाला और आलम साब, जिसने शायद उसके हाथ-पैर पकड़ रखे थे, चुपचाप देखता रहा। उसने मौत को पास, बहुत पास आते देखा था और उसकी तस्वीर उसकी आँखों में नक्श हो कर रह गयी।"

"ओह!" जोगेलकर को जैसे झुरझुरी उठ आयी, "आदमी इतना नृशंस भी हो सकता है!"

"दो हत्याएँ कर लेने के बाद राय हर उस आदमी के लिए खतरा बन गया था, जो उसके ग्रुप का होता और मेरी ओर बढ़ता, मेरा दोस्त बनता। मैं राबिया से मिलने उसके फ़्लैट पर गया, और उस तक यह खबर तुरन्त पहुँच गयी। राबिया के जीवन के पटाक्षेप का निर्णय तुरन्त हो गया। मेरा राबिया के फ़्लैट पर उससे मिलने जाना ही उसकी मृत्यु का कारण बन गया। वह मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी भूलों में से एक भूल थी और, राबिया की मृत्यु का कारण मैं स्वयम् हूँ। अपने आपको मैं इसके लिए कभी क्षमा न कर सकूँगा।" जाट का स्वर काँप रहा था। राबिया की मासूम सूरत उसकी आँखों के आगे आ गयी थी।

के. टी. माहताब लपकता आया। वह बहुत खुश था। उसके चेहरे पर से झाइयाँ हट चुकी थीं। उसने गूजरसिंह के कन्धे थपथपाए, उसे शाबाशी दी, उसके गले से लिपट गया।

"मै तुमसे बहुत ग्लैड हूँ यंग ब्वाय। तुमने बहुत रिमार्केबल काम किया है," के. टी. एम बोला।

"लेकिन आई ऐम नाट खुश विद यू ओल्ड ब्वाय, बिकाज़ ऑफ यू दिस मामला बिकेम वेरी-वेरी खराब।"

जोगेलकर जाट की भाषा पर बे तरह चौंक पड़ा और उसका मुँह देखने लगा।

"खराब!...कैसे खराब?"

"तुम्हें बताना चाहिए था कि तुम्हें ब्लैक मेल किया जा रहा है," जाट के बोलने के पहले ही जोगेलकर बोल उठा, "तुमने सबूत को छिपाया और इस तरह से अपराधियों को बचाते रहे।"

जाट आश्चर्य से देखता रह गया। इन्स्पेक्टर जोगेलकर बिगड़ रहा था और, वह भी के. टी. एम. पर।

"यह आपने बहुत खराब काम किया। आपको मालूम है, पुलिस से सबूत को छिपाना कितना पड़ा जुर्म है?" जोगेलकर फिर बोला।

के. टी. एम. की मुद्रा यूँ हो गयी, जैसे क्लास में टीचर ने डाँट दिया हो। धीरे से बोला, "अरे भई, मैं क्या करता!...उधर राय के आदमी मुझे आँख दिखाते थे, इधर आप दिखाते हैं।"

जोगेलकर के असिस्टेण्ट ने इसे अपनी नोट बुक में लिख लिया।

www.akfunworld.wordpress.com

"तो क्या हुआ ! आँख ही तो दिखाते थे, ठेंगा तो नहीं दिखाया !" जाट ने मुस्कराते हुए कहा।

असिस्टेन्ट ने यह भी नोट कर लिया।

"हाँ, जिस दिन मैं पहली बार आपसे मिला, उसी रात आप मुश्ताक के साथ...मेरा मतलब कासिम मुल्तानी के साथ घूम रहे थे। क्या बात थी ?" जाट ने पूछा।

"राय हरामज़ादा था।" के. टी. एम. के होंठ नफ़रत से सिकुड़ गये।

"जी हाँ ! यह सत्य हो अब पूर्णतया स्थापित हो चुका है।"

"मुझसे लाखों पी गया, पर उसका पेट नहीं भरता था। उस दिन कासिम के हाथ उसने एक फ़ोटो भेजी और फ़रमान भेजा कि दस हज़ार की थैली ले कर रात को उससे उसके बँगले पर सलामी बोलूँ। क्या करता मैं ! रुपया ले कर गया। कासिम मुझे ले कर उस रात आ रहा था। तुमको देख कर ही गाड़ी आगे बढ़ा दी गयी थी, रोकी नहीं गयी। हम लोग फिर लौट कर आये थे। मुझको एक चोर कमरे में बैठाया गया। उधर हाल में सब साले नाच-गा रहे थे। राय आया और मुझसे थैली छीन कर उसने तुरन्त मुझे चले जाने के लिए कहा। हरामज़ादे ने मुझे एक गिलास शराब तक लिये नहीं पूछा।"

"मिस्टर के. टी. एम. ! आप जानते नहीं, यहाँ शराब बन्दी लागू है ?" यह महाशय जोगेलकर थे।

"मुझ पर कोई बन्दी, कोई क़ानून लागू नहीं होते।"

असिस्टेन्ट ने इसे नोट कर लिया।

जोगेलकर डपटा, "क़ानून, क़ानून है।"

असिस्टेन्ट ने सिर झिटका। बिलकुल !

जाट ने जोगेलकर से पूछा, "महाशय कासिम मुल्तानी कहाँ हैं ? और कुण्डली बोरकर ?"

जोगेलकर ने पीछे की ओर अँगूठे से इशारा करते हुए कहा, "पुलिस लॉक अप में तशरीफ़ ला चुके हैं।"

"पी. पी. पाराशर का पता चला ?" जाट ने पूछा, "उस दुधारू गाय को भी भाइयों ने काफी दुहा था।"

"वह भी एक बदज़ात है। राय का वह 'फ़ेमिली डाक्टर' था। इस 'फ़ेमिली डाक्टर' का मतलब समझा आपने ? नहीं ? वास्तव में, सोमा राय पाराशर की रखैल थी। सोमा राय को जब दौरा पड़ा करता है, तो वह पाराशर के 'इलाज' से ही ठीक होती है। इस 'इलाज' का मतलब अब आप खुद ही समझ जाइए। पिछली रात, जनाब की जब हर जगह तलाश हो रही थी, तो आप सोमा राय का 'इलाज' कर रहे थे। उन्हें दौरा पड़ा था और उन्होंने राय की खोपड़ी पर एक बोतल फोड़ कर उसे घर के बाहर कर दिया था और, अपने 'डॉक्टर' को बुलवा भेजा था। राय इस 'डॉक्टर' की कारगुज़ारी जानता था, पर साथ ही दुधारू गाय की लात सहने को मजबूर भी था," जोगेलकर ने कहा।

के. टी. यम. बोला, "हाँ, तो माई ऑनरेबल गेस्ट गूजर सिंह ! तुमने रियली वेरी रिमार्केबुल वर्क किया है। स्पीक, कितना रुपया दूँ। कैश लोगे या चेक ?"

"मिस्टर के. टी. यम !"

जाट के स्वर पर के. टी. यम., जोगेलकर और उसका असिस्टेन्ट, तीनों बेतरह चौंक पड़े।

"तुमने आज तक रुपयों से बहुत से आदमियों को खरीदा है। यहाँ की पुलिस भी इसी वजह से तुम्हारी इतनी इज्ज़त करती है। लेकिन के. टी. यम., रुपये से सभी आदमियों को नहीं खरीदा जा सकता, इस बात को याद रख लो," जाट बोला, "और उन बदकिस्मत आदमियों से एक मैं भी हूँ। मैं नूरजहाँ बेगम का पता लगाने के लिए भेजा

www.akfunworld.wordpress.com

Bijay's Scan

गया था। वह मेरा अपना काम था, तुम्हारा नहीं। बीच में अगर मुझे जरा सा भी शक हो गया होता कि नूरजहाँ को गायब करने में तुम्हारा भी हाथ है, तो मेरे एक इशारे पर तुम जेल के अन्दर होते और बम्बई का पूरा पुलिस विभाग तुम्हारी मदद न कर पाता।"

जोगेलकर की आँखें जाट के चेहरे पर ही लगी हुई थीं।

"यह क्या बोलता यंग ब्वाय! तुम क्या खा के मुझ को बन्द करवा देता! और फिर रुपया तो मैं तुमको बतौर बख्शीश दे रहा हूँ।"

"मिस्टर के. टी. यम., अभी आप मुझे नहीं जानते, नहीं तो ऐसा बोलने की हिम्मत भी नहीं करते," जाट बोला, "खैर, छोड़ो इसे। हाँ, एक बात समझ लो कि सरकारी आदमियों को बख्शीश दे कर खरीदने की कोशिश अब छोड़ दो।"

"तुम तो पानीपत के जाट हो! यही बताया था न तुमने? फिर इतनी ही देर में तुम सरकारी आदमी कैसे हो गये?" के. टी. यम. आश्चर्य से बोला।

जोगेलकर भी बोला, "हाँ तो मिस्टर गूजर सिंह किलेदार, कौन हैं आप? जिस तरह से आपने इस केस में काम किया है, उससे सन्देह तो मुझे भी है कि जो कुछ आप दीख रहे हैं, वास्तव में आप वह हैं नहीं।"

अपनी ही बातों के जाल में जाट फँस गया था। उसे आदेश था कि बिना अपना असली परिचय दिये वह काम कर के लौट आये। लेकिन उसकी अपनी ही गलती से स्थिति बदल गयी थी। कुछेक क्षणों बाद बोला, "मैं दिलीप हूँ, केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के नागपाल जी का असिस्टेन्ट!"

"आ...प?"

"हाँ!" दिलीप अब मुस्करा रहा था।

जोगेलकर ने तगड़ा सैल्यूट मारा और, उसकी देखा-देखी उसके असिस्टेन्ट ने भी।

के. टी. यम. आश्चर्य से दिलीप के चेहरे की ओर देखता रह गया।

●

बम्बई सेन्ट्रल स्टेशन!

दिल्ली जाने वाली ट्रेन के फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में नूरजहाँ बेगम बैठी थी। उदासी आज उसके सुन्दर चेहरे पर नहीं थी। बिना किसी अपराध के जेल में बन्द हो जाने वाला आदमी जब छूटता है, तो उसके चेहरे पर जो मुस्कान होती है, वैसी ही मुस्कान नूरजहाँ बेगम के चेहरे पर थी।

दिलीप प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा था। के. टी. यम., जोगेलकर, भातखण्डे और दूसरे पुलिस अधिकारी उसे विदाई देने आये थे।

"अगर मुझसे कोई गुस्ताखी हो गयी हो, तो मैं क्षमा चाहूँगा," जोगेलकर ने कहा।

"नहीं नहीं। आपका व्यवहार तो बहुत अच्छा रहा," दिलीप ने कहा, "हाँ, जाते समय इतना अवश्य कहूँगा कि क़ानून की दृष्टि में सब बराबर हैं, इसका खयाल हमेशा रखिएगा।"

"कम से कम अपनी ओर से मैं आप को आश्वासन देता हूँ कि भविष्य में ऐसा ही होगा," जोगेलकर बोला।

के. टी. यम. कुछ कहने ही जा रहा था, कि इंजन ने सीटी दी और दिलीप उछल कर डिब्बे में चढ़ गया।

ट्रेन चल पड़ी, लेकिन वह दरवाजे के पास ही खड़ा हाथ हिलाता रहा।

और जब वह अपनी सीट पर आ कर बैठा, तो नूरजहाँ ने एक बड़ा सा लिफाफा उसकी ओर बढ़ाया, "यह के. टी. यम. ने आप के लिए दिया है।"

www.akfunworld.wordpress.com

"मेरे लिए ?" दिलीप बोल उठा और जब लिफाफा उसने खोला तो उसमें हजार-हजार वाले बीस नोट झाँकते हुए दिखाई दिये।

गुस्से में भर कर वह लिफ़ाफ़ा बाहर फेंकने ही जा रहा था कि नूरजहाँ ने उस का हाथ पकड़ लिया और बोली, "रुपयों को यूँ नहीं फेंकते। और फिर के. टी. यम. ने जिस श्रद्धा से इसे दिया है, उसका अपमान नहीं होना चाहिए।"

"लेकिन..."

नूरजहाँ बीच ही में बोल उठी, "इन रुपयों को आप मत इस्तेमाल कीजिए। इनसे आप अपनी बीवी के लिए कुछ प्रेज़ेन्ट्स खरीद लीजिए! वे भी खुश हो जाएँगी।"

"बात तो लेकिन वही हुई और फिर मेरी होने वाली पत्नी को अभी तक तुम ने नहीं देखा है। ये रुपए कैसे हैं, पता चलते ही वह मेरे सर की मलीदा बना देगी।"

मुस्करा आयी नूरजहाँ ने कहा, "राय के फन्दे से बचा कर आपने के. टी. यम. पर अहसान किया है, नहीं तो वह जिन्दगी भर राय को रुपया देते-देते एक दिन कंगाल हो जाता। उसी अहसान को उतारने के लिए ये रुपए उसने दिए हैं। अहसान आप ने मुझ पर भी किया है, नहीं तो मैं...मैं भी बरबाद हो जाती। खैर, इन रुपयों को आप मेरे पास रहने दीजिए। इनमें कुछ अपनी ओर से मिला कर मैं आपकी होने वाली बीवी को खुद ही प्रेज़ेन्ट दूँगी। नहीं नहीं, अब आप कुछ मत बोलिए। उन्हें मैं मना लूँगी।"

दिलीप खामोश हो गया।

—बस—

स्वत्वाधिकारी चन्द्रिका प्रसाद टंडन द्वारा रूपसी प्रेस, इलाहाबाद-३ से मुद्रित, तथा उन्हीं द्वारा नीता प्रकाशन, १० न्यू बहराना, इलाहाबाद-३ से सम्पादित और प्रकाशित

'गुप्तचर' के अगले अंक में प्रकाशित होने वाले

निरंजन चौधरी के नये जासूसी उपन्यास

भगतराम मर्डर केस

को हलकी-फुलकी झलकियाँ

- आगरे का प्रमुख व्यवसायी, सेठ भगतराम! करोड़पति। परिवार में केवल उनका लड़का दयाराम और उनकी लड़की केशरी।
  सेठ भगतराम के जीवन के दो पहलू हैं। एक पहलू में वह प्रमुख व्यवसायी, कर्ण जैसा दानी और धर्मात्मा है। उसका दूसरा पहलू बहुत ही रंगीन है। वृद्धावस्था में भी उसे 'स्वाभाविक और संगत' ज़रूरतों की पूर्ति के लिए एक युवती की ज़रूरत पड़ती है, जिसके साथ शहर से पचास मील की दूरी पर अपने एक बँगले में वह अपनी रातों को रंगीन बनाता है।
- और, उसी सेठ भगतराम की, उसके उसी बँगले में, एक इतवार की रात को कोई गोली से हत्या कर देता है। अपने पिता की लाश की शिनाख्त ख़ुद उसका लड़का दयाराम करता है।
- लेकिन उन्हीं सेठ भगतराम को, तीन दिन बाद, आगरे की उसकी कोठी में, सुबह दस बजे फिर गोली मारी जाती है। वह एक बार फिर मरता है। एक ही आदमी की दो बार हत्या!
- नन्दिनी परमार! अपने बयान में उसने कहा कि सेठ भगतराम को वह नहीं जानती, उनसे कभी नहीं मिली, जब कि उसकी फोटो भगतराम के निजी-कमरे में, एक मेज़ की दराज़ में पायी जाती है।
- मोरेना के भीषण जंगल, घाटियाँ और पहाड़ियाँ। एक पहाड़ी की चोटी पर एक आदमी पुलिस की जर्जर वरदी पहने, तमगे लटकाए चुपचाप बैठा आसमान देख रहा है। वह फिर पलटता है और कहता है—"मेरा नाम नारायण दास है।"

www.akfunworld.wordpress.com

- भगतराम का प्राइवेट सेक्रेटरी अनुपम भगतराम की लड़की केशरी से प्रेम करता है और, पुलिस के शब्दों में उसने शादी उस केशरी से करनी चाही, जो अपने पिता की मृत्यु के बाद अब लाखों-करोड़ों की स्वामिनी है।
- इन्दु बाला ! भगतराम की ज़िन्दगी के अँधेरे पहलू की साझीदार, जिसके आँसू भीतर ही भीतर सूख चुके हैं।"
- अल्लाहदाद खाँ ! उसके होठों पर हमेशा ही कभी न टूटने वाली खामोशी रहती है।
- हत्यारा कौन था ? सेठ भगतराम की दो बार किसने और कैसे हत्या की ?

घटना चक्र ने हर एक की ओर अँगुली उठा दी। तुम !... तुम !...तुम !...लेकिन कौन ?

सूत्र थे एक फोटो, एक जोड़ा दस्ताने और एक पत्र।

और साथ में चलती हुई पाषाण से अधिक कठोर और फूलों से अधिक कोमल एक प्रेम कहानी। दयाराम और नन्दिनी परमार की ; प्रणय-बन्धन जिनका इन्तज़ार कर रहा था।

सबसे पहले और सबसे आखीर में मिलिए सुप्रीम कोर्ट के बैरिस्टर श्री डी० के० राय चौधरी से। आप उन्हें भली-भाति जानते हैं, उनसे भली-भाति परिचित हैं।

[अपने ढंग की बिलकुल अनोखी और रहस्यपूर्ण कहानी : नये पात्र और नयी परिस्थितियां और नये ही ढंग के अपराध]

पृष्ठ १२८ से ऊपर : बहुरंगा आवरण पृष्ठ

मूल्य केवल ७० नये पैसे

———नीता प्रकाशन, इलाहाबाद-३ द्वारा प्रकाशित

www.akfunworld.wordpress.com

GUPTACHAR FEB. '64 75 nP.
(Registered with the Press Registrar of India under No. R.N. 6913/62)

रूपसी का अगला आकर्षण

An 'akfunworld' preservation...

सूनी डाल के घोंसले

लिखित

www.akfunworld.wordpress.com